मीनाक्षी पुरी

बैठक की बिल्ली

प्रथम खण्ड

१

पार्क को घेरती पेवमेंट, पेवमेंट को छूती सड़क। शाम की सुनहरी धूप। बच्चों का खेल। खेल में गुँथी गाली। समझाने की कोशिश बेकार है। बच्चे ढीठ होते हैं।

लाला गनपतराय को इस कड़ुवे सत्य का पता बरसों पहले मिल चुका है। कड़ी नज़र पार्क में खेलते बच्चों पर फेंक वह क़दम बढ़ाते हैं।

लालाजी का ताम्रवर्ण तन्दुरस्ती का सबूत है। चाल की फुर्ती भी। मानना मुश्किल है कि इकलौती बेटी इन्दु विवाह के योग्य है और लाड़ला महेश सालभर में इंजीनियर हो जाएगा।

दुमंज़िला मकान सिविल लाइन्स में खड़ा है। आसपास के सब मकान इकमंज़िले हैं। पीली, पुती दीवार इसी एक मकान की रक्षा चारों ओर से करती है। लालाजी के होंठ तृप्त हँसी से खिल जाते हैं।

'हरामज़ादे······' आँखें दूसरी मंज़िल से उतरकर बाहरी दीवार पर गड़ी हैं।

कलाकार दक्ष नहीं था। मन का मैल बाहर करना चाहता था। इच्छा तीव्र थी। साधन था, कोयले का टुकड़ा।

लालाजी गुस्सा पी जाते हैं। उतारते तो किस पर ?

कुछ ही दूर खडे छोले-भटूरे वाले सरदारजी तमाशा देख रहे हैं। रेहड़ी खाली है। छोलों की हांडी उलट दी गई है। तवा ठंडा है। नीचे चूल्हा भी।

लाला गनपतराय ने ऐसी भीषण असहायता आज पहली बार भोगी है।

गेट खोल, ऊँघते हुए चौकीदार को मन-ही-मन गाली देते, कम्पाउंड पार कर, वह पोर्च तक पहुँचते हैं। बोगेनीवल्या की बेल स्वागत करती है।

छोले-भटूरे वाले सरदारजी का पंजाबी ढाँचे मे ढला हिन्दी फिल्मी तर्ज अब जाकर पीछा छोड़ता है।

× × ×

बैठक की सजावट कुछ-कुछ पाश्चात्य, और कुछ-कुछ मुगली ढंग की है। कीमती कालीन फ़र्श को छिपाती है। सोफा सेट भारी हैं। दीवार से लगे दीवान भी, गाव तकिया भी। हल्के नीले रंग की चादर सब-कुछ ढकती है। *प्रतिष्ठित अतिथियों के आगमन पर फर्नीचर* नंगा हो जाता था।

बीचों-बीच गोल मेज है। गुलाब के फूल महक रहे हैं। चाँदी का फूलदान पुराना और कामदार है।

आँखें बन्द कर लालाजी महक का आनन्द उठाते हैं। खोलने पर पिताजी, स्वर्गीय लाला धनपतराय, को घूरता पाते हैं। भारी साफा

बांधे बड़े लालाजी प्रभावशाली लगते हैं। फ़ोटो का फ्रेम चाँदी का है। बानगी फूलदान वाली है।

छोटे लालाजी अब स्व० गोमती देवी की ओर देखते है। चौड़ा, चश्मे वाला मुंह। आँखें भावहीन। नाक पतली, होठ भरे-भरे। गऊ लगती हैं गोमती देवी फ़ोटो मे।

लाला गनपतराय को हँसी आ जाती है। इसी गऊ को कोई पच्चीस वर्ष पूर्व गंगा ने चुड़ैल कहा था। गौने के हफ्तेभर बाद।

बहू की बात अनुचित तो थी ही, पर वास्तविकता को इनकार करना असंभव था। पच्चीस वर्ष पूर्व ही गनपतराय ने पत्नी की बात मान ली थी। माताजी और उत्तेजित हुई थी।

ससुरजी नियमानुसार फैक्टरी गये हुए थे। सासजी ने गंगा को रसोई में आले पर से अचार का मर्तबान उतारने को कहा। गंगा घबराई। आले तक हाथ पहुँच तो जाता था पर मर्तबान भारी था।

'चुड़ैल किसी काम की नही!' गोमती देवी ने पीछे से कहा।

'चुड़ैल की सास भी तो···' गंगा बाहर आँगन में निकल आई।

वाक्य को पूरा सासजी ने चिल्ला-चिल्लाकर किया। पूरा ही नही किया, वाक्य को बढ़ाया भी।

नौकर-चाकर, पड़ौसिनें मग्न थे। सास-बहू का पहला झगड़ा था।

तीनों ननदें अभी घर ही में थीं। भाभी को खूब सुनाया।

गंगा बिलकुल नहीं रोई। सासजी को बहू के चुड़ैल होने पर अब कोई संदेह नहीं था। मगर चैन फिर भी नहीं मिला। "चुड़ैल की सास भी तो…" शब्द कानों में फुसफुसाए, गूंजे और फिर गरजे।

"देख लो बहूराना के ढंग !" ससुरजी का शाम को इन शब्दों से स्वागत हुआ।

धनपतराय जी सन्त आदमी थे। बात अनसुनी कर दी।

गनपत उन दिनों दिल्ली विश्वविद्यालय की लॉ फैक्टरी का चक्कर लगाया करते थे। माडर्न थे। माँ पर झल्लाए।

सब अवाक् रह गये। बहिनें एक दिन पहले ही दर्जनभर बच्चों को समेट अपने-अपने ससुराल चली गईं।

महीने-दो महीने बाद पड़ोसिनों का मजा बन्द हुआ। गंगा गर्भवती थी। गर्भवती को कुछ नहीं कहा जा सकता। इस सिद्धान्त पर तो पड़ोसिनें जोर देती थीं। सासजी इनसान बनीं।

दसवें महीने महेश हुआ।

बड़े लालाजी ने जमुना इंक फैक्टरी गनपत को सौंपी और होम्योपैथी का अध्ययन करने लगे। स्वास्थ्य बिगड़ता ही जा रहा था।

महेश तीन वर्ष का था। इन्दु बच्चा थी। बड़े लालाजी का देहान्त हो

गया ।

गोमती देवी मे अब परिवर्तन आ गया । कोई शोर नही, कोई गुस्सा नहीं । प्रात.काल जमुनाजी में नहाना, और फिर हनुमान जी के मंदिर मे कीर्तन सुनना । बस, यही था दैनिक कार्यक्रम ।

माँजी को परलोक का डर है । पंडित रामप्रसाद वात ताड़ गये । मन्दिर की मरम्मत की बात छेड़ी । हनुमानजी माँजी को स्वर्ण-सिंहासन पर स्वयं बैठाएँगे ।

प्रलोभन ने विधवा को भड़काया । गनपत और गंगा ने मरम्मत की बात सुनी ही नही ।

पर ननदो के कान खुल गए । संयोग छोड़ा नही जा सकता था । अन्तकाल में माँ का दिल दुखाया तो भैया और भाभी, दोनों कुत्ते की मौत मरेंगे । धमकी देते, तीनों बहिनों की भाषा विशेष सूक्ष्म नहीं थी ।

मन्दिर की मरम्मत करवानी ही पड़ी । यश माँजी को मिला । पछतावा यही था : प्रस्ताव पहले ही क्यों नही स्वीकार कर लिया ? अब तो दबाव में आना पड़ रहा है । गंगा अपने पर झल्लाई ।

पंडित जी ने खूब मरम्मत करवाई । मन्दिर ही में अपने लिए दो कमरे भी बनवाए । अच्छा खाने लगे, और अच्छा पहनने । पंडिताइन इतनी प्रसन्न थी कि बाँझपन का दुख भूल गई ।

पाखंडी कही के ! गंगा बुड़बुड़ाई । अधीर थी ।

घर में गोमती देवी का व्यवहार विचित्र था। पूजा घर में भी घटों करती और पूजा के बाद बहू को टकटकी बाँधे देखती जाती थी। शब्द मुँह से कोई नही निकालती थीं। बस, देखे जाना, और कुछ नही करना।

सासजी का कड़ुवापन इससे कहीं अच्छा था। कड़वेपन का तो सामना किया जा सकता था, पर यह तो अजीब सजा थी! मिनटों घूरते रहना। महेश को क्या खिलाती है, क्या पहनाती है···इसमें घूरने की बात ही क्या है, आखिर?

गंगा डरी।

इन्दु बच्चा थी। खिलाने-टहलाने के लिए आया रख ली थी। बच्चा चलने लगा, तो कपड़े विलायती ढंग के सिलवाए। फ्रॉक, पेटीकोट और लेस की किनारी वाला जाँघिया। पेशाव, टट्टी, बाकी बच्चो की तरह जहाँ आया वहीं नही, पाट मे ही करती थी इन्दु!

'मिस्सी बाबा'···मँझले ननदोई बार-बार कहते थे। 'ससुरी की जान निकले तो निकले, पर पिसाब पाट ही में करेगी···'। गर्दन पीछे फेंककर पान चबाते बात कही थी बैरिस्टर साहिब ने। हँसी भयंकर खाँसी में बदल गई थी क्षणभर बाद। अधचबी सुपारी फँस गई थी गिल्टियों में।

सासजी का घूरना बन्द हुआ। देहान्त हो गया था। गला फाड़-फाड़ कर तीनों बेटियाँ रोईं। पंडित रामप्रसाद भी फूट-फूटकर रोये। पंडिताइन ने तो कमाल कर दिया। इन दोनों पाखंडियों का दुख गंगा

को छू गया। रो पड़ी।

बहानेबाज कहीं की···ननदों ने रोना बन्द कर दिया।

गनपतराय यादों को पीछे ढकेलते हैं।

पुरानी बातें हैं। दोहराने से क्या फायदा?

गैलरी तक दो जोड़ी आँखें, लाला धनपतराय की और श्रीमती गंगा देवी की, बेटे का साथ देती हैं।

× × ×

कांसे की मूर्तियों में कुछ-एक पुरानी हैं। कांसे के ही सुन्दर [illegible] मूर्तियों के बीच-बीच खड़े हैं। तेल और बत्तियाँ तैयार हैं। पर अभी अंधेरा हुआ नहीं है।

सामने, छोटी-सी, खूबसूरत पायों वाली चौकी पर गंगा देवी बैठी है।

पति के आने पर आँखें [illegible] चेहरे का [illegible] बरसों से पढ़ता आया है। जवानी में यह प्रेम का तकाजा था; अब तकाजा याद भी नहीं आता।

गंगा देवी का रंग [illegible] के समान है। भौंहें कमान की तरह खिंची हैं। नाक [illegible], [illegible] ही बनी। होंठ पतले हैं

भर की मोहलत देते हैं। 'इन्दु को सब-कुछ मिलेगा...'

गंगा देवी पूरा जगती हैं। धीरे-धीरे नहीं। आज बहाने के दूसरे भाग के लिए समय नही है।

'न जाने वही जाकर क्यो फँसी, इन्दु...' खटिया पर बैठते-बैठते गंगा देवी अपना आँचल सँभालती हैं।

'अब क्या खराबी निकल आई, लड़के में ?' खटिया पर बैठने की बजाय, आज लालाजी खड़े-खड़े पत्नी को देखते हैं। 'तुम तो जगदीश की बहिन को सिर पर उठाकर नाच रही थी...परसों की ही तो बात है !' आवाज ऊँची होती जा रही है।

'वह दूसरा लड़का...'

'भिखारी था ! वहां फँसना था इन्दु को ?'

'मेरी बात सचमुच नही समझ रहे हो, क्या ?' गंगा देवी सिर उठे हुए घुटनों पर टिका देती हैं। 'तुम्हारा जगदीश जब देखो खाने का सपना देखता है...'

हँसी से लालाजी बेहाल हैं। खटिया पर धम्म-से बैठ पत्नी को देखते हैं। 'तुम्हे कैसे मालूम ?' शब्द कठिनाई से बाहर निकलते हैं। हँसी बन्द होने में देर है।

'तुमको दीखता ही नही तो क्या किया जाय ?' गंगा देवी खिड़की की चौखट में निग्रहित डूबते सूरज मे खो गई हैं।

क्या हो गया आज अचानक ? लालाजी चिंतित हैं।

गंगा देवी ने अब खिड़की के परदे खींच दिए हैं। कमरे में अँधेरा छा जाता है।

× × ×

दीप जला दिए गए हैं। दीवार पर देवतागण का छाया-नृत्य आरंभ हो गया है। जब गंगा देवी आँखें खोल, मस्तक से जुड़े हाथ हटाती हैं, नृत्य समाप्त हो चुका होता है।

लालाजी नहाने चले गए हैं। बाथरूम पास ही है। बाल्टी मे गिरता पानी तूफान का आभास देता है।

साफ कुरता-पायजामा पहने अब लालाजी फिर से छोटे कमरे मे आ गए हैं।

रामपूजन दूध का गिलास पकड़ाकर देवतागण की ओर हाथ जोड़ता है।

'यह गधे का बच्चा हमेशा रसोई में बीड़ी पीता है!' अन्दाज़ भद्दा है।

'भगवान् की कसम, बहूजी···' सफाई नुकीली आवाज में पेश करता रामपूजन रसोई की तरफ भागता है।

'यह भी भाग जाएगा···' दूध का पतला घूंट लालाजी मज़ा लेकर पीते हैं।

'भागेगा कैसे ? पूरी तनख्वाह तो मैं देती ही नही···' गंगा देवी खटिया के नीचे से तिपाई खींचती है ।

गिलास तिपाई पर धर लालाज़ी कलई-घड़ी पर नज़र डालते ही है कि कम्पाउंड में भयंकर गरजन फूट पड़ती है ।

'आ गया महेश !' गंगा देवी बैठक जल्दी पार कर, बरामदे तक पहुँच जाती हैं ।

लालाजी बैठक में ही खड़े रहते हैं ।

कम्पाउंड में गरजन बन्द हो गई है ।

लैम्ब्रेटा स्टैंड पर तान दी गई है ।

पोर्च मे टैनिस रैकेट हवा मे उठाता महेश काल्पनिक गेंद को शौट मार रहा है । रैकेट सायँ···बोल जाती है ।

काल्पनिक विरोधी को घायल कर महेश पाँचों सीढ़ियाँ एक ही दम मे लाँघ जाता है ।

बरामदे मे माँ को खड़ा देख, बेटा घबराता है । माँ कही उसे पागल तो नहीं समझती हैं ? पोर्चवाला टैनिस मैच पागलपन ही तो था···

नही । घबराने की कोई बात नही है । माँ पुत्र को वात्सल्यपूर्ण ही निहार रही हैं । पागलपन का शक होता तो दूसरी तरह देखती ।

'वह लोग अभी तक नहीं आईं ?' महेश बैठक के कोने में टँगी घड़ी को देखता है ।

तीनों बैठक में आ गए हैं ।

'इन्दु बेटा पिक्चर देखने गई है···आती ही होगी । साथ में वह दोनों बच्चियाँ भी है···' बेटी का नाम लेते ही लालाजी का चेहरा खिल जाता है ।

'लीला को देखे बहुत दिन हो गए हैं । और चन्द्रा ? उसकी भी तो शादी पक्की हो गई है न ?' गंगा देवी का माथा सिकुड़ जाता है ।' 'वह लड़की मुझे भाती नहीं है···न जाने क्यों ? जब देखो डैडी की शान···मालूम होता है जताना चाहती है, हम···हम ही हैं···'

लालाजी हँसते है ।

'क्यों न जताए कि वह···वह ही है ?' महेश की मुसकराहट में तिरस्कार है । कारण पता लगाना कठिन है ।' क्यों न जताए कि वह···वह ही है ? क्या मि० अय्यंगार विदेश मंत्रालय के सर्वेसर्वा नहीं हैं ? ज्येष्ठ पुत्री को इस पर गर्व भी न हो ?'

'हमें तो लीला अच्छी लगती है । अगर हमारी इन्दु भी लीला की तरह होती, तो···'

'तो एम० ए० के बाद कालिज में लेक्चरर हो जाती और दस दिन में एक बार तुमसे झगड़ने टैक्सी लेकर आती···' अब महेश उपहास छिपाने का प्रयत्न भी नहीं करता है ।

इससे पहले कि गंगा देवी जवाब दे, पोर्च में दस साल पुरानी स्टूडीबेकर आ खड़ी होती है। कुछ फूल गाड़ी पर गिराते हुए बोगेनीवल्या की बेलें झूमती हैं।

गाड़ी का दरवाजा खुलने के पहले हँसी के फव्वारे बरामदे तक फूट पड़ते हैं।

वर्दी पहने बूढ़ा ड्राइवर पिछला दरवाजा खोल बेवकूफी की हँसी हँसता है।

फव्वारे थमते है। तीन लड़कियाँ बाहर निकलती है।

समस्त मनोबल लगाकर महेश अपनी झेंप दबाता है।

× × ×

क्षणभर के लिए तीनो लड़कियाँ एक-सी लगती है। हँसमुख चेहरे, बिचला कद, आधुनिकता की छाप।

क्षणभर बाद आपस का गहरा अन्तर दीखता है।

इन्दु का रंग माँ की तरह है। धूप से सुरक्षित, कुछ-कुछ पीलापन लिये। आँखें और भँवें गंगा देवी की हैं, नाक लालाजी की, भोंडेपन का इशारा देती हुई। होठ खूबसूरत हैं। नारंगी लिप्स्टिक खूबसूरती बढ़ाती है। बिन्दी भी नारंगी, आवश्यकता से कही बड़ी। सफेद साड़ी बंगाल एम्पोरियम की है। आमाशय के नीचे बँधी ! ब्लाउज बहुत ही छोटा है। इन्दु वैसे शर्मीली है। साथ मे लीला और चन्द्रा न होती तो पोशाक सीधी-सादी ही होती, शायद।

चन्द्रा अय्यगार की बैंगनी साड़ी काचीपुरम् [की है। ब्लाउज और सैंडल मैच करते, महँगे। हैंडबैग भी मैच करता है। चशमा चेहरे को गम्भीर बनाता है। वैसे भी चन्द्रा मुसकराती अधिक, हँसती कम है। दाँत मोतियों की तरह है।

सबसे भिन्न लीला बोस हैं। चंचल, सजीव। आँखें आकर्षक हैं। लम्बे बाल इस समय गुलाबी और गहरी धारियों वाली बुशर्ट के बाहर झूल रहे हैं। ब्लू जीन्स की जेब से रूमाल झांक रहा है। झोला कंधे पर लटक रहा है। चप्पल उसी मे ठूंस दिये है शायद। पाँव नगे हैं।

'मुझको नंगे पाँव देख आप खीझ तो नही रही हैं, आंटी ?' लीला हँसते-हँसते सीढियाँ चढती है। साँवला रंग दाँतों को चमकाता है। महेश पर आँख पड़ते ही लीला पिल पड़ती है: 'अरे, तुम ! लड़कियों के नंगे पाँव कभी देखे हैं ?'

'मिस लीला बोस को अपने निरालेपन पर सदा ही गर्व रहा है। इस तरह आदमियों के लिबास में नंगे पाँव न घूमे तो इनकी तरफ शायद किसी का भी ध्यान न जाये…'

'अच्छा, तो मैं ध्यान खैंचती हूँ लोगो का अपनी तरफ़ ! तुमने भी तो जुल्फ़ बढ़ा लिये हैं। फँसा कोई शिकार जंगल में ?'

साड़ी का पल्ला ठीक करते-करते इन्दु खिलखिलाती है।

चन्द्रा मुसकरा-भर देती है।

लालाजी और गंगा देवी बच्चों को बैठक में ले आते हैं।

'पिक्चर कैसी थी ?' गंगा देवी बात बदलती हैं।

'बहुत ही सड़ियल, आंटी ! खूब मज़ेदार···' लीला की आँखें महेश को ढूँढती हैं। दीवान पर मां के पास बैठा वह लीला की पहेली बुझा रहा है। 'मैं तुम्हारी तरह तो हूँ नहीं कि विलायती पिक्चर ही देखूँ। मैं तो बम्बई की फिल्म इन्डस्ट्री की भक्त हूँ। रुलाये तो खूब, प्याज की मदद से ही सही। और हँसाये तो खूब···गुदगुदाकर ही सही;·· सड़ियल पिक्चर तभी मज़ेदार होती है···'

इसी बीच लालाजी बगल वाले डाइनिंग रूम से मिठाइयों का डिब्बा ले आते है। परदे के हटने से विराट् फ्रिज दिखाई देता है। साइड-बोर्ड भी विराट् है। विलायती क्रॉकरी और कट्लरी सजावट के लिए हैं। डाइनिंग टेबुल बर्मा के टीक का है। *'घण्टे वालों की है···'* लालाजी डिब्बा लीला के आगे सबसे पहले करते हैं।

'कोई प्लेट-वेट नहीं है इस घर मे ?' महेश झिड़कता है।

लालाजी खीझ जाते हैं।

बगैर कुछ कहे गंगा देवी लालाजी से डिब्बा ले लेती हैं और कुछ ही देर में मिठाई प्लेट मे सजाकर बैठक मे आ जाती है।

रामपूजन भी चाय की ट्रे ले उपस्थित है।

'अब महेश अपने को शिष्ट मानता है।'. लीला गंगादेवी से प्लेट ले

सबको मिठाई देती है। महेश को छोड़कर। 'मिठाई साहिब लोग नही खाना मांगता ?' गुलाबजामुन मुँह में डाल, प्लेट गोलमेज़ पर रखते लीला छेड जारी रखती है। 'आजकल तो साहिब लोग भी मिठाई खाना मांगता है…'

महेश कुछ-कुछ सोच में खोया, गोल मेज तक चलता है। फिर मिठाई मुँह में ठूंसना शुरू करता है।

अब लीला 'हरि ओ३म्' कहकर डकार मारती है। उँगलियाँ भी चाटना शुरू करती है।

महेश मुँह मे उँगली डाल, दांत कुरेदता है।

भद्दे आचरण की यह प्रतियोगिता अपने ही ढंग की है।

महेश का हाल बुरा है।

गंगा देवी घबराकर मिठाई डाइनिंग रूम वापिस ले जाती हैं।

'अच्छा, अब बताओ पिक्चर सड़ियल क्यों थी ?'

बैठक मे प्रतियोगिता खत्म हो चुकी है। चाय सभ्यता से ही महेश और लीला पी रहे हैं।

गंगा देवी अब खुश हैं।

'सास बहू को बहुत तंग करती है, आंटी…मैं तो रो पडी थी…'

'पिक्चर में भी सास बहू को तंग करती है, क्या ?' गंगा देवी की हँसी वेदना को पूरी तरह नहीं छिपाती।

'चन्द्रा और इन्दु को तो ऐसी पिक्चर देखने ही नही चाहिए। बच्चियाँ शादी से घबरा जायेंगी···' लालाजी चाय की ताजी प्याली काफी दूध मिलाकर लेते हैं। लीला की तरफ मुसकराते भी हैं। उसकी चाय में बूँदभर ही दूध है।

'हम तो शादी के बाद ब्रस्सल्स् चले जायेंगे। सास-वास का झगडा ही नहीं होगा।' चन्द्रा आत्मविश्वास के साथ कहती है। अन्दाज रोबीला है।

'हो सकता है राघवन् के बोस की बीवी तुम्हें तंग करे···' लीला की ढिठाई मे आशा की रेखा है।

'इन्दु की ससुराल मेरठ में ही है। वह तो मेरठ ही सिर्फ जायेगी। ससुराल वालों पर पहरा हम देंगे। मजाल है तंग करें···'

'और जगदीश की अपनी फैक्ट्री है।' गंगा देवी पति का सहयोग करती हैं। 'बोस की बीवी इन्दु खुद होगी।···'

'हम लोग ब्राह्मण थोड़े ही हैं···' महेश चन्द्रा से चुहल करता है। 'हम तो बनिये हैं···फैक्ट्री चलाते हैं, हम लोग तो···बस···'

महेश की बात चन्द्रा को बुरी नही लगती। हँस देती है।

'बनिये हो, तभी तो इतना कुछ इकट्ठा किया है···' लीला दोनों हाथों से सोफासेट, दीवान, गोलमेज···सबकी तरफ इशारा करती है। 'पर एक बात है। समाजवाद अगर इसी रफ्तार से आगे बढ़ा, तो यह सब-कुछ रामपूजन भोगेगा···बाहर ड्राइवर आपकी गाड़ी की टैक्सी चलायेगा···आपको बैठाने से इनकार भी कर सकता है···'

'ब्रसलस् में जब चन्द्रा का जी 'ब्रस्सल-स्प्राउट्स' से उकता जायेगा, तब पैरिस जाकर वह मेंढक की टाँगें खायेगी···' इन्दु का जहरीलापन लीला को भी विस्मित करता है।

चन्द्रा का चेहरा तमतमाता है। कहती कुछ नहीं। बदला सोचकर लिया जाता है।

'जब मैं बच्ची थी, तब मुझे 'कज़िन' और 'क्वीज़ीन्' का अन्तर नहीं मालूम था। मेरे उन दिनों एक मामा थे···पक्के साहिब थे, महेश की तरह···और वह मुझे कलकत्ता के 'फर्पोज़' में खाना खिलाने ले गये। मैं कोई चौदह बरस की थी उन दिनों···और मैं जताना चाहती थी कि मैं भी मेम साहिब हूँ। सो, सूप खाते-खाते मैंने कहा, 'आई लव दि फ्रेंच कज़िन।' मेरे मामा साहिब ने मुँह बिचका लिया। 'यू मीन दि फ्रेंच क्वीज़न्।' तुमको अन्तर मालूम है, दोनों शब्दों का, महेश ? एक मन-बहलाव के लिए है और दूसरा, दूसरा सही तन-बहलाव के लिए···' लीला बात बदल ही देती है। चन्द्रा पर तरस आ गया है, शायद। क्या हो गया है इन्दु को आज ?

'गप्प है।' महेश टेढ़ी हँसी हँसता है। 'लीला यहीं जताना चाहती है कि उसका भाषा-अज्ञान भी निराला है···'

'भाषा-विज्ञान की अच्छी कही···हमारी लीला तो अंग्रेजी की प्रोफेसर है।' गंगा देवी का लीला के प्रति विचित्र अभिमान है।

'प्रोफेसर कहाँ, आटी···अभी तो लेक्चरबाज हूँ···

'जब लीला प्रोफेसर हो जायेगी तो चशमा पहनेगी ··चन्द्रा की तरह···' आज इन्दु चन्द्रा को दुख देने पर तुली है।

चन्द्रा स्वभाव से प्रेरित चशमे को नाक पर सरकाती है।

'शादी लीला को भी कर लेनी चाहिए···' गंगा देवी और लालाजी, एक ही स्वर मे कहते हैं। बेटी का व्यवहार उन्हे भी पसन्द नही आया है।

'कम-से-कम शादी के बाद तो इसे कपडे पहनने का ढंग आयेगा···' महेश बुशशर्ट की तरफ चिढ़कर देखता है।

'शादी तो पैसा हो, तभी होती है। मेरी माँ ठहरी स्कूल-मास्टरनी ! कहाँ से दहेज दे ? बस, बूढ़ी हो जाऊँगी, शादी की प्यास में···'

गंगा देवी दीवान से उठकर लीला के पास आती हैं। 'जो तुमसे शादी करेगा, वह दहेज के बारे मे सोचेगा भी नहीं···दहेज तो हर्जाना है··· तुम्हे इसकी जरूरत नहीं है।' आँखें अनायास डबडबा आती हैं।

महेश माँ को ध्यानपूर्वक देखता है। इन्दु के प्रति माँ ने आज तक इतना वात्सल्य नही दिखाया है।

'मैं तो इससे हरगिज नही शादी करूँगा···मेरी बहू मेरा कहा मानेगी···और कपड़े ढंग से पहनेगी···'

महेश की गम्भीर भावना पर लीला भी हँसती है। 'तुम्हारी बहू तुम्हें कहना मानना सिखायेगी, महेश ! मेरी भविष्यवाणी याद रखना··· और शादी के हफ्तेभर बाद तुमको यही पछतावा होगा कि तुमने शादी मुझसे क्यों नही कर ली ··'

'लीला राजदूत से शादी करेगी···असली राजदूत से ··स्कूटर से नहीं···' लालाजी किसी को भी हँसते न पा निराश हो जाते है। 'और फिर लीला का पति चन्द्रा के पति को हर दूसरे-तीसरे दिन संयुक्तराष्ट्र सम्मेलन में मिलेगा···'

'राजदूत फाँसना मुश्किल है, अंकल···' लीला सोच में पड़ जाती है। 'फर्ज तो आप लोगों का यह है कि मेरे लिए भी जगदीश जैसा खूबसूरत वर ढूंढें।'

'जगदीश खूबसूरत नही है !' इन्दु बात काटती है।

'मुझको तो खूबसूरत लगता है।' लीला विनोद करती है।

'वह आ गए है।' चन्द्रा लीला का वाक्य पूरा भी नहीं होने देती।

थोड़ी देर मे टायर की खरोंच औरों को भी सुनाई देती है।

बैठक मे सन्नाटा छा जाता है। कोने में घड़ी की टिक-टिक भयंकर लगती है।

राघवन् को देखने के लिए सब उत्सुक हैं। शिष्टाचार उत्सुकता को ठंडा करता है।

हिम्मत कर लीला चन्द्रा के साथ हो लेती है। इस संकेत की मानो इन्तज़ार सबको थी। सब-के-सब बरामदे की ओर बढ़ते हैं।

पोर्च के बाहर एक नई-नवेली फियेट खड़ी है। आगे का दरवाजा खोल, तीखी आकृति का एक नवयुवक, बरामदे से तरेरती आँखों से बचने का प्रयत्न करता, सीढ़ियाँ चढ़ता है।

राघवन् का भूरा सूट इंगलिस्तानी है। हाथ की घड़ी स्विस और जूते इतालवी।

महेश जल-भुन जाता है। लीला का हमदर्द अन्दाज जलन बढ़ाता है।

पतलून की जेब मे हाथ डाले वह गर्दन आगे झटकाता है।

चन्द्रा एक हाथ राघवन् की तरफ बढ़ाती है, दूसरा औरो की तरफ। 'यह हैं राघवन्···' सधी आवाज में परिचय शुरू होता है। 'यह हैं लाला गनपतराय···जिन्हे हम सब अंकल कहते हैं···यह हैं उनकी पत्नो, जिन्हें हम आंटी कहते हैं···यह इन्दु हैं, यह महेश···'

'और मैं लीला हूँ···कालिज मे पढ़ाकर पेट पालती हूँ···'

अब चन्द्रा का क्रोध आवेश में बदलने लगता है।

लालाजी भी अप्रसन्न हैं, लीला से। क्या बदतमीजी है! वह राघवन्

(

की पीठ थपकते हैं और अन्दर आने को कहते हैं ।

'बहुत अच्छा वर है, चन्द्रा···ठहरो, मैं मिठाई लाती हूँ···' गंगादेवी भी चन्द्रा की पीठ पर हाथ फेरती हैं ।

राघवन् घड़ी की तरफ इशारा करते जताते है कि उन्हें बिलकुल अवकाश नहीं है । पोर्च तक पहुँचकर चन्द्रा और राघवन् ऊपर बरामदे की ओर देखते हैं ।

गंगा देवी मिठाई लिये अब बरामदे में आ गई हैं । फिर भी गाड़ी का दरवाज़ा खोल, शाही अन्दाज़ से हाथ हिलाते हुए दोनों फर्र-से निकल जाते हैं ।

बूढा ड्राइवर झाड़न यूँ ही झाड़ता है । स्टूडीबेकर को यूँ ही पोंछना शुरू करता है ।

× × ×

बैठक में एक प्रकार की शांति है । राघवन् को देख तो लिया ही है ।

'तो यह हैं राघवन् साहिब !' लीला सोच मे डूब गई है ।

'काफी प्रदर्शन किया साहिब का···ओछी कही की !' इन्दु तड़पती है ।

'दोनों जलती हो । तुममें से एक भी नही कह सकता कि पति संयुक्त-राष्ट्र का अधिकारी है । दुनिया की सैर चन्द्रा की तरह तुम दोनों करोगी भी नही···बिल्लियाँ हो, दोनो···तीसरी बिल्ली की आँखें

नोचती हैं···बैठक की बिल्लियाँ···'

'जलन तो हो ही रही है ।' लीला फौरन स्वीकार कर लेती है।

इतनी ईमानदारी के लिए कोई भी तैयार नहीं है।

'अच्छा, अब बताओ जगदीश के मुकाबले में राघवन् कैसा है ?' लीला इन्दु को ध्यानपूर्वक देखती है ।

एक ही प्रकार के है, दोनो···जगदीश में रीढ़ की हड्डी नही है, और राघवन् में···राघवन् की ठुड्डी नही है न ?'

गंगा देवी और लालाजी हँसते हैं। दिखावा ज्यादा है।

'जिस जानवर में रीढ़ की हड्डी नहीं होती, उसे इन्वरटेब्रेट् कहते हैं।' लीला भी हँसती है। दिखावा ज्यादा है।

'और मेरठ में एक ऐसा इन्वरटेब्रेट् है, जो शादी के बाद और अमीर हो जायेगा···' इन्दु और महेश भी हँसते हैं।

दिखावे की हद है इस हँसी में।

२

कमरे की सजावट झमेलिया है। पतली कमर वाले मूढे बहुतायत से चिढाते हैं। एक बेल, कुष्ठ-ग्रसित-सी, छत की तरफ बढ रही है। छोटे-छोटे पायों को ढके खटिया दीवान बनने का प्रयत्न कर रही है।

लैंडस्केपों की क़तार किताबों की अलमारी के ऊपर बँधी है। झोंपड़ियाँ, घड़े सिर पे धरे औरतें, पेड़···हरियाली ही हरियाली ··

कोने में मेज है। मेज़ पर धुंधलाई फ़ोटो। किसी नौजवान की। तसवीर के पास गुलदस्ता, कुछ-कुछ ताज़ा।

कमरे के बीचोंबीच मिसेज़ तारा बोस एक मूढे पर बैठी हैं। पीठ तनी है। घुटनों पर एक कापी खुली है। हाथ में जकड़ी लाल पैंसिल गलतियाँ छाँट रही है। फ़र्श पर कापियों का ढेर लगा है।

काम खत्म हो चुका है। मिसेज अपना पढ़ने वाला चशमा उतारकर एक बहुत ही बडे हैंडबैग में डाल देती है। बगैर चशमे चेहरा जवान मालूम होता है।

मिनटभर आँखें तेजी से मिचकती है।

मिसेज बोस हैंडबैग से दूसरा चशमा निकालती हैं। चेहरा जवानी खो

वैठता है ।

हैंडवैग का मुंह खुला का खुला रह जाता है ।

जिस्म ऐंठ गया है, मिसेज़ बोस का । उठती हैं, तो पीडा से भाव विकृत हो जाता है । उबासी लेती, खिड़की के वाहर देखती है ।

× × ×

सीखों ने दृश्य के चार टुकड़े कर दिए है । पहले दो टुकड़े नीम की ठंडी हरियाली से भरे है, दूसरे दो आकाश से ।

निकट आ, मिसेज़ बोस बगीचे में नजर दौडाती है ।

पौधे सूख गये हैं । दूव का निशान भी नही । कोई माली काम पर नही लगा है । दो महीनों तक कोई भी माली काम पर लगेगा भी नहीं ।

गर्मी की छुट्टियाँ हैं । सेंट थामस गर्ल्स स्कूल वन्द है । आज छुट्टियों का पहला दिन है ।

किरमिज़ की कफ़न मे चार वसें स्कूल की दीवार से लगी हैं । वर्दी मे कुछ आदमी वसों की टेक ले खड़े हैं । वीड़ी का धुआँ कुछ देर मँडराता अदृश्य हो जाता है ।

मिसेज वोस को सुनाई कुछ नही देता है । परन्तु वातचीत के विषय का पूरा पता है । स्कूल की वसें । पुरानेपन का प्रस्ताव लैंगिक है ।

खिड़की पर खड़े-खड़े नथुने फुलाकर तारा वोस गला साफ करती हैं ।

बाहर वर्दी पहने आदमी चुप हो गये हैं। ध्यान स्कूल के गेट की ओर है। टैक्सी के ब्रेक की चीख़ ने खेंचा है।

लीला उतरती है। मोर-रंगी साड़ी और ब्लाउज़। सफ़ेद चप्पल, सफ़ेद झोला। आज बाल जूड़े में बँधे हैं।

वर्दी वाले आदमी सहज ही मुसकराते हुए, लीला के लिए गेट खोलते हैं।

गेट भी चीखता है। दाँत भींचती लीला बगीचे से होती स्कूल के बरामदे तक पहुँच गई है। मुसकान अब चेहरे से हट गई है। आँखों में दृढ़ संकल्प और अभिन्नता का मेल है।

कारीडोर के छः बन्द दरवाज़ों में एक ही की चटकनी से भारी ताला नहीं लटक रहा है।

× × ×

दरवाज़ा खटखटाकर लीला उसे धक्का देती है।

'आ गई, लीला !' माँ की आवाज़ शिकायत से भीगी है।

लीला पतली कमर वाले मूढ़ों को बारी-बारी देखती है। नापसन्दगी का संकेत सूक्ष्म है। खटिया के पास वाले मूढ़े पर जा बैठती है।

'तुमने अच्छी तरह सोच लिया है, लीला ?' तारा बोस को लीला की वेशभूषा नहीं भाती है। ब्लाउज़ को लम्बा होना चाहिए था। न जाने क्या कुछ दीख रहा है।

'हाँ !'

बातचीत अंग्रेज़ी मे चलती है ।

माँ-बेटी समरूप हैं । वही तराशी हुई आँखें, वही फड़कते होंठ ।

अन्तर है उमर का, भावनाओं का, मनोवृत्तियों का ।

अपना पाँव साड़ी के नीचे से लीला ने बाहर निकाल लिया है। उँगलियाँ आज भा रही हैं उसे । नचाने का प्रयत्न कुछ देर तक करती है ।

'क्या मतलब, हाँ ?' शिकायत के स्थान पर अब माँ की आवाज़ में चिड़चिड़ाहट है ।

'नही करनी है शादी···नवीन गुलाटी से बिलकुल नही···' लीला झोले से लिप्स्टिक निकालती है । होंठ फिल्म स्टार की तरह खोलती है, जो थोड़ी ही देर मे चूमी जाएगी ।

'किसी और से शादी करोगी क्या ?'

'नहीं !' लिप्स्टिक झोले मे डालते लीला गरजती है । नथुने फड़कते हैं । आँखें छोटी हो गई हैं ।

'कुमार से क्यो नही की शादी ?' माँ बेटी के गुस्से से प्रभावित नही दीखती ।

क्योंकि कुमार बरसों से एक ऐसी लड़की की खोज में था, जिसके पास खूब पैसा हो···कि छिपा रखा है ढेर सारा पैसा कहीं ?'

'अगर कोशिश करती···'

'क्या मतलब ? काम-सूत्र का अध्ययन करती और उसे क्रियात्मक रूप देती ?'

'काम-सूत्र ?'

'नहीं मालूम, तुम्हें ? खजुराहो और कोणार्क की दीवारों में जो गन्दी-गन्दी बातें लोग करते हैं न···काम-सूत्र के अध्ययन से मैं···और तुम भी···सब-कुछ कर सकती हो।' लीला को खुशी इसी बात की है कि माँ का मुँह लाल हो गया है। 'भूगोल पढ़ाना बन्द करो माँ, और *लड़कियों को काम-सूत्र पढ़ाओ···शादी होने पर पढ़ाई काम तो* आये। सब थोड़े ही मेरी तरह कँवारी ही बैठी रहेंगी ?'

'*गुलाटी इतना अच्छा लड़का है*···'

'लड़का ?' लीला की हँसी लम्बी, तिरस्कारपूर्ण है। 'बुड्ढे की तो लड़की मेरे बराबर है !···'

'प्रिया तुमसे ठीक ढाई बरस छोटी है···कोई नहीं मान सकता कि लड़का पाँच साल का होने वाला है। बच्चा इतना खूबसूरत है, कि···'

'कहाँ प्रिया और कहाँ मैं ! न ब्याह, न बच्चा···और बुढ़ापा···

तत्···तत्···तत्···' अभिनय अच्छा है।

'अगर कोशिश करो तो कम-उम्र दीख सकती हो··'

'बुड्ढे को फँसाने के लिए !'

'तुम प्रिया से चिढ़ती हो···चन्द्रा से भी, इन्दु से भी ! जलती हो सबसे···' अब धावा बदलता है माँ का।

'प्रिया का बुड्ढा बाप ज़िन्दा है। इसीलिए ?' लीला चन्द्रा और इन्दु को घसीटना नहीं चाहती।

'तुम्हारे डैडी को गुलाटी ज़रूर पसन्द आता···'

'बको मत, माँ !' लीला विरूप हो गई है। आवाज़ भी फटने को है। 'डैडी को मरे पच्चीस बरस हो गए हैं। मेरे लिए वर ढूंढ़ने परलोक से उतरेंगे क्या ?' आँखें कोने में मेज़ पर धरे धीरेन बोस की फोटो पर टिकती हैं। धीरेन बोस·· मलेरिया का शिकार·· डैडी बुलाती थी वह, कि बाबा ?

चिरलाहट माँ का आत्म-विश्वास नष्ट कर देती है। अब भी मुँह खोले पड़े हैंडबैग से रूमाल निकालकर, वह नाक पोंछती है। 'तुम्हारे लिए मैंने सब-कुछ···'

'क्या कुछ कर दिया तुमने ? पढ़ाई के लिए वज़ीफ़ा और पहनने के लिए यूनिफ़ॉर्म, जो मुझे हमेशा भद्दा लगता था···और हमेशा पैसों का रोना···यही कुछ तो बीस-बाईस बरस तक मुझे दिया है

तुमने…'

'भोग सकती थी सुख, अगर मैं चाहती तो…' तारा बोस आँखें पोंछती हैं।

'किसके साथ ? बाहर जो ड्राइवर खड़े हैं उनके साथ, कि स्कूल के हैडक्लर्क के साथ ? या उस कलकत्ते वाले ब्रह्म-समाजी के साथ जिसके पास पैसे के इलावा आठ बच्चे भी थे ?'

'मुँह बन्द करो !' माँ का रोना एकदम बन्द हो जाता है।

लीला उदासीन है। चिल्लाना उसे भी नहीं भाता।

'मर जाऊँ, तो अच्छा…' चशमा हाथ में है। तारा बोस आँखें पोंछती जा रही हैं।

'भगवान के लिए अभिनय बन्द करो !' लीला की उदासीनता खीझ में बदल गई है।

'गाली मत दो ! फिल्म-स्टार रंडी होती है !' शब्द मुँह से फूट पड़ते हैं।

'हिम्मत होती तो हम सब रंडियाँ होतीं…' बात किसी ने सदियों पहले कही है। चैतन्य के विभिन्न पर्दों के पीछे से निर्माता आँख-मिचौली खेलता है। लीला अपने ऊपर झल्लाती है।

कुछ विवश-सी तारा बोस खिड़की के पास खड़ी हैं।

गेट के खुलने की आवाज कमरे मे तैरती है।

मूढ़े पर से लीला उठ खड़ी होती है। आँखें हल्की-नीली ऐम्बैसडर पर जा टिकती है, जो बसो के साथ आ खड़ी हुई है।

'फिर मुझको उससे मिलने बुलाया, तुमने ? बीमारी के बहाने ?' लीला की आवाज कांपती है।

माँ की दशा दयनीय है।

'अच्छा, तो तुम सँभालो अपने को, आज निबटती हूँ इस झमेले से···' शब्दो में धमकी है।

× × ×

दस्तक़ का इन्तजार किए बगैर लीला दरवाजा खोल देती है।

गर्म हवा धक्के मारती अन्दर आती है।

दहलीज मे नवीन गुलाटी खड़े हैं।

हाथ में सिगरेट है। राख कमीज पर छितर गई है। सूट कुछ बड़ा हो गया है। टाई को पिन ने दबाया हुआ है। रूप अखरता है। छोटापन सरकस के क्लाउन वाला है।

'मम्मी हैं ?' आवाज बहुत ही खूबसूरत है। अखरते रूप को छिपाने की शक्ति है।

लीला जवाब नहीं देती । सिर्फ़ गुलाटी के दाँतों पर लगे निकोटीन के धब्बों को देखती है । अन्दर बढ़ने की अनुमति दरवाज़े से हटकर देती है ।

'अरे ! मम्मी तो है !' गुलाटी ने लीला की चुप्पी पर ध्यान नहीं दिया है । 'और चाय भी तैयार है !'

माँ और बेटी ने कमरे में तूफ़ान खड़ा किया है । दीवारें चीख रही हैं ।

'आजकल तो भगवान की दया से चीनी की कोई कमी नहीं···पर, लीला ! युद्ध के जमाने में तो···भारत-पाक युद्ध तो खेल है उस युद्ध के मुकाबले में···उन दिनों चीनी बड़ी मुश्किल से मिलती थी···' गुलाटी साहिब शांति और घरेलू सुख का पूरा स्वाद ले रहे हैं ।

मूढ़ा खिड़की के नीचे है । पीठ को दीवार सहारा देती है । सिर के ऊपर खेल समाप्त कर सिगरेट का धुआँ खिड़की के सीखों के बीच से होता हुआ भाग निकलता है ।

'हो सकता है हमें एक लड़ाई और लड़नी पड़े···'

'छोटी कि बड़ी ?' तारा बोस अतिथि के हाथ से चाय की प्याली ले लेती हैं । ताज़ी प्याली बनाने में व्यस्त हो जाती है ।

'···कि दर्म्यानी ?'

गुलाटी की समझ में नहीं आता कि अपने छोटे-से प्रश्न पर लीला

इतना हँस क्यों रही है।

'क्या हम लोग पाकिस्तान और चीन पर एक ही बार बम नही गिरा सकते ?' तारा बोस बेटी का इशारे से प्रतिनन्दन करती हैं। असर होता ही नही।

इस प्रश्न पर लीला और हँसती है। फिर एकाएक हँसी रोककर झोला उठा लेती है। 'अब मुझको जाना है। नमस्ते···'

'कालिज छोड आता हूँ मैं···' चाय की प्याली ट्रे मे धरकर गुलाटी लपकते है।

'बिलकुल नही ··' लीला की बात काटना असम्भव है।

दरवाज़ा बन्द करते लीला माँ और गुलाटी को देखती है। पश्चाताप उमड़ आता है। चीटियो को जूते से मसलने का आभास होता है। भाव को दबाती हुई वह तेज़ी से गैलरी पार करती है।

सूरज डूब गया है। कौवो के शोर से नीम जागृत है। कफन पहने बसो के आसपास कोई नही है।

आकाश स्लेटी है, विज्ञापन से रँगा।

३

चन्द्रा अभी तक लौटी नही है शॉपिंग से। राघवन् भी साथ है। खरीदनी तो सिर्फ साड़ियाँ ही हैं भारत में।

विवाहोत्सव मे हफ्ता-भर बाकी है। वर के सब सम्बन्धी दिल्ली आ गए हैं। सम्प्रदाय के विपरीत बाराती वधू के घर में ही ठहरे है। विवाह होगा वैदिक रीति से, परन्तु कुछ रीतियाँ तोड़ दी जाएँगी। चन्द्रा नौ गज़ की साड़ी नही बाँधेगी। नागस्वरम् के स्थान पर वायु-सेना का बैंड बजेगा। पं० रविशंकर को लिख दिया था डैडी ने, पर जवाब नहीं आया है। श्री यहूदी मेहनुविन ने भी पत्र का जवाब नहीं दिया है।

पंडितों को पाँच सौ से पैसा-भर भी अधिक नही मिलेगा। रसोइया ज्यादा लेगा। अकेले काम करने से उसने वैसे भी इनकार कर दिया है। दस सहायक नियुक्त हो गए है। पूरी जानकारी के पश्चात् ही। दस-के-दस ब्राह्मण हैं, वैष्णव है और दक्षिणी है।

रसोईघर के पीछे तम्बू लग गए हैं। मिठाई की सुगन्ध पिसते हुए मसाले की तीक्ष्ण गंध से भिड़ती हुई बैठक तक पहुँच जाती है। खाँसी के दौरे परेशान किए जा रहे हैं, दस-पन्द्रह दिन से।

वर के सगे-सम्बन्धी इन दौरों से बचे हैं। उत्तर भारत आने का यह पहला अवसर है। आगरा, जयपुर, मथुरा, वृन्दावन···अय्यंगार साहिब

ने वसों का इन्तजाम कर दिया है ।

× × ×

बैठक रंगमंच का जुटाव प्रतीत होता है । सोफासेट की पीठ साँची के मुख्य द्वार की तरह हैं । पुष्पाकार पीतल की गाँठों ने शोभा, कीमत दोनों बढ़ाई है । फ़र्श पर बिछी असली ईरानी कालीन के नीले आम सोफ़े पर मढी नीली मखमल को मैच करते हैं ।

सोफा और बाईं साइड-चेयर के बीच काँसे का हाथी नकली नगीने जड़ाये जगमगा रहा है ।

किताबों की अलमारियों की बहुतायत है । इनके ऊपर अपने ढंग की नुमाइश है । चीनी मिट्टी की अंग्रेज़ी चरवाहिन हाथ में डंडा नज़ाकत से थामे चीनी भेड़ों से आँखें परे किए खड़ी है । अंग्रेज़ी लहँगा खूब घेरेदार है । पास ही किमोनो पहने जापानी महिलाएँ कतार में खड़ी हैं । कुछ ही दूरी पर आइफल टावर रोब जमाता है । आइफल टावर को कोलोन का कैथीड्रल धमकाता है ।

महँगे कैबिनेट में नाना प्रकार की शराब की शीशियाँ कैद हैं । कैबिनेट के ऊपर अनगिनत फ़ोटो फ्रेम चढ़ाये और फ्रेम उतारे खड़ी हैं ।

अचकन और चूड़ीदार पायजामा पहने एक प्रभावशाली व्यक्ति भारत के प्रथम राष्ट्रपति को हार पहना रहा है । अचकन और चूड़ीदार पायजामा पहने वही प्रभावशाली व्यक्ति भारत के दूसरे राष्ट्रपति को मुसकराते हुए हार पहना रहा है । अचकन और चूडीदार पायजामा पहने वही प्रभावशाली व्यक्ति भारत की विश्वविख्यात नर्तकी से हार

पहनवा रहा है। अचकन और चूड़ीदार पायजामा पहने प्रभावशाली व्यक्ति एक छोटी बच्ची का सिर अपनी हथेली से थपथपा रहा है। अचकन और चूडीदार पायजामे वाला व्यक्ति पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ हँस रहा है। जवाहर-जैकेट और पतलून में अचकन-पायजामे वाला व्यक्ति श्रीमती इंदिरा गांधी के मजाक पर ठहाका मार रहा है। जवाहर-जैकेट वाला व्यक्ति अब चशमा चढाए स्व० हैमरशेल्ड की बात भक्ति-भाव से सुन रहा है। चेहरे से भक्ति-भाव ऊ थाँथ की बात सुनते-सुनते हट गई है। स्व० गामल अब्दल नासर को तो भारत के विदेश मन्त्रालय के प्रथम सैक्रेटरी श्रीमान् ए० एस० आर० अय्यंगार नाचीज ही समझते है, शायद।

श्रीमती वेदवल्ली अय्यंगार आजकल इन चित्रो से विशेष प्रभावित नही होती है। दैनिक न सही, अब तो यह अय्यंगार साहिब की साप्ताहिक परिपाटी हो चुकी है। देश-विदेश के अति प्रतिष्ठित अथवा केवल प्रतिष्ठित सज्जनों को हवाई अड्डे पर मुसकुराते मिलना और फ़ोटो खेंचवाकर भारत का गौरव सप्ताहान्त होते-होते और बढ़ाना···

× × ×

पन्द्रह बरस पहले बात और थी। उन दिनों अय्यंगार साहिब विदेश मंत्रालय के केवल थर्ड सेक्रेटरी थे।

'अपनी लियाक़त से ही तो···' वेदवल्ली अय्यंगार अपने को सँभालती हैं। अपनी लियाकत वाली बात फिर मन में सिर उठाती है। श्रीमती अय्यंगार विचार को फिर दबाती हैं।

शान्त-मन बैठक की खिड़की के पास खड़े-खड़े श्रीमती अय्यंगार

आनन्द मे डूब जाती हैं। दृश्य है भी मनोहारी। लॉन आँखों को ठंडक पहुँचाती है। फूलो की अनगिनत क्यारियाँ महकती हैं···खूबसूरत झाड़ियाँ ठीक कतरी हुई हैं···

सबसे अधिक खूबसूरत है नई मर्सेडिस, अभी-अभी जर्मनी से आई। गाड़ी है तो मंत्रालय की, पर कभी-कभार निजी काम के लिए भी बुलवाई जा सकती है। निजी काम से आज श्रीमती अय्यंगार दरीबे का और कनाट प्लेस के कई चक्कर काट चुकी हैं। मर्सेडिस मर्सेडिस ही है, आखिर! छा गया था रोब कनॉट-प्लेस में। अय्यंगार साहिब आज मत्रालय ऐम्बैसडर में गए हैं। कान फाड़ती हुई···

× × ×

सैल्यूट मारता दरबान गेट खोलता है।

नई-नवेली फियेट नई-नवेली मर्सेडिस के पीछे खड़ी हो गई है।

गाड़ी चन्द्रा ने चलाई है। राघवन् के हाथ चालक के कन्धों को घेरते है।

दोनों गाड़ी से उतरते है। अब मंत्रालय का ड्राइवर भी दोनों को सलाम करता है। राघवन् और चन्द्रा अभिवादन को अंगीकार करते हैं।

प्रतिष्ठापूर्वक वातावरण भंग हो जाता है। अय्यंगार साहिब का कुत्ता, जो एक बड़ा पाँच एल्सेशियन भी है, भौंकते-भौंकते स्वागत् करता है।

चन्द्रा व्हिस्की को थप्पड़ मारकर साड़ी ठीक करना शुरू करती है । राघवन् सहम जाते हैं । डर छिपाने की कोशिश जारी रखते वह सीढियाँ चन्द्रा के साथ-साथ चढते हैं ।

'व्हिस्की से डरना नहीं चाहिए ।' श्रीमती अय्यगार बरामदे पर खड़े-खड़े भावी दामाद को प्यार से तमिल में समझाती है ।

'डरता नहीं हूँ मैं ।' रावधन् अंग्रेज़ी मे झल्लाते है ।

तीनों बैठक में आ गए हैं । पास ही के कमरे में हँसी दबाने का प्रयत्न कुछ देर से हो रहा है ।

'आ जाओ न सब !' राघवन् आवाज़ देते है ।

व्हिस्की गेट पर खड़े दरबान की तरफ भाग गया है । चन्द्रा ने माँ से साड़ियों का रोना शुरू कर दिया है । कोई भी नही मिली आज काम की ।

कुछ-कुछ हिचकिचाती तीन लड़कियाँ अब अन्दर आ गई हैं ।

राघवन् का चेहरा खिल गया है ।

इन्दिरा अय्यगार साहिब की दूसरी लडकी है । चन्द्रा ही की तरह चश्मा पहने । पर फ्रेम खूब मोटा और काला है । चन्द्रा का फ्रेम तो माफी माँगता है । इन्दिरा की साड़ी हथकरघा है, काले फूलों वाली··· माँ और बड़ी बहिन के कांचीपुरम् रेशम को चिढाती हुई ।

जुडवाँ बहिनें पद्मा और कमला मुश्किल से पन्द्रह की होंगी । अंग्रेजी लिबास है । हाथ मे ट्रांजिस्टर और कौमिक्स का ढेर ।

अय्यंगार साहिब की एक लडकी भी माँ पर नही गई है ।

पहली झलक मे श्रीमती वेदवल्ली अय्यंगार हीरों और रेशम में लदी पुतली लगती हैं । अद्भुत सौंदर्य का पता धीरे-धीरे ही मिलता है । आँखें यदि चेतना-शून्य होती, तो देवी लगती श्रीमती अय्यंगार ! रंग चांदनी की तरह निर्दोष है और बाल काले और घने ।

'सुना आप न्यूयॉर्क नहीं जा रहे हैं···' इन्दिरा राघवन् को गौर से देख रही है ।

चन्द्रा बहिन की तरफ घूरती है । जताना चाहती है शायद कि वह शिष्टता का नियम निभाए रखे ।

'चांद ने कुछ नही बताया तुम्हे ?'

नया नामकरण बैठक में सनसनी फैलाता है ।

राघवन् पतलून की जेब से सिगरेट का डिब्बा निकालने की कोशिश मे जुट गए हैं । टांग लम्बी नही तानी है । देर हो जाती है डिब्बे को निकालने में ।

कौतूहलपूर्वक इन्दिरा बहिन को और भावी जीजाजी को देखती है ।

अब 'मे आई' कहते राघवन् सिगरेट सुलगाने में लग जाते हैं । पाँचवाँ

प्रयत्न सफल होता है।

पद्मा और कमला इतनी-सी बात पर खूब हँसती है। श्रीमती अय्यंगार को यह हँसी फिजूल की लग रही है। चन्द्रा को भी।

इन्दिरा भाव-शून्य है।

'क्यो, चाँद ? बात क्यों नही बतलाई इन लोगों को तुमने ?'

'बतलाया क्यों नही···चाँद···ने ?' बहिन का नया नाम लेकर इन्दिरा रुक जाती है।

चाँद का कोई अश्लील अर्थ भी है क्या ? श्रीमती अय्यंगार हैरान हैं।

'क्यो ? संयुक्तराष्ट्र का एक अधिकारी न्यूयौक के स्थान पर ब्रसल्स् जाय तो इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है ?' राघवन् तुनकते है। न्यूयॉर्क को न्यूयौइक कहते हैं।

इन्दिरा को चुप कैसे किया जाय ? श्रीमती अय्यंगार उलझन मे हैं। चन्द्रा को माँ पर गुस्सा आता है। करती क्यूँ नहीं हैं कुछ ?

पद्मा और कमला ट्रांज़िस्टर मे छलकते पौप संगीत में मग्न हैं।

'आश्चर्य तो होना ही था। भिक्षा-पात्र ले भारतवासी ब्रस्सल्स् आज तक नही गया है, आखिर···' इन्दिरा की हँसी अवहेलना से भरी है।

'देवी जी शायद नहीं जानतीं कि मैं भारत सरकार का नहीं, संयुक्त-राष्ट्र का अधिकारी हूँ।'

राघवन् अकेले ही इन्दिरा से निपट लेगा। चन्द्रा और श्रीमती अय्यंगार अब शांत हैं।

'अब समझ में आई बात !' भँवें चशमे के फ्रेम के ऊपर चढ जाती हैं इन्दिरा की। '*संयुक्तराष्ट्र अधिकारी भिक्षा-पात्र लिये कहीं भी जा* सकता है। कभी न्यूयोर्क···ठीक है उच्चारण न्यूयॉर्क का ?···कभी लन्दन, कभी पैरिस···'

'चुप रहो तुम !' चन्द्रा बात काटती है।

'मैं तो सूचना की इच्छुक हूँ, सिर्फ !'

राघवन् उकता गए हैं। धीरे-धीरे पद्मा और कमला की ओर बढ़ते है। ट्राज़िस्टर की ओर झपटते ही हैं कि लडकियाँ उन्हें रोकती हैं। गुत्थमगुत्था मैत्रीपूर्ण ही है। चोंचलेबाजी की केवल रेखाभर है।

इन्दिरा की घृणापूर्ण टकटकी की ओर राघवन् का ध्यान बिलकुल नहीं जाता।

चन्द्रा और श्रीमती अय्यंगार मुसकुराते हैं।

पद्मा और कमला अब बगीचे की तरफ भागती हैं। राघवन् पीछा करते हैं।

श्रीमती अय्यंगार भी अपने कमरे की तरफ चली जाती हैं। दोनों वडी लड़कियाँ तो खा जाएँगी एक-दूसरे को। जब देखो झगड़ा !

× × ×

व्हिस्की की भौंक···राघवन् का डर···पद्‌मा और कमला की हँसी··· बिखरे कौमिक्स को फ़र्श पर उठाता नौकर···

कुछ क्षण दोनों वहिनें नेपथ्य से नाटक देखती है।

'राघवन् से गुस्ताखी करने का तुम्हें कोई हक नही है !' चन्द्रा फुंकारती है।

'तुम्हारे लिए फाँसा गया है इसीलिए ?' इन्दिरा साडी के घेर गिनना शुरू करती है।

वहिनों का अंग्रेज़ी उच्चारण शुद्ध है।

'देखते हैं तुम क्या फांसती हो !' चन्द्रा भडकती है।

'जिसको मैं फाँसूँगी वह टुच्चा नही होगा···वात करने का ढंग होगा, कला से रुचि होगी···'

'हाँ·· खन्ना की तरह···पढ़ ली थी मैंने उसकी चिट्ठियाँ···'

'बुखार भी तो चढ गया था शायद उसके वाद ? गई थी भागी-भागी डैडी से शिकायत करने ! जैसे मैंने वात छिपकर की हो···'

'तुम तो सब-कुछ खुलेआम ही करती आई हो···अब तो शायद छुट्टी ले ली है खन्ना ने ?'

'छुट्टी दी मैंने ही थी बहिनजी ! अब तो कुछ देर पढने का इरादा है, मन लगाकर । वजीफा लेना है, अमरीका जाने के लिए···'

'समाजवाद से जी ऊब गया है ?' चन्द्रा अजीब मुसकुराती है ।

'पूरी तरह नही, बहिनजी ! बात यह है कि अगर मैं पक्की समाजवादी होती तो राघवन् जैसा सुसरा मारे डर के···'

'राघवन् सुसरा नही है ।'

'तो क्या है ? जान तो सुसरे की व्हिस्की की भौंक सुनकर निकल जाती है ! हिम्मत दिखाता है सुसरा तो उन दोनों बच्चियो को चुटकियाँ काटते समय···हरामजादा तृष्णा सालियों को छेड़-छेडकर बढाता है, ताकि जब वेदोच्चारण बन्द होगा और शादी की पहली रात ···बत हरामजादा कामयाब हो···'

'शट अप यू बिच !'

'ओल राइट, बिग सिस्टर···'

बातचीत बन्द हो जाती है ।

पद्मा और कमला बैठक में घुड़दौड़ लगा रहे हैं । ट्रांजिस्टर हाथ मे है । राघवन् पीछे ।

अब श्रीमती अय्यंगार भी आ गई हैं। अपने कमरे से निकलकर। प्रसन्न हैं। दामाद साहिब विनोद-प्रिय हैं। 'आज राघवन् बताएँगे कि क्या खाएँगे रात को···' अब जाकर ध्यान बड़ी लड़कियों की ओर जाता है। इनकी लड़ाई अभी तक खत्म नहीं हुई है क्या? हे भगवान्!

'क्यों? किफायत हमीं लोगों के खाने पर होनी चाहिए?' इन्दिरा माँ की घबराहट से खुश हो जाती है।

गैलरी में टेलीफ़ोन बजता है।

पद्मा और कमला भागते हैं। अब राघवन् पीछा नहीं करते। थक गए हैं कुछ।

गैलरी में पद्मा का 'हाँ डैडी, अच्छा डैडी, नहीं डैडी, नहीं डैडी, ज़रूर डैडी' साफ़ सुनाई देता है।

'डैडी ने कहा है कि आज वह विदेश मंत्री के घर कुछ डिस्कस करने जा रहे हैं। खाना देर से खाएँगे आज भी।' पद्मा को डैडी पर गर्व है।

श्रीमती अय्यंगार राघवन् को देखती हैं। प्रभावित ही दीखते हैं। ससुर साहिब की पहुँच दूर है भी तो। अरे! यह छोकरी मुसकुरा क्यों रही है? इन्दिरा का तो ढंग ही निराला है!

× × ×

अय्यंगार परिवार की भोजन-प्रणाली अपने ही तरह की है। मसाले-

दार दक्षिणी भोज वर्दी पहने बटलर डाइनिंग टेबुल पर योरोपीय पद्धति में परोसता है। चम्मच, छुरी और काँटे प्लेटों के इर्द-गिर्द सजाये जाते हैं। प्रयोग उँगलियों का ही होता है।

इस समय श्रीमती अय्यंगार निरीक्षण कर रही है। खाना नियमानुसार पति के साथ करती हैं।

'ब्रस्सल्स् में चन्द्रा का स्टाइल और होगा। वहाँ तो योरोपियन खाना ही योरोपियन ढंग से खाने को मिलेगा…'

इन्दिरा की बात पर चन्द्रा भी हँस पड़ती है।

'इस तरह फिजूल की बात जल्द ही बन्द करनी होगी, इन्दिरा !' श्रीमती अय्यंगार झिड़कती हैं। 'आखिर तुम भी ससुराल जाओगी अगले साल तक। वह इंडियन आइल वाला…'

'नहीं शादी करनी है उस तेल के कनस्तर से मैंने ! कितनी बार कहना होगा ?' इन्दिरा आवाज ऊँची करती है।

हँसी के मारे राघवन् बेहाल हो गए हैं। तेल…का…कनस्तर ! वह बार-बार कहते हैं और कुर्सी पर छटपटाते हैं।

'इस खानदान में किसी ने भी…' शब्द बार-बार गले में अटक जाते हैं। 'हमारे यहाँ शादी के पहले कोई भी नहीं…प्यार करता…छिः !' श्रीमती अय्यंगार बात कह ही डालती हैं।

'तुम्हारे खानदान में भी यह होकर ही रहेगा…' इन्दिरा हाथ धोने

उठती है ।

बटलर अकारण ही व्याकुल है ।

श्रीमती अय्यंगार को मालूम है क्यों। मुड़कर डाइनिंग रूम के दरवाजे की ओर प्रेमपूर्वक, गर्वपूर्वक और अधिकारपूर्वक देखती है ।

श्रीमान् ए० एस० आर० अय्यंगार मंत्री महोदय के घर से वापिस आ गए हैं ।

सौभाग्य, सफलता और बदहजमी का परिचय देती हुई सबसे पहले तोंद ध्यान खींचती है । बायाँ हाथ जवाहर-जैकेट के ऊपर हृदय के पास थमा है । उत्तेजित आँख-सा मूँगा बीच की उँगली को सुसज्जित करता है । दायाँ हाथ अभय मुद्रा में है । चेहरा अब ध्यान में आता है । गोलगप्पा···नहीं, चन्दा मामा, चशमा पहने हुए चन्दा मामा ।

बटलर अय्यंगार साहिब के लिए पकाया हुआ विशेष भोजन ले आता है । मधुमेह जीवन का आधा आनन्द मार ही देती है···साहिब के पुराने मजाक पर बटलर दाँत दिखाता है ।

श्रीमती अय्यंगार ने भी खाना शुरू कर दिया है ।

'समाजवाद का क्या हाल है बेटा ?' डैडी इन्दिरा की ओर मुसकराते हैं । चावल में मसाला-रहित साम्भर मिल चुका है । मुँह में कॉफी भरकर, अय्यंगार साहिब व्हिस्की की शीशी को बजाते हैं ।

लपककर बटलर लस्सी उडेल देता है।

'बिटिया का नाम बदलना होगा हमे'''छात्र नेता इन्दिरा अय्यंगार के बारे मे जब हम बात करते है तो कोई समझेगा हम देश की नेता इन्दिरा गाधी की बात कर रहे है।' अय्यगार साहिब की अनूठी हँसी अब शुरू होती है। चौड़े कन्धे हिल रहे हैं। रफ़्तार बढाते हुए। मुँह लाल होता जा रहा है। ध्वनि किसी भी प्रकार की नही निकल रही है।

'आजकल तो सब भारतीय नेता समाजवाद की कसम खा रहे है शायद''' राघवन् खा चुके हैं। दाँत कुरेद रहे हैं।

पद्मा और कमला और चावल चिल्लाकर माँगते है। बस भी चिल्लाकर ही एक साथ करते हैं।

'समाजवाद की कसम खाने में और सैद्धातिक रूप से समाजवाद को मानने मे भारी अंतर है'''

'देखो, इन्दिरा! लेक्चरबाजी बन्द करो। मुझको उल्टी आ रही है।'

चन्द्रा की बात पर इन्दिरा भी हँस देती है।

राघवन् हो-हो करते हैं।

'छि:-छि:! कैसी बात करती हो खाते-खाते'''

श्रीमती अय्यंगार अब छोटी लड़कियो को हाथ धोकर फ्रिज मे से फल

लेने को कहती हैं।

फ्रिज धड़ाम से बन्द होता है। पद्मा और कमला बाहर की तरफ भागते हैं।

गला साफ करता हुआ राघवन् भी बाहर निकलता है।

अय्यंगार साहिब ने हरी गोलियाँ मुँह में डाल ली हैं। कड़वी हैं, शायद।

बैठक में पद्मा और कमला बहुत ज़ोर से चीखती हैं। राघवन् ने चुटकी ज़ोर से ली है।

इन्दिरा बहिन की तरफ देखकर मुसकुराती है।

चन्द्रा आँख मिलाने से इनकार करती है।

बटलर ने टेबुल साफ कर दिया है।

श्रीमती अय्यंगार असली मद्रासी बीड़े की जुगाली कर रही है।

पद्मा और कमला से राघवन् ने ट्रांज़िस्टर छीन ही लिया है। मद्रास केन्द्र मिल गया है, शायद। खरहरप्रिया…संत त्यागराज की अमर रचना। अय्यंगार साहिब मंत्र-मुग्ध हैं।

मंत्र टूटता है। राघवन् सीटी बजा रहे हैं। बेसुरा, बेताला…

अय्यगार साहिब का माथा सिकुड़ता है।

श्रीमती अय्यंगार को संगीत से विशेष रुचि नहीं है।

पिछले बरामदे में पद्मा और कमला व्हिस्की को नया खेल सिखा रहे हैं।

४

मील-भर लम्बी लॉन। आँवले और नीम की कतार। वृक्षों से छिपन-छिपाई खेलती हुई पुराने ढंग की इमारत।

लॉन में लड़कियाँ ही लड़कियाँ। राजधानी विमेन्स कालिज की लडकियों ने आज स्ट्राइक कर दी है। माँग-इम्तहान स्थगित कर दी जाएँ।

लॉन के बीचों-बीच मंडप है। लाला बंसीलाल की भेंट। स्व० सुमित्रा देवी की याद में। माँजी थीं लालाजी की। लालाजी कागज का थोक व्यापार करते हैं। अब भी।

मंडप में इन्दिरा अय्यंगार का जोशीला भाषण हो रहा है। आवाज फटने वाली है। 'ज़िदाबाद' और 'मुर्दाबाद' के नारे भाषण के विराम-चिह्न हैं।

× × ×

कालिज के पुस्तकालय के सामने कुछ बेचैन-सी लड़कियाँ खड़ी हैं। ताजा अखबार सबके हाथ में हैं।

'कहा था न, मिस बोस ने, आने को ?' बैल-बाट्म्स ज़हरीले नीले हैं।

'आधे घंटे में जलूस निकलेगा···' चश्मा आकृति को और कठोर बनाता है। बाल खेंचकर सिर के पीछे बांध दिए गए हैं।

'कहीं मिस बोस यह तो नहीं सोच रही कि स्ट्राइक की वजह से हम यहाँ होंगी ही नहीं ?' कर्णपालियां सूजी हुई हैं।

'सारा दिन जाया गया है। अमरीकन लाइब्रेरी जाना था···निक्सन का पुतला जल रहा था···घुसने नहीं दिया किसी ने···ब्रिटिश काउंसिल लाइब्रेरी में कोई पुतला नहीं जल रहा था···मगर बस नहीं मिली···' बाल खुले है। रंग गोरा। दाँत होंठो से बाहर झाँकते हैं।

'स्ट्राइक आज ही की है, न ?' नाक जरूरत से दुगुनी है। बाल घोड़े की दुम की तरह रिबन से बँधे हैं।

'आ गई मिस बोस !' कुछेक प्रसन्नता की चीखें उठती हैं। लीला आज आसमानी रंग की साड़ी और ब्लाउज पहिने है। पाँव में सफेद चप्पल हैं। 'देर हो गई है···मुझको सूली पर तो नहीं चढ़ाओगी ?'

लड़कियाँ लीला के साथ हँसती हैं।

मंडप में इन्दिरा का भाषण समाप्त हो गया है। 'इन्क़लाब जिन्दाबाद' के नारे भी गूँज चुके हैं।

लीला की हँसी बन्द हो गई है। 'तुम लोग जल्द ही चले जाओ···

विश्वासघात ठीक नही।' वार खाली जाता है।

'आप 'इंडिया टाइम्स' वाले से आज मिल रही हैं, न ?' लड़कियाँ लीला को घेरती हैं।

'तुम लोग बिलकुल बच्चो वाली बात करती हो ! इतना हक तो है बेचारे को कि हमारे नाटक को सड़ियल बताए...'

'सड़ियल वह खुद है, मिस बोस ! आप उसको टेलीफोन तो कर लीजिए...'

अब घेरे से निकलना मुश्किल है। लड़कियाँ पुस्तकालय के बगल वाले कैबिन तक लीला को ले गई हैं। टेलीफोन वहीं है।

एक लड़की नम्बर मिलाती है और दूसरी रिसीवर लीला के कान पर धर देती है। कनेक्शन के क्लिक होते ही लड़कियो का उत्साह और बढ़ता है।

'हलो ! 'इंडिया टाइम्स ?' आपके नाटक-आलोचक से मिलाइएगा... छुट्टी पर हैं ? आप बकवास कर रहे है, साहिब...उन्होने कल ही हमारे नाटक...अच्छा ! वह 'कोई और हैं ?' उन्ही 'और साहिब' से मिलाइए, साहिब...'

लड़कियों ने साँस रोक ली है।

'हलो ! मेरा नाम बोस है...मिस बोस, अभी शादी नही हुई है... आपका नाम ? राजकपूर ?...' माऊथ-पीस लीला हाथ से बन्द कर

देती है। लड़कियाँ भी हँस रही है। 'हाँ, तो राजकपूर जी ! मैं आपसे मिलना चाहती हूँ। परसों नहीं जी···आज शाम को···जी, रुकी रहूँगी आपके काम के खत्म होने तक।'

रिसीवर रखकर लीला लड़कियों की तरफ देखती है। प्रचंड भक्ति-भाव घबरा देता है।

लड़कियाँ अब भागने की तैयारी मे हैं। मंडप के पास जलूस इकट्ठा हो रहा है। इन्दिरा अय्यंगार सबसे आगे है।

'राजकपूर ! कोई और नाम नहीं सूझा माँ-बाप को ?' कठोर मुद्रा हँसी से टूट जाती है।

'रिचर्ड बर्टन ही रख देते···' रिबन मे कसी घोड़े की दुम हिलती है।

'हि ! हि ! हि !' तिरस्कार असहनीय है।

कारीडोर में खड़े लीला जलूस को ध्यान से देखती है। भिड़ जाएँ तो ? कल्पना-मात्र ही डरावनी है।

'इं ··क···ला···ब !' इन्दिरा अय्यंगार चीखती है।

'जिन्दाबाद !' नारा बुलन्द हो उठता है।

'ह···मा···री···माँ···गें।' अब ऐसा मालूम होता है कि किसी भारी ट्रक का गियर जवाब दे गया है।

'पूरी करो !' नारा फिर गूंजता है।

× × ×

ज्वार-भाटा गेट पहुँच गया है। दरवान की आज हेकड़ी निकल गई है। गेट पूरा खोलकर दुबकता है। पालतू बन्दर भी आज डर गया है। आधा खाया केला फेंक नीम की तरफ उचकता है। गले की जंजीर को दरबान निर्दयता से झटकता है। बन्दर दरबान की तरफ दुबकता है।

× × ×

वर्दियाँ पहने चपरासी बीड़ी पी रहे है। लडके कॉफी के प्याले पकडे नंगे पाँव इधर-उधर दौड़ते है। हिन्दुस्तानी अंग्रेजी लिवास मे कसे··· अकेला अंग्रेज हिन्दुस्तानी लिवास में ढीला छुटा···इस गड़बड को बाँधता कनाट-प्लेस का शोर। अपनी अलग दुनिया है 'इंडिया टाइम्स' की।

ऊपर जाना चाहिए या नही ? सीढियों के नीचे खडी लीला अंतिम बार फिर इरादा बदलने की कोशिश करती है।

इरादा बदला नहीं जा सकता। पेवमेंट मे खडे टैक्सी ड्राइवरो मे इशारेबाजी शुरू हो गई है।

लीला ऊपर पहुँचती है। अब चपरासियों मे इशारेबाजी शुरू होती है।

बिना सोचे लीला कारीडोर में प्रवेश करती है। दोनों तरफ आँखें दौड़ाती है। छोटे-छोटे बन्द दरवाजों में बोर्ड शानदार लगते है।

राजकपूर···औपचारिक तौर से खटखटाते लीला बग़ैर इजाज़त के कमरे में आ जाती है।

काम पर झुका चेहरा क्षणभर के लिए उठता है। हाथ सामने पड़ी कुर्सी को संकेत करता है।

चेहरा फिर काम पर झुक गया है।

टेबुल पर पत्रिकाएँ और कागज़ पड़े हैं। टेलीफोन पर रंग-बिरंगे बटन जुड़े हैं।

कपूर साहिब···साहिब क्या, अभी तो छोकरा है···छोकरे की भँवें कितनी ख़ूबसूरत है! औरतों की तरह ट्वीज़र लेकर तराशता होगा, और क्या! पलकें कितनी लम्बी हैं! आदमियों पर बिलकुल नहीं अच्छी लगती! तभी तो छोकरा लग रहा है। कनपट्टी के एक-दो बाल सफ़ेद हैं···छोकरा नहीं है। और नाक! अन्त ही नहीं है नाक का तो!

अब लीला प्रसन्न है!

राजकपूर मेज़वाला बटन दबाते है।

चपरासी कुछ देर बाद गुनगुनाते आता है। पहाड़ी भजन है।

'कापी' मेज़ पर से उठा बाहर फिर निकलता है।

न जाने क्यों लीला पीछे मुड़कर देखती है।

चपरासी की आँखें पीठ पर गडी हैं।

लीला का मुड़ना चपरासी को नही जँचा है। गुनगुनाहट जारी रखते वह कारीडोर के बाहर हो जाता है।

'घूरते साहिब लोग भी हैं···' राजकपूर कन्धे झटकाकर हँस देते है ।

'आलोचक शायद आप ही थे ? पैंतीस बरस का तो होगा ? क्या करना है मुझको इसकी उमर से ?

'जानकारी फोन पर ले ही ली थी न ?' हँसी लड़की वाली है।

'तकलीफ़ पहुंची तो माफ कीजिएगा ।'

'तकलीफ ? आपकी आलोचना से ? मुझे ? अरे साहिब, क्या बात करते हैं आप भी ! पूरी आज़ादी है आपको, मतलब-वेमतलब बकना···जो मर्ज़ी लिखिए आप···' बोले क्यो जा रही हूँ ?

'वैसे मैं राजनीति से ज्यादा दिलचस्पी रखती हूँ। हमारा आलोचक बीमार था। मैंने सोचा मैं ही कर लेता हूँ···दिल्लगी रहेगी···'

'बड़े दिल्लगीबाज़ हैं आप ! ···राजनैतिक भी···कलात्मक भी··· वाह !' मुसकुराहट मीठी है लीला की।

'मेरी राजनैतिक दिल्लगी पर भी लोग बौखलाते हैं।

'आप मुझको पागल समझते हैं ?'

'हद करती है आप तो ! यानी मैं कुछ कह ही नही सकता ।' राज गरजते हैं। लीला चौंक जाती है। 'हमारी समस्या···आपको मालूम है, क्या है हमारी समस्या ?' राज कुर्सी सरकाते हैं। 'यह देखिए हमारी समस्याएँ !'

दीवार पर टँगी तसवीरें अब साफ दिखाई देती हैं।

पहला अकाल का दृश्य है। माँ सूखा स्तन बच्चे को दे रही है। बच्चे की उठी हुई हथेली मकडी लगती है।

दूसरा दृश्य भी अकाल ही का है। तीन नंगे बच्चे—एक लड़की भी है उनमे—हाथ मे टीन लिये कैमरे को गौर से देख रहे है।

किसी नेता का जोशीला भाषण। तीसरा दृश्य।

'नाटक की समझ बेशक आपको न हो···अन्दाज़ आपका नाटकीय है···नौटंकी अच्छी थी।'

राज ठहाका मारते हैं। 'बहुत लोग प्रभावित हुए है इस नाटक से··· नौटंकी सही···'

'हल भी तो होगा आपके पास···इन समस्याओं का···' लीला तसवीरों की तरफ इशारा करती है।

'मैं गुरु लगता हूँ क्या ?' राज भावनाहीन हैं।

'बुद्धिमत्ता के प्रमाण तो आपने कई दे ही दिये हैं···'

'हमारी समस्या है सास्कृतिक दासत्व···अगर एलेक्ट्रोनिक संगीत यूरोप में चालू हो गया है तो हम भी ध्रुपद और ढम्मार को एलेक्ट्रोनिक ग़िलाफ़ चढ़ायेंगे···अगर इयोनेस्को लन्दन मे लोकप्रिय है···'

'पैरिस में···इयोनेस्को फ्रेंच है···'

'तो राजधानी विमेन्स कालिज इयोनेस्को का नाटक जरूर प्रस्तुत करेगा···'

लीला की टोक की राज परवा नही करते हैं।

'जगद्गुरु का आदेश क्या है ? कि हम भवभूति और बाणभट्ट को ही स्टेज पर चढने दें ? जगद्गुरु स्वयं भी तो···'

'जी हाँ, पतलून पहिनता हूँ···अंग्रेज़ी के अख़बार में काम करता हूँ। अगर आप सांस्कृतिकदासत्व और अंग्रेज़ी में लिखकर, या आपकी तरह अंग्रेजी पढाकर, पेट पालने का अन्तर नही जानती तो···खेद है···खेद इस बात का कि आप ढेर सारी लड़कियों का रोज घण्टों दिमाग खराब करती है···'

'देखिए ! मैं अपना अपमान कराने नहीं आई हूँ।' लीला खड़ी हो जाती है।

'जी नही, आप मेरा अपमान करने आई हैं।'

राज मुसकुराते हैं। लीला के बैग की पट्टी कुर्सी की दरार में फँस

गई है।

'किसी और साहिब के जैकेट का आस्तीन आ गया था इसी दरार में···उतारनी पड़ी थी जैकेट !' राज हँसते है। 'बैग-विमोचन के पश्चात् मैं आपको नीचे कॉफी-बॉर मे कॉफी पिला सकता हूँ।'

लीला विवशता की हँसी हँसती है। बैग छूटता है।

कोरीडोर के बाहर फिर वही चपरासी। बीड़ी का धुआं सांस घोटता है ?

'लगता है मेरी साडी की छपाई हो रही है···आँखें ही आँखें··· चपरासी कुछ और काम नही करते हैं आपके ?'

'नही, कॉफ़ी भी पीते हैं, चाय भी···कभी फिल्मी गाना गाते है, कभी भजन···और स्ट्राइक भी करते हैं जब दिल किया तो···काम क्यों नही करते हैं यह चौथी श्रेणी के अफसर ?'

× × ×

कॉफी-प्रेमी भूत-प्रेत लगते हैं। धुंधलेपन में राज लीला की पीठ पर अवैयक्तिक रूप से हाथ रख, उसे कोने की टेबुल तक ले जाते हैं।

'पत्रकार की आँखें अँधेरे मे भी खूब देख लेती हैं···' लीला अपने ऊपर हैरान है। चोचलेबाजी इसी को कहते हैं।

अँधेरे मे लीला को अच्छी तरह देखने का प्रयत्न जारी रखते, बैरर मेनू दोनों को पकड़ा देता है।

'आप कुछ खाना पसन्द करेंगी ?' भाव नम्र है।

'जी नहीं। सिर्फ कॉफ़ी, बस···'

'भगवान कृपालु हैं।' बैरर के जाते ही राज चैन की साँस लेते हैं। 'मेरे पास सिर्फ कॉफ़ी के लिए पैसे है···बस···'

लीला जोर से हँसती है। एकाएक रोक लेती है अपने को। खास हँसी वाली बात थोड़े ही है यह !

बहुत ही तंग पतलून में कुछ नवयुवक जूक बक्स के इधर-उधर मँडराते है।

'मैं हमेशा इसी ताक में हूँ कि एक की तो पतलून फटे।'

'अब लीला की हँसी अँधेरे में गूँज उठती है। नवयुवक हँसी की ओर मुड़ते हैं। बढ़ाई हुई जुल्फ़ों से जूक बक्स होली खेलती है।

बैरर कॉफी ले आता है।

लीला साँस रोक लेती है। आमलेट और प्याज़ की मिली-जुली गन्ध फिर भी सताती है।

'अंग्रेजी पढाती हैं न आप ?'

'इजाजत हो तो···'

राज ठहाका मारते हैं।

'राजनैतिक समीक्षा करते हैं न आप ? जी हाँ, मेरी इजाज़त है…'

Hello darkness, my old friend,
I've come to talk to you again.

खामोशी का हुक्म देता है गीत।

स्विंग-डोर लगातार झूलता है।

कॉफी-बार के अँधेरे आँख-मिचौली शुरू हो गई है।

द्वितीय खण्ड

सुबह के दस बज गये हैं। लाला गनपतराय अभी घर ही है। आज जमुना इक फैक्टरी का महत्त्व घट गया है।

गंगादेवी भी आज छोटे कमरे मे लेटे नीद का बहाना नही कर रही हैं। साडी ठीक तरह पहनी हुई है। बाल भी ठीक सँवारे है। पल्ला सिर ढकता है।

अजन्ता की चित्रकला आज इन्दु के श्रृंगार का आधार है। समुद्री रंग की साड़ी और उसी रंग का ब्लाउज़। जूड़ा जटा के समान सिर के ऊपर बांधा है, मोतियों की माला जटा को सजाती है। सफेद चप्पल पांव मे हैं।

महेश माली को बरामदे में खड़ा झिडक रहा है।

चौकीदार की वर्दी पर आज इस्त्री हुई है। सजीव लग रहा है।

गंगादेवी घबराई हुई हैं। इन्दु आज क्यों ढिठाई पर तुली है?

'कह तो दिया है सिर नही ढकूंगी ? अगर वह इतना भी नहीं बर्दाश्त कर सकते हैं, तब मतलब है वह लोग फूहड़ हैं और तुम मुझको जान-बूझकर वहाँ ढकेल रही हो…'

महेश बैठक में आ गया है। 'तो आधुनिकता तुम में कहाँ है ?' मुँह पोछते-पोछते कुछ देर प्रतिक्रिया की आशा करता है। 'दूल्हा खरीदा है कि नही ?'

'क्या मतलब ?' इन्दु, लालाजी, गंगा देवी सब आवाज़ मिलाते हैं।

आशा की पूर्ति हो गई है। 'मेरा मतलब नही समझे ? अच्छा अब सविस्तार कहता हूँ। फैक्टरी के फैलाव की जो बातचीत शादी के पहले चलाई थी···वह दामाद साहिब को खरीदना नही तो क्या है ? ब्लैक मार्केट रेट मे खरीदा है जगदीश को तो !'

'जब हमे तुम्हारी राय की जरूरत होगी तो हम इत्तिला दे देंगे···' इन्दु चोट छिपाती है।

'हम देखेंगे हमारा महेश कैसी बहू लाता है···भिखारिन लायेगा क्या ?' गगा देवी को भी महेश की बात बुरी लगी है।

'मैं लालची नही हूँ !'

'शादी एक ऐसी संस्था है कि लालच के बावजूद आदमी घाटे में ही रहता है।' लालाजी हँसते हैं। 'मुझको देखो। सौ तोला सोना और पाँच सौ चाँदी···इतना कुछ लाई थी यह··फिर भी मुझको तो कोई सुख नही मिला···'

'सारा सुख मुझे जो दे दिया था···देखो, महेश ! शादी जिससे मर्ज़ी करो···बस, साल-दो साल में एक बार मुझको मिलने आना···और देखो, जगदीश लाखों मे एक है···' गंगा देवी अपने को भी विश्वास

दिला रही हैं, शायद ।

'हां···और ज़ुल्फें मुझसे भी घनी है, बाल भी घुंघराले हैं···फिल्म-स्टार लगते है, दामाद साहिब ! हमारे फिल्म-स्टार का अपना बोतलों का साम्राज्य है । और अब बोतलों का सम्राट् पटरानी पा गया है···'

'चुप रहो !' इन्दु को अब गुस्सा आता है । मज़ाक भद्दा होता जा रहा है । 'तुम्हें कौन रोकता है साम्राज्य बनाने से ? खोलो न, अचार की फैक्टरी ? भेजना बाहर भी ! विदेशी मुद्रण मिलेगा···सरकार सम्मान भी करेगी अचार सम्राट का···बोतल हम दे देंगे । पचास फ़ी-सदी छूट···

कार के पहियों की खरौंच अब बैठक में साफ सुनाई देती है ।

'वह लोग आ गए हैं ।' गंगा देवी एक गिड़गिड़ाती नज़र इन्दु की तरफ डालती हैं ।

कोई असर नहीं होता है । इन्दु का सिर नंगा ही रहता है ।

× × ×

पोर्च पर आ डटी काली एम्बैसडर का बुरा हाल है । कीचड का कई बार सामना किया है । बंपर भी कुछ मुड़ गया है एक तरफ से ।

लाला ब्रिज किशन का कद छोटा है । गाड़ी से कदम नीचे रखना असंभव है । लुढकते हैं, गाड़ी के बाहर । हँसते हुए लाला गनपतराय की तरफ हाथ जोड़ते हैं ।

चिड़ियाघर से छूटे नमूनों की तरह तीन बच्चों ने चोर-सिपाही खेलना शुरू कर दिया है। कई क्यारियों का मिनट-भर मे सत्यानाश हो जाता है।

बरामदे में खड़ी गंगा देवी अपने को रोकती हैं।

ड्राइवर-सीट से उतरकर जगदीश पीछे का दरवाज़ा खोल देता है।

सुशीला देवी की रेशमी चादर साड़ी को छिपाते-छिपाते शरीर को डबल भीमकाय बनाती है।

जगदीश की बहिन ही हो सकती है यह···हाथ में सोता बच्चा लिये अन्त में एक और स्त्री गाड़ी से उतरती है।

अब जाकर गंगा देवी नीचे उतरती हैं, हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए।

'बहिन जी से शर्मावे है···' सुशीला देवी बेटे को छेड़ना शुरू करती हैं। 'देख ली दुल्हन? कि बिटिया से भी शर्मावे है?' साड़ी का पल्ला मुंह में ठूंस लिया है सम्धिन ने।

पत्नी का विनोद ब्रिज किशनजी को काफी पसन्द आया है।

'अरी जाने भी दो, अम्मा!' शांति माँ को रोकने की कोशिश करती है। 'अच्छा हुआ कि सजधजकर गुडिया नहीं बन गई तुम!' ऊपर चढ़ते-चढ़ते इन्दु को देखकर हँसती है। 'नाक मे दम कर दिया था इन्होंने तो···'

'नाक में दम तो तुम लोग करे हो। देखा इन्दु बिटिया को···जुकाम हो जाय तो हो जाय···पर पेट, पीठ नंगा ही रहेगा···हमारी शाति फूल गई है···नही तो उसने कौन-कुछ ढँकना था···'

महेश को जगदीश की झेप पर तरस आ गया है। बातो मे लगाता है।

'सिर फोड़ेगा, हरामजादा !···' शाति चीखती है।

तीन मोटे लड़कों में से एक बरामदे की मुंडेर से छलांग मारने वाला है। नानी जी बच्चे को एक चपत जमाती हैं। बाकी पुचकारने मे लग जाते है।

बैठक की दीवारें शोर से फटने को है। गोद में सोता हुआ बच्चा भी अब उठ गया है। भूख का रोना शुरू होते ही बाकी तीनो का कोरस बन जाता है।

सबसे बड़े बच्चे की आँख रामपूजन पर पड गई है। रोना बन्द हो जाता है तीनों का। अब चौथे का भी।

शाति बच्चो को सँभालती है। शर्बत का गिलास तीनों को बारी-बारी पकड़ाकर मिठाई भी बाँटती है। 'और खाओगे तो गले मे फँस जायेगी मिठाई···'

'क्या जबान पाई है तुमने भी···' लाला ब्रिज किशन बेटी को डांटते हैं।

तीनों लड़के बाहर कम्पाउंड में फिर भाग गये हैं।

'तुम मिठाई-विठाई मत खाओ, जी !' सुशीला देवी की डपट खा लाला बिज किशन कचौरी खाने में लग जाते है। 'मधुमेह है जी इन्हें···क्या बतावें···'

गोद का बच्चा अब गोलमेज तक पहुँच गया है।

'अरी !' सुशीला देवी चीखती हैं। 'कहाँ मर गई, शांति ? मूत रिया है तेरा बच्चा खड़े-खड़े !'

इन्दु और शांति अन्दर कमरे में साड़ियाँ देख रही हैं।

'क्यों फाड़े देती हो गला ?' शांति बच्चे का पायजामा उतारकर बैठक के कोने में फेंकती है।

गंगा देवी न देखने का बहाना करती हैं।

पत्नी की विवशता पर आज गनपतरायजी को अजीब आनन्द हो रहा है।

गन्दा पायजामा उठा गला साफ करते जगदीश कार की तरफ चलता है।

'अब तो वैसे मधुमेह मुझको इतना तंग नहीं करती है···पहले बात और थी !'

बवासीर की भी शिकायत थी इन्हें तो बहिन जी···क्या बतावें !'

सुशीला देवी ने छोटे बच्चे को अब गोद में बैठा लिया है।

'हमारे यहाँ तभी मिर्च-मसाला बहुत कम इस्तेमाल होता है···' गंगा देवी ने अपनी हँसी रोक ली है।

सुशीला देवी बच्चे को गोद मे ले 'आ जा री निंदिया···' गा रही हैं।

'हमारे यहाँ बवासीर की शिकायत पुश्तो से चली आ रही है···बडे लालाजी ने मेरठ ज़िले में सबसे पहले आपरेशन करवाया था···'

'बवासीर से तो छुट्टी मिल सकै है बहिन जी···गठिया का तो इलाज ही नहीं है···' सुशीला देवी उठकर सोते बच्चे को दीवान पर लिटा देती हैं। 'बरसों से तडपै हूँ मैं तो···' घुटनो के नीचे हाथ फेरती हैं, सुशीला देवी अब। 'घुटनों के नीचे तो समझो लोहा है लोहा···' कराहती फिर कुर्सी में आ बैठती है। अब मालिश जाँघों की होती है।

गंगा देवी ने चिन्ता छोड़ दी है। सम्धिन साडी उठा भी लें तो उनका कुछ नही बिगड़ता है।

'अमरीकी दवा ले रहा हूँ अब···क्या कमाल है, साहिब ! जवाब नहीं अमरीकियों का तो···दवा-दारू मे पहला नम्बर, जग में पहला नम्बर···' ब्रिज किशनजी फिर मिठाई को देख रहे है।

'बस ! किए जाओ बदपरहेज़ी ! इस बदपरहेज़ी की दवा तो अमरीकी भी नहीं देंगे और न ही रूसी···' सुशीला देवी हँसे जाती हैं।

'गठिया, बवासीर···मधुमेह···सब फिजूल की बातें हैं···' गंगा देवी का अन्दाज़ दार्शनिक है। 'बस, फिक्र करना छोड़ दें, तो कोई बीमारी पास नहीं फटकेगी···'

पत्नी बीमारी का तो हमेशा मज़ाक उड़ाती आई है। आज क्या हो गया है ? गनपतराय गंगा देवी को कौतूहलपूर्वक देखते हैं।

गंगा देवी का निश्चय दृढ़ है। वह सिर्फ़ सम्धि और सम्धिन से बात-चीत में लगी रहेंगी।

महेश और जगदीश पिछले बरामदे में टहल रहे हैं।

'मैं भी यही कहता हूँ इससे ! फिक्र छोड़ो···मैं चौबीस घंटे इसे यही समझाता हूँ। पर यह···' *ब्रिज किशनजी ने अपने मोटे-मोटे हाथ* घुटनों पर रख लिये हैं। टाँगें मध्य लय में हिल रही हैं। 'यह मेरी बात मानेंगी ? कभी फिक्र है बड़े दामाद जी की चिट्ठी नहीं आई··· कभी फ़िक्र है शांति के लड़की नहीं हुई है···कभी फिक्र है मँझला लड़का अभी अमरीका से वापिस नहीं आया है···अरे ! यह भी फिक्र की बातें हैं कोई ? आप समझदार हैं, बहिन···' ब्रिज किशन जी गंगा देवी की प्रशंसा पूरे दिल से कर रहे हैं।

रामपूजन गंगा देवी के कान में कुछ फुसफुसाता है।

बैठक में बातचीत का रंग बदलता है।

'अरे बहिन जी ! हम खाने-पाने के लिए थोड़ा आए हैं ? हम तो बिटिया को देखने आए थे। खाना हम मेरठ ही खाएँगे···'

'तो अब बनाया सब फेंक दें ?' लालाजी को भूख बहुत लग रही है। चिड़चिड़े तभी हैं।

बच्चे भी आ गए हैं अन्दर ! खाना खाने की माँग सीधी-सादी है।

वातावरण फिर हल्का हो जाता है।

× × ×

सम्धी स्टूडीबेकर में दिल्ली की सैर कर रहे हैं।

जगदीश, महेश, इन्दु और शांति एम्बेसडर ले पिक्चर देखने चले गए हैं।

बैठक में लाला गनपतराय चाय की प्याली पी रहे हैं।

फैक्टरी को फरीदाबाद में खड़ा करना है। बात अभी की जाय या शादी के बाद ? लालाजी सोच में डूबे ताजी चाय प्याली में डलवाते हैं।

सारा जीवन इन जंगलियों के साथ बितायेगी इन्दु ? गंगा देवी पति को चाय की प्याली पकड़ाती हैं। चिन्ता अभिव्यक्त नहीं होने पाती।

दीवान पर सोया बच्चा हँसता है। सपना मनोहर ही होगा।

२

सड़क कार-पार्क में बदल गई है। सजे-धजे स्त्री-पुरुष, पार्किंग-संस्कार से मुक्त हो, अय्यंगार साहिब के बँगले की ओर क़दम बढाते हैं। सिपाहियों की बेधती हुई आँखों से बचते-बचाते अध-नंगे बच्चे अँधेरे में भी विदेशी मेहमानों का पीछा करते हैं।

आज प्रातःकाल, कन्या लग्न मे, राघवन् ने चन्द्रा के गले मे मंगल-सूत्र बाँधा है। वेदोच्चारण भव्य था। कई राजदूतों ने वर-वधू को संस्कृत में आशीर्वाद दिया था। प्रतिष्ठित अतिथियों के लिए अय्यंगार साहिब ने श्लोक लैटिन लिपि मे छपवा रखे थे।

बँगला रंगीन बल्बो की मालाएँ पहने है। बगीचे के समस्त वृक्षो और झाड़ियो ने भी।

डेढ हज़ार अतिथि कबाब, चीज़स्ट्रा और सैंडविच, कॉकटेल्स और फलो के रस की सहायता से गले के नीचे उतारे जा रहे हैं।

श्रीमान् और श्रीमती अय्यगार अतिथियों का स्वागत कर, उन्हें चन्द्रा और राघवन् से मिलाते हैं।

एक ही फिक्र सबको सता रही है। राघवन् के माता-पिता! तमाशा बने दोनों वर-वधू के साथ खड़े तमाशा देख रहे है। सम्धी साहिब नगे पाँव हैं। यज्ञोपवीत ही बदन को ढकता है। वेष्टी सकच्छ बँधी

है। माथे पर अंकित नामम्, वैष्णवत्व का पूरा प्रमाण देती है। जरा पीछे खड़े ही सम्धिन रिसेप्शन का आनन्द उठा रही हैं। नौ गज़ की साड़ी दक्षिणी वैष्णव ढंग से बाँधी है। नाक और कान में हीरे चमक रहे हैं। नंगे पाँव की बीच वाली उँगलियों में बिछुवे हैं।

जब भी कोई विदेशी अतिथि हाथ जोड़ता है, तो सम्धिन की हँसी फूट उठती है।

श्रीमती अय्यंगार ने आज श्रृंगार में विशेष श्रद्धा दिखाई है। गुलाबी काचीपुरम् की साड़ी का बार्डर गूढ़े हरे रंग का है। ब्लाउज़ हरा है। सौन्दर्य निखर आया है। सिर्फ चाल बेढब है। महीनों बाद ऊँची एड़ी वाले सैंडल पहने है।

अय्यंगार साहिब नेहरू-जैकेट और पतलून में हैं। चाल चुस्त है। मुसकुराहट ढीली। डेढ़ हज़ार अतिथि सब-के-सब प्रतिष्ठित···इनका परिचय देना, कराना, छोटी-मोटी बात नहीं है।

चन्द्रा की बनारसी साड़ी चकाचौंध करती है। चशमा आँखों से हटा दिया है। बच्चों का-सा चेहरा काफी थका हुआ दीखता है।

राघवन् विलायती वेशभूषा में हैं। प्रत्येक विदेशी महिला का हाथ सावधानी से अपने हाथ में लें, उसके ऊपर झुकते है। हिन्दुस्तानी महिलाओं को केवल नमस्कार ही करते हैं। सब मर्दों से हाथ मिलाया है। थकावट की निशानी तक नहीं आने दी है।

इन्दिरा ने अपनी प्रतिकूलता का आज भी प्रदर्शन किया है। साड़ी रेतीले रंग की है। ब्लाउज़ भी। रंग-बिरंगे शीशों वाला चोकर गले

मे है। मैच करता हुआ ब्रेसलेट। चप्पल भी जडाऊ, चोकर और ब्रेसलेट के साथ के।

पद्मा और कमला राजस्थानी राजकुमारियाँ बनी है। राजस्थानी मिनियेचर्स का अध्ययन मूलरूप से हुआ है।

मन्त्री महोदय अभी तक नही आए हैं। यह समस्या इतनी भीषण है कि अय्यंगार दम्पती सम्धी-सम्धिन का गँवारपन तक भूल बैठा है।

पद्मा और कमला फोन पर फोन किए जा रही हैं। जवाब वही है। पन्द्रह-बीस मिनट मे···बस !

देशी-विदेशी अतिथि भी धीरे-धीरे समस्या को ताड़ गए हैं। मन्त्री महोदय के आने के पहिले जाना अनुचित है। और वह साहिब हैं कि घटो से पन्द्रह-बीस मिनट की मोहलत माँगे जा रहे हैं ! कब तक कबाब ठूँसें जाय आदमी ? कॉकटेल्स का समय भी तो हो चुका है ··

'रवाना हो गए हैं, मिनिस्टर साहिब !' सूचना ले ही आती हैं, पद्मा और कमला आखिर। उत्सुकता की लहरें एकत्रित सज्जनों में दौड़ जाती हैं।

× × ×

भीड को चीरती हुई गाडी बरामदे तक पहुँचती है। वर-वधू और अय्यंगार दम्पती गाड़ी की ओर लपकते हैं। प्रतिष्ठित अतिथियों ने गाड़ी घेर ली है।

अंग-रक्षक बेदर्दी से सबको धकेलते हैं। प्रेस के फोटोग्राफर

अड़ियल हैं।

फ्लैश-बल्ब तूफान खड़ा करते हैं।

वायुसेना का बैंड, जो दस मिनट से शान्त था, फिर बज उठता है।

× × ×

'चन्द्रा बुरा तो नहीं मानी होगी कि हम लोग खिसक गए हैं ?' लीला मस्त है। ज्यादा पी ली है।

'अरे ! उसको तो कुछ दिखाई भी नहीं दिया होगा ! चशमा उतार दिया था बहू बनने के लिए !' इन्दु की हँसी भी मस्त है।

एम्बैसडर चला जगदीश रहा है। साथ राज बैठे हैं।

टैम्पो-ट्रक से टक्कर होते-होते बची है। जगदीश ड्राइवर की माँ को गाली दे चुका है और जवाब भी पा चुका है।

'मिसेज अय्यंगार को देखा आज ? बहू बनी हुई थी…'

अब दोनों हँसना शुरू करती हैं।

'बिल्लियाँ हो, बिल्लियाँ…नोचकर खाने वाली बिल्लियाँ…' राज पीछे मुड़कर दोनों को देखते हैं। 'जब मैं छोटा था, एक बच्चों की कहानी पढ़ी थी मैंने…'बैठक की बिल्ली'…'

'महेश भी हमे बिल्लियाँ कहता था…' इन्दु बात काटती है।

जगदीश चौराहे पर हरी बत्ती के इन्तजार मे है।

एम्बैसडर के बढते ही किसी विदेशी दूतावास की इम्पाला ओवरटेक करने की कोशिश करती है। जगदीश जिन् की तरह रफ़्तार बढाता है। इम्पाला से कुछ अजीब शब्द बाहर आकर फैलते हैं। भाषा समझ में नही आ रही है। गालियां ही होंगी।

'और तुम दोनों कब शादी कर रहे हो ?' इन्दु का सवाल सीधा है।

सामने जगदीश का भी ध्यान आने वाले जवाब पर ही केन्द्रित है। गाडी की रफ़्तार कम हो गई है।

'जब कानूनी पहेलियां बुझ जायें तब…' लीला की आवाज़ भर्राई है। 'काफी देर है अभी।'

'विवाह-सस्कार आवश्यक है क्या ?' राज प्रश्न अपने से ही करते मालूम होते हैं।

'अगर मिलना-विलना है तब क्या बुराई है संस्कार मे ?' इन्दु गम्भीर है।

'अरे ! तब तो विवाह के बारे मे सोचना भी नही चाहिए मुझे !' लीला रुखाई से हँसती है।

एम्बैसडर कनॉट-प्लेस पहुँच गई है।

एयर इंडिया के महाराजा साहिब आंख मार रहे हैं।

आँखों से ओझल होते-होते बाटा का जूता इरादा बदलता है।

हाथ में दूध का गिलास पकड़े बच्चा निरोध के गुण गाता है।

'मुझको 'इंडिया टाइम्स' ही उतरना है।' राज एकाएक सतर्क हो गए हैं।

ब्रेक जोर से चीखती है।

'अच्छा, फिर कल ?' राज का प्रश्न आँखों से ही है।

'पूछने की अब भी जरूरत है ?' लीला का उत्तर भी···

× × ×

'एक बात है लीला···'

'हम्म्म्···'

'बम्बई का फिल्म प्रेम का चित्रण बिलकुल ठीक करता है···'

'हम्म्म् ?'

'तुम ठंडी साँस भरती हो और राज से बात करते हुए आँखें झपकाती हो···'

'राजकपूर की पार्टनर तो नरगिस हुआ करती थी न ?' जगदीश पीछे मुड़कर देखते हैं। पास की सीट खाली ही है।

इन्दु हँसने की कोशिश करती है।

लीला भावहीन है।

लाल किले की सड़क खाली है। तूफान की गति है अब एम्बैसडर की। पेवमेंट मे कम्बल मे लिपटी लाशो को सूंघते कुत्ते सहम जाते हैं। सांस बाकी है।

बड़े डाकघर की घडी आज बहुत दिनों बाद काम कर रही है।

आधी रात में अभी पन्द्रह मिनट बाकी हैं।

३

राजधानी विमेन्स कॉलिज में आज विशेष चहल-पहल नहीं है। मील-भर लम्बी लॉन में इनी-गिनी लड़कियाँ ही घूम रही हैं।

बन्द गेट पर वर्दी पहने चौकीदार फिर ऐंठ रहा है। बन्दर ने लाल सँटिन का घघरा पहना है। जंजीर गेट से बँधी है।

× × ×

इंगलिश लिट्रेचर लैक्चर रूम भरा है। लड़कियाँ चुस्त हैं।

'मैंने मिस बोस को कल राजकपूर के साथ देखा···' ब्लू जीन्स के ऊपर सफेद टी-शर्ट है। पतली-पतली उँगलियाँ कर्णपालियों को छेड़ रही हैं। आँखें बन्द हैं।' दोनों को 'डिस्कोथेक' में देखा···वह जो नया खुला है न···'

'तुम क्या कर रही थी 'डिस्कोथेक' में ?' चशमा उतरता है। आँखें तरेरती हैं।

'स्कूल मास्टरनी कहीं की !' झिड़की चारों ओर से पड़ती है। 'कर' क्या रहे थे दोनों 'डिस्को' में ?' कई जोड़े आँखें सूचक पर केन्द्रित हैं।

'तुम लोग बहुत गन्दे हो···मिस बोस वैसी थोड़े ही है ! छि: !' हैंडबैग अब खुल गया है। उँगलियों ने प्लास्टिक की बड़ी-बड़ी

बालियाँ पकडी हुई है। आँखे फिर भिचती हैं। बालियाँ कर्णपालियो तक पहुँच गई है।

एक-दो हल्की चीखें उठती है।

बालियाँ अब झूम रही है।

'श्रृंगार अब हो चुका···' नाक तोते की है। 'अब बताओ क्या हुआ 'डिस्को' मे···'

'कोई खास बात नही···' बालियाँ झूलती हैं। 'तुम लोग शायद जानती ही हो···खास बात नही है···'

'क्या बात छिपाना चाह रही हो ?' कसे बाल सिर के झटकने से ढीला होना शुरू करते है।

'छिपाऊँगी क्या मैं ? मैं समझी थी कि तुम लोग जानती हो कि राजकपूर शादी-शुदा है···' बालियाँ अब स्थिर हैं। सिर 'ओथेलो' पर झुका हुआ है।

सांस लेने की आवाज़ भी नही आती कमरे मे।

'तुम्हे कैसे मालूम ?' एक आवाज निकल ही आती है।

'मेरे एक···भाई लगते है···' बालियाँ अब थिरक रही हैं।

अनुपस्थित भाई काफी देर तक हँसाता है।

'मेरा ममेरा भाई शादी-शुदा है। बदशक्ल भी है और शादी-शुदा भी···' गरदन एक ओर झुक गई है। एक बाली गाल पर विश्राम करती है।

'अच्छा, तुम्हारा ममेरा भाई बदशक्ल है, शादी-शुदा भी···उसके साथ तुम 'डिस्को' गई थी···फिर ?' घोड़े की दुम गुलाबी रिबन से बँधी है। बैल-बाटम्स् भी गुलाबी हैं।

'मेरे भाई भी 'इण्डिया टाइम्स' मे ही हैं। राजकपूर के तीन बच्चे हैं। बीवी खूबसूरत है···तगड़ी है···बरसों जीयेगी···'

'और कोई नही मिला मिस बोस को ?' गला बैठ गया है।

बातचीत ख़त्म होती है।

हाथ में निबन्धों की कापियाँ लिये लीला कमरे मे आ गई है। मुसकुराहट में अभिवादन है। 'निबन्ध घटिया थे···' मुसकुराहट का शेड बदल गया है।

सुसकन और कराह धीरे-धीरे बन्द होते है।

'अच्छा···आलोचना शुरू होती है। 'ओथेलो' फिल्म देखने ही से नाटक की आलोचना नहीं हो सकती···और यह बात ध्यान में रखनी पड़ेगी कि फिल्म बनने के सदियो पहले शेक्सपीयर ने नाटक रची थी···लिखी था···'

'रूसी 'ओथेलो' 'अमरीकी 'ओथेलो' से कहीं ज्यादा खूबसूरत थी···

सच, मिस बोस !'

'हाँ ! चीनी 'ओथेलो' और भी अच्छी होगी···देख लेना।'···लीला हँसती है। 'और तुम लोग फिर भी निबन्ध घटिया ही लिखोगी। क्योंकि आलोचना शेक्सपीयर की रचना की होनी चाहिए, न कि फिल्म की···'

'कोई ऐसा संस्करण नहीं है 'ओथेलो' का जहाँ असली ट्रैजडी इतना कुछ होने के बाद न होकर कुछ पहले ही हो जाय ?' प्रश्न गम्भीर है। मुद्रा भी।

'हाँ···शादी ही ट्रैजडी हो सकती थी···' लीला फिर हँसती है।

आज लड़कियाँ हँसी में भाग नहीं लेतीं।

नाटक की अपेक्षा शेक्सपीयर की कविता शायद अधिक भा जाय।

'न काँसा, न पत्थर, न पृथ्वी, न अथाह सागर···'

तीन उबासियाँ रोकी जा चुकी है।

दो जोड़ी आँखें जबरदस्ती खुली हैं।

'श्याम-वर्णा के व्यक्तित्व के बारे में अनेक मत हैं···

प्रयत्न बेकार है।

चपरासी की घसीटती हुई चाल शुरू हो गई है। साढ़े तीन मिनट में कौरीडोर तय होगा। और फिर बज़र दबेगा।

''ओयेलो' की आलोचना सब एक बार और करना···' कापियाँ टेबुल पर रख लीला कमरे से निकल जाती है।

× × ×

'मिस बोस को मुक्त प्रेम की साधना करनी चाहिए।' तोते की नाक रूमाल से साफ होती है।

'वह क्या होता है ?' गुलाबी रिबन खुल गया है। घोडे की दुम गायब हो जाती है।

'वह स्वीडन में होता है।' बालियाँ स्थिर हैं। चेहरा हथेलियो पर टिका है। 'तुम लोगों को नही मालूम ? जिसको जिससे जब जी चाहा···जहाँ जी चाहा···'

'हत्त ! झूठी कही की !' रिबन फिर कस गया है। गरदन के ज़रा नीचे। शक्ल बदल गई है।

'इसमे झूठ बोलने की क्या ज़रूरत है ? मैंने स्वीडन की पत्रिकाएँ देखी है···' बालियाँ अब भी स्थिर हैं।

'यहाँ क्यों नही लाई ?' चशमा सिर चढ़ गया है।

'पकड़ी जाती तो ? निकाली जाती कालिज से। और तुम लोग ? इम्तहान रद्द कराने की माँग ले स्ट्राइक कर सकती हो, पर मैं

निकाली जाऊँ तो चूं नही करोगी…'

'राजकपूर अगर मिस बोस से शादी कर ले, तो पहली बीवी क्या करेगी ?' मूल प्रश्न फिर से छिडता है ।

'हे भगवान् ! मिस सिंह आ रही हैं ?…'

कमरा अंग्रेजी साहित्य के आधुनिक काल के लिए तैयार होता है ।

× × ×

कालिज के बगल मे ही स्टाफ-क्वार्टर्स बने हैं ।

नमूना इनका भी रेलगाडी ही है । कमरे के आगे कमरा, कमरे के पीछे कमरा । इन डिब्बों के पीछे रसोईघरों की कतार है । आखीरली कतार बाथरूम की है ।

कमरे के पास आते ही लीला की आकृति कठोर हो जाती है । माथे मे बल पडते हैं ।

पायदान के ऊपर चिट्ठी पडी है । लिपि परिचित है । छुट्टियाँ कश्मीर मे बिताई हैं मिसेज बोस ने । अभी तक वहीं हैं क्या ? सेंट थामस गर्ल्स स्कूल में भूगोल-शास्त्र कौन पढ़ा रहा है ?

चिट्ठी खिडकी की तरफ फेंकती है लीला ! तलसर पर औंधे मुँह जा गिरती है । भारी है ।

खिडकी बन्द है । परदा हटा है ।

लॉन हरी चादर मे बदलती है। रंग-बिरंगी लकीरें चादर को छेड़ती हैं। इंच-भर सरकने से मनोरंजन में नया मज़ा आता है। लकीरें धब्बे बन जाते हैं। बेकाबू, बेमतलब, रंगीन एमीबा···

लीला बाहर बरामदे मे आती है। आँखे चौंधियाती है। धब्बे साकार हो चुके है।

गेट के पास वाले आँवले पर बिल्ली दबी चाल चढ रही है। कौवों की काँय-काँय कान फाड़ती है।

कई लड़कियाँ लॉन मे खडी तमाशा देखती है।

चौकीदार गेट खोलता है।

राजकपूर फुर्ती से लॉन तय करते है।

'देवी लग रही हो···वरद मुद्रा धारण किये···'

लीला कमरे के आगे बरामदे में खड़ी है।

× × ×

राज चप्पल उतारते हैं और अँगड़ाई लेते-लेते खिड़की के सामने खड़े हो जाते हैं।

रंगीन एमीबा हरी चादर को फिर रँगते हैं।

'क्या हाल है इंग्लिश लिट्रेचर का ?' अब पीठ खिड़की की तरफ है।

हाथ में निबन्ध की कापी है।

'सांस्कृतिक दासत्व पर भाषण देने की कोई जरूरत नही है। मैं तो खुद 'अंग्रेज़ी हटाओ' के नारे अब लगाया करूँगी। शेक्सपीयर का बुरा·हाल किया है···'

'अंग्रेज़ी हट जाए तो पेट कैसे भरोगी ?' राज खटिया पर सुस्ताना शुरू करते हैं। 'और अंग्रेजी हट जाय तो 'इण्डिया टाइम्स' भी बन्द हो जायेगा···'

'और 'इण्डिया टाइम्स' बन्द हो जाए, तो राजकपूर साहिब की फैशनेबुल बीवी और तीन फरिश्ता-नुमा बच्चे भूखे रहेगे···'

लीला का ध्यान दीवार पर टँगी दो नग्न स्त्रियो पर है।

महिलाएँ यूरोपीय हैं। एक के सुनहरे बाल कुछ नीलापन लिये हैं। दोनों के हाथ में रंगीन तौलिये है। क्षितिज धुआँधार है। रेखाओं की कमी चित्र को आकर्षक बनाती है।

पास ही मैंटलशेल्फ है। शोलों-सी उँगलियाँ कौवे को सहला रही हैं। युवती के बाल कौवे के कालेपन-से धुले हुए हैं। किसी अज्ञात दुख से आँखें पीड़ित हैं।

'ठीक कहा है न मैंने ?' राज ने सिगरेट सुलगा ली है।

'टेबुल जरा साफ कर देना···मैं चाय ला रही हूँ···' लीला रसोई की तरफ जाती है।

'मिठाई तो खा लो···' लीला ट्रे किताबों के ढेर पर अटका देती है। 'इन्दु ने भेजी है···'

फूंकना जारी है। राज भावहीन है। चाय की प्याली हाथ में ले ली है।

'गुस्से में चाय पीने से पेट मे फफोले हो जाते हैं···' मनाने का प्रयत्न शुरू होता है। 'और देखो, तुम्हारी तोंद निकल रही है। भद्दा लगता है···क्योंकि तुम दुबले-पतले हो···'

'वह भी यही कहती है···'

'तब जरूर बढाओ तोंद···'

राज मुसकुरा पड़ते हैं। खटिया से उठ खिड़की की ओर जाते हैं।

परदा खिंच गया है।

बड़ी-बडी लाल मछलियां···काली, मोटी आंखें। हवा का झोंका जान भर देता है।

'यह परदे नहीं हैं···तरेरती हुई आंखें हैं। हमेशा चौकीदारी करती हैं यह काली तश्तरी-सी आंखें···'

'दिल में खोट है, तभी बेजान मछलियां तरेरती हुई आंखें लगती है···' लीला अब पास आ गई है।

बाहुपाश कुछ देर मे ढीला हो जाता है।

'विराम-चिह्न यही लगाना। कॉलिज घटे-भर बाद ही बन्द होगा…' होठ राज की भँवो पर फेरते लीला कहती है।

'तो घटे-भर चाय मे मस्त रहेगे ?' राज फिर खिड़की की तरफ जाते है। 'यह चिट्ठी…चिट्ठा यहाँ क्या कर रहा है ? तसवीर है इसमे तो !'

लिफाफा खुल गया है।

तसवीर और चिट्ठी लीला हाथ मे ले लेती है।

'माइ गॉड !' तसवीर हाथ से फिसल गई है।

चिट्ठी अब राज पढते है। 'गुलाटी से तो शादी तुमने करनी थी ?'

'मालूम है तुम्हे…' राज की पकडी हुई प्याली अपने सामने से, हटा देती है लीला, 'उस दिन मुझे लग रहा था कि चाय की प्याली पकड़ने-पकडाते दोनो की उँगलियाँ कुछ अश्लील ढंग से एक-दूसरे के आसपास तड़प रही थीं…सूअर कहीं का !'

'बाप को सूअर नही कहते।'

'वह मेरा बाप नहीं है !' लीला गरजती है। 'मेरा बाप यह है…' धीरेन बोस की तसवीर फ़र्श पर से उठा लेती है। 'फ्रेम मे शादी की तसवीर लगा ली होगी…चाँदी की थी…गये होंगे दोनों किसी सेक्स एक्सपर्ट के पास…एक-दो बार तो काम चले…'

'बन्द भी करो बकवास !'

'मत करो इस तरह मुझसे बात !'

फटकार राज को डराती है ।

'वैसे नवीन गुलाटी ईमानदार आदमी है ।' आक्रमण अब दूसरे ढंग से होता है । 'मैंने इनकार किया तो उसने माँ से साफ़-साफ बात की । और माँ ने हाँ कर दिया । तुम्हारी तरह नहीं है गुलाटी··· रोज झूठ बोलते हो···मैंने लाख समझाया, फिर भी मानती नही है । क्या करे बेचारी···बच्चे भी है, आखिर···संत लगते हो जब भी यह झूठ बोलते हो···मौज है ! एक शादी तोड़ने की जरूरत नही, और दूसरी करने की नही । इस बदजाती का मजा निराला है !'

'बहनी बन्द हो गई है नाली ? लगाओ न और एक-दो डुबकियाँ ?'

'हाँ ! रोज वही झूठ । तलाक पर वह राजी ही नही होती । थक गया हूँ समझाते-समझाते···'

कीचड़ और उछालने की इजाजत देते हुए राज एक सिगरेट और सुलगाते है ।

'और मैं हूँ···हमेशा तैयार···' रुलाई मे कोई दिखावा नही है ।

राज की बाँहें सान्त्वना देती है ।

नजर सब कमरो को बारी-बारी बेधता जाता है ।

लीला की सिसकियाँ हँसी को रोक नहीं सकतीं।

'मिल गया सिग्नल…'

पिन उतार दिये हैं। लहरेदार बाल कंधों को ढकते वक्ष पर खेलते हैं।

कपड़े उतारकर राज लड़का लगते हैं।

लीला का ध्यान बरामदे पर है।

'क्या बात है?' राज झल्लाते हैं। लीला की नजर का पीछा करते हैं। 'कभी और तंग कर लेती हरामजादी!'

परछाईं हट जाती है! मछली फिर तैरना शुरू करती है।

तौलिया ढूंढ रहे है राज!

लीला की आँखें बन्द हैं।

× × ×

खुलते ही आँखें घड़ी पर पड़ती हैं।

सात बज चुके हैं। राज चाय बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

साड़ी फ़र्श पर पड़ी है। पेटीकोट का गेंद ऊपर धरा है।

वार्ड्रोयव तक लीला नग्नता से कुछ-कुछ शरमाती पहुंचती है। स्लैक्स और टी-शर्ट जल्दी से पहन लेती है। फ़र्श पर से कपड़े उठाकर बाथरूम मे पड़ी टोकरी में ठूंस देती है।

'और अब आदर्श पति पतिव्रता स्त्री के पास जायेंगे'''बच्चो की मासूम हँसी सारा पाप धो डालेगी।' लीला ने चाय की प्याली नीचे कर दी है।

'और किसी दिन आदर्श पति लीला बोस की जबान बन्द कर देगा गरदन मरोड़कर'''' राज की आँखें भावशून्य है।

४

गुलाब की क्यारी के पास ही कार्नेशन, कौस्मोस और कौर्न-फ्लावर की मिली-जुली क्यारी है । कुछ ही दूर कैना खिले हैं । काँटेदार झाड़ियों के आगे सब्ज़ियाँ बोई हैं । बीचों-बीच खड़ा गुलमोहर नज़रानी करता है ।

सेमी-डिटैच्ड बँगले को बगीचा तीन तरफ से घेरता है । बँगले की खिड़की बगीचे की तरफ खुलती है । पर्दा हटा है । ड्राइंग-कम-डाइनिंगरूम साफ-साफ दीखता है । बाहर बरामदे में पतली कमर वाले मूढ़ों की क़तार लगी है ।

हाथ में तिपाई उठाए नवीन गुलाटी गुलमोहर की तरफ लड़खड़ा रहे हैं । दम भरकर बँगले के अन्दर से दो कुर्सियाँ भी ले आते हैं ।

गुलमोहर की तरफ पीठ कर नवीन गुलाटी अब कुर्सी में बैठे सिगरेट पी रहे हैं । प्रसन्न दीखते हैं ।

'तारा !' गुलाटी साहिब बड़ी उम्र का स्कूल जाता बच्चा मालूम पड़ते हैं । 'चाय में बहुत देर है अभी ?'

हाथ में ट्रे पकड़े, रसोई-घर के स्विंग-डोर को लात मारती, बँगले के बग़ल से तारा गुलाटी गुलमोहर की तरफ बढ़ती है ।

चायदानी ढकी हुई है। तश्तरी में पकौड़े भाप उड़ाते हैं।

चशमा बग़ैर रिम वाला है। बाल रँगे नहीं हैं। सिर्फ ढीले जूड़े में बँधे हैं। बिन्दी माथे के बल छिपाती है। नाम के साथ-साथ लीला की माँ की काया की भी पलटी हो गई है।

'पकौड़े गर्म ही अच्छे लगते हैं।' तश्तरी पति के सामने सरकाते हुए तारा गुलाटी सहज मुसकुराती हैं।

गुलमोहर से छनती धूप की नक्काशी बदल गई है। डाल पर फाख़्तों का जोड़ा तुनुकमिजाजी दिखाता है।

× × ×

गेट का चीत्कार दृश्य-गीत का गला घोंटता है।

पीछे एक बार मुड़कर देखती मिसेज़ गुलाटी चाय पीना जारी रखती हैं।

'लीला आई है ! साथ मे राज भी हैं !' गुलाटी साहिब बहुत प्रसन्न हैं।

माँ की उदासीनता चुभती है। हैंडबैग गुलमोहर के तन से लगाकर लीला टी-शर्ट को अधीरता से खैंचती है।

'मैं और प्याले ले आता हूँ।' गुलाटी साहिब की प्याली तश्तरी में झनझनाती है।

कुर्सियों की तलाश मे राज आँखें इधर-उधर दौड़ाते हैं। बरामदे मे खड़ी मूढ़ों की कतार में से दो उठा तिपाई के पास धम्म-से धर देते है।

मिसेज गुलाटी की चढ़ी त्योरी बिन्दी को बिगाड़ती है।

गुलाटी साहिब प्याले, तश्तरी और चमचे हिलाते-डुलाते ला रहे है। तिपाई के सामने धरे मूढ़े नजर नही आते हैं। एक पर लात जमाती है। लुढ़कते-लुढ़कते मूढा गुलाब की क्यारी तक पहुँचता है।

लीला और गुलाटी साहिब ठहाका मारते है।

राज अपराधी भाव से मुसकुराते है।

मिसेज गुलाटी मूढा वापिस ले आई हैं। आँखें भावहीन हैं।

'हम शादी कर रहे हैं। बताने आये थे।' लीला चुनौती देती है।

शान्ति की स्थापना हो गई है। तिपाई के इर्द-गिर्द बैठे चाय सब पी रहे हैं।

'राज को सजा हो सकती है...' मिसेज गुलाटी पकौड़ो की तश्तरी सबके सामने करती है।

लीला पकौड़े मे दाँत जमाए माँ की तरफ देखती है।

'राज की नौकरी सरकारी थोड़े ही है, तारा...' पत्नी की अज्ञानता के प्रति गुलाटी साहिब सहिष्णुता दिखाते हैं। 'जितनी शादियाँ मर्जी

करें···चार भी, मुसलमानों की तरह।' चेहरा खिलता है अब। 'मेरी बात अलग थी···अगर शीला के जीते-जी मैं तुमसे शादी कर लेता, तो सरकार मुझे नौकरी से निकाल सकती थी।' आहिस्ता हँसते हैं गुलाटी साहिब ! 'नौकरी भी जाती और दो बीवियाँ भी होतीं मेरी···' प्रस्ताव के हर पहलू पर रोशनी पड़ती है।

'राज की बीवी को तलाक मंजूर है···और चाय दोगी, माँ ?' अभिसारिका का रोल अजीब मजा दे रहा है लीला को !

'और बच्चे ?' मिसेज गुलाटी चाय बनाती हैं। 'तीन हैं, न ? उनको भी तलाक मंजूर ही होगी···' आँखें अब राज पर गड़ी हैं।

'जब राज का जी चाहेगा बच्चों से मिल आएँगे···' अपना नया रोल और अच्छा खेलती है लीला।

'और जब जी नहीं चाहेगा तब तुम तो होगी ही···' थप्पड़ जमाता है। 'मैं इस शादी के बिलकुल खिलाफ़ हूँ। और मेरी अपनी लड़की···. छिः···!'

'यह मेलोड्रामा क्या रच रही हो ?' लीला की कड़क भद्दी है।

गुलाटी साहिब सहम गये हैं।

राज पहली बार माँ-बेटी के आपसी आक्रोश का परिचय पाते हैं। 'शुरू से पछतावा था हमें···' सफ़ाई देने का प्रयत्न करते हैं।

'और फिर भी तीन बच्चे हो गए ? पछतावा निराला था···'

बात मन में बैठाकर मिसेज गुलाटी आगे बढ़ती हैं। 'सच क्यों नहीं कह देते ! तीन बच्चों की माँ बूढ़ी हो जाती है···शादी में मजा नहीं रहता···'

डाक्टर वाला मजाक निराधारित था। लीला सत्य को स्वीकार कर लेती है।

'जब लीला बूढ़ी हो जाएगी, तब कौन-सा बहाना ढूँढोगे ?' मिसेज गुलाटी अपनी जीत से बहुत खुश हैं।

'तुम तो भूगोल पढ़ाती थी माँ ? अब ज्योतिष-शास्त्र पढ़ा रही हो क्या ?'

राज खाली प्याली लिये परेशान हैं। कहाँ रखें ?

गुलाटी साहिब मदद करते है। प्याला राज के हाथ से ले तिपाई पर रख देते हैं।

'दूसरी शादी तो तुमने भी की है शायद ?' लीला चोट पहुँचाने का एक और प्रयत्न करती है।

'डैडी को मरे बीस वर्ष से ऊपर हो गये है···मालूम ही क्या होगा तुम्हें ? तुमने तो बार-बार यह भी कहा है कि डैडी की तुम्हें शक्ल भी नहीं याद···राज भी अपनी बीवी के बारे में यही कहते है ?'

गुलाटी साहिब ने सिगरेट जला ली है।

राज और लीला हार मान गये हैं ।

'मैं ताज़ी चाय लाती हूँ ।' मिसेज़ गुलाटी पायदान यों उठाती हैं; जैसे कोई विशेष बात हुई ही नहीं है ।

'क्या करेगी वह ? तीन बच्चों को पालना आसान नहीं है ।' गुलाटी साहिब सिगरेट का टुकड़ा झाड़ी की ओर फेंकते हैं ।

'मुझे आप लालची समझते हैं ?' कहने के बाद ही लीला को ज्ञात होता है कि वह बेकसूर को झिड़क रही है ।

'यह तो मैंने नहीं सोचा है, लीला ! मैंने यह कभी नहीं सोचा है...'

'आधी तनख्वाह मैं सन्तोष को दूंगा...'

'फिर तुम्हारा खर्च ?'

लीला मुसकुराती है । 'कुछ दिन पहले हम लोगों ने स्ट्राइक किया था—स्टूडेंट्स के स्ट्राइक के कुछ दिन बाद । तनख्वाह बढ गई है । अब हम भी, स्टूडेंट्स भी, परिश्रम का नाटक दिल लगाकर खेल रहे हैं ।'

'सन्तोष ने 'गिफ्ट शौप' खोल ली है । अशोका होटल में...' राज का भाव अब भी अपराधी है ।

'अगर भूखे और नंगे बच्चों की चिन्ता है तो भुला दीजिए...' लीला

ने आवाज़ ऊँची उठा ली है।

मिसेज़ गुलाटी ताजी चाय लेकर आ रही हैं।

गुलाटी साहिब का ध्यान बाहर आ रुकी फ़ियेट की ओर है। 'प्रिया भी आ गई है ! अशोक भी···और बबनू भी !'

पाँच वर्ष का होगा बबनू ! गेट पर चढ़ा हुआ है।

पीछे खड़ी प्रिया मुसकुरा रही है।

गाड़ी पार्क कर, अशोक बबनू को कंधे पर बैठाए बगीचे में आते हैं।

लीला और राज को देखकर पति-पत्नी दुविधा मे पड़ गये है।

'सब पकौड़े मैं खाऊँगा !'

बबनू की बात पर सब खूब जोर से हँसते हैं।

लीला अपना हैंडबैग उठा लेती है।

'अभी से जा रहे हैं दोनों ?' कोरस औपचारिक है।

लीला सिर्फ़ माँ को देखती है।

मिसेज गुलाटी लाल चेहरा दूसरी ओर कर लेती हैं।

'हमारे यहाँ भी आइए······' प्रिया राज की तरफ़ भी आँख उठाती है।

'माँ ने शायद आप दोनों को बात बताई नहीं है···मैं और राज शादी कर रहे हैं।' लीला महसूस करती है कि वह फिर बिना वजह अकड़ रही है।

'मुबारक हो ! मुबारक हो !' फ़िल्मी अदाज से अशोक झेंप मिटाते हैं।

राज ने गेट खोल दिया है।

माँ ताड न लें कि सौतेली लड़की के प्रति उसका यह प्रेम दुखदायक है। लीला का प्रयत्न भीषण है।

तृतीय खण्ड

९

बाल काफी बिखरे हैं। साड़ी अस्त-व्यस्त है, आँखें लाल। सिर भी शायद पीटा है आज गंगा देवी ने! विक्षिप्त लगती हैं।

लाला गनपतराय भी व्याकुल दीखते है। बैठक में इधर से उधर और उधर से इधर पैर पटक रहे है। हाथ पीछे बाँधे हैं। आँखें बार-बार गोल मेज पर पड़ती हैं और नफरत भरकर हट जाती है।

फूलदान मे आज सिर्फ नस्टर्शियम की गोल पत्तियाँ हैं। माली कलाकार है। तीन पन्नों वाली चिट्ठी फूलदान के पास पड़ी है। एक फ़ोटो भी साथ है।

फैक्टरी आज लालाजी के दिमाग से हट गई है।

बैठी हुई आवाज मे घड़ी ने ग्यारह गिन दिये हैं।

संतप्त वातावरण ने इन्दु को मानो छुआ तक नहीं है। माता-पिता विनोद का माध्यम हैं आज!

बगैर आस्तीनों वाला ब्लाउज···आसमानी रंग की शिफौन साड़ी··· ऊँची एड़ी के सैंडल। गुलाबी बिन्दी, गुलाबी लिप्स्टिक···अच्छी लग रही है इन्दु! आँखें बदल गई है शादी के बाद। अहंकार की, आडंबर की···रेखाभर ही है।

'और लाड करती···' लालाजी पांव पटकना बन्द करते हैं। दीवान पर अध-लेटी गंगा देवी के ऊपर झुकते है। 'और लाड़ करतीं, तो साहिबज़ादे का कारनामा इससे बढ़िया होता···' सारी ताक़त आवाज़ में लगी है।

इन्दु नाक सुड़काती है। दोहराए जा रहे हैं बात, डैडी तो !

'साहिबज़ादे को बाहर मैंने भेजा पढ़ने ?' गंगा देवी लालाजी से स्वर मिलाती हैं। 'शादी करा दो···फिर बाहर भेजो···' मैं तो बार-बार कहती थी। सब समझते थे मैं बावली हूँ···'

लालाजी फिर पैर पटकना शुरू करते हैं।

'और साहिबज़ादे की करतूत पर अब मुझ पर टूट पड रहे हैं।' गंगा देवी फ़ोटो की तरफ हाथ उठाती है। 'तुम लोगों की बेवकूफ़ी की वजह से ही महेश ने उस···उस चुड़ैल से शादी की है। चुड़ैल कहीं की···'

गंगा देवी और चिल्लाती हैं। 'बेशर्मी की हद है तुम्हारे साहिबज़ादे की···लिखा है चुड़ैल को ले यहाँ छुट्टियाँ मनाने आएगा। होटल खोल रखा है हमने ?'

'याद है तुमने उस दिन क्या कहा था ?' लालाजी व्यथित हैं। 'तुमने कहा था कि अगर महेश बहू को लेकर साल-दो साल में एक ही बार तुमसे मिलने आए तो तुम खुश हो जाओगी। उस समय भी मुझे लगा था कि विचार बुरा है। अतिथि बनकर ही आएगा अब यहाँ महेश···'

'मैं उस चुड़ैल को पाँव नहीं रखने दूँगी।'

'ढिंढोरा भी पिटवाता कि साहिबज़ादे ने नाक काटी है…'

गंगा देवी हुंकार भरती हैं।

इन्दु मेज़ पर से फोटो उठाकर ध्यानपूर्वक देखती है।

'कारिन…कारिन श्मिड्ट ! अजीब नाम है…'

'क्यों किया महेश ने यह ?' क्षोभ बाँध तोड़ता है। गंगा देवी सुबकना शुरू करती हैं।

'शहादत में है निराला मजा ?' इन्दु माँ को कुछ देर देखती है। 'ख़ैर, महेश ने अपनी आधुनिकता का पूरा परिचय दिया है। और, इस आधुनिकता ने डैडी के कई सपने भंग कर दिए है।'

'क्या मतलब ?' लालाजी और गंगा देवी एक साथ पूछते हैं।

'क्यों ? मतलब साफ नही है ? अगर महेश जगदीश की तरह शादी करता तो सम्धी साहिब फैक्टरी में दो-ढाई लाख लगाते कि नही ? स्याही की नदी में बाढ़ आती कि नही ?'

गंगा देवी उठ बैठती हैं।

'हम लालची नही हैं !' लालाजी पाखंड नहीं रच रहे हैं। शब्द अन्तःकरण से निकल रहे हैं। 'फैमिली अच्छी होनी चाहिए, बस !

पसे की कौन परवा करता है ?'

'कितनी सभ्य फैमिली है जगदीश की ! एक से एक बढ़कर सभ्य ! एक से एक तगड़ी गाली देते हैं। एक से एक ओछा है···और सासजी इतनी सभ्य है कि रोज रात को फिल्मी गीत झूमती-झूमती सुनती है। नही तो सो नही सकती बेचारी ···'

'वह हथनी नाचती है ?' गंगा देवी दुख भूल जाती हैं। खी-खी करना शुरू करती हैं।

'अगर एक बुढ़िया फिल्मी गीत सुनकर झूमती भी है तो मतलब यह तो नही है कि उसमे···उसमे सभ्यता का अभाव है।' लालाजी दोनों औरतों की चंचलता से परेशान है। 'मुझे लगता है अब महेश यहाँ आएगा ही नही···'

'ऐसी बात मुँह से मत निकालो !' गंगा देवी की सुबकियाँ फिर से धमकी देती है।

'हिन्दुस्तान मे रहना चाहता ही कौन है ?'

इन्दु की बात किसी को पसन्द नही आती।

'जननी जन्मभूमिश्च···' लालाजी आरम्भ करते है।

'बुढापे में बेशक भारत स्वर्ग से भी प्रिय होता है···' इन्दु निर्दयी है।

'इतने सारे हिप्पी जो इधर-उधर घूमते हैं···सबका दिमाग खराब है क्या ?' लालाजी को बेटी पर गुस्सा आता है ।

'यहीं रहना पड़ जाय तब देखें कितने हिप्पी यहाँ टिकते हैं···सज़ा है यहाँ रहना तो···पूछ लो किसी से भी जो बाहर हो आया है ।'

बरामदे में पाँव की आहट होती है ।

गंगा देवी बाथरूम की ओर भागती हैं ।

लीला है । भारी झोला कालीन पर पटकती है । कन्धा सहलाती है कुछ देर तक । कन्धे की अकड़ कम होती है । अब जाकर बैठक की हवा के तनाव का आभास होता है । अजीब चुप्पी है । आँखें गोल मेज़ पर पड़ी चिट्ठी और फोटो पर पड़ती हैं ।

इसी क्षण गंगा देवी बाथरूम से आती हैं ।

'बात क्या है ?' लीला गंगा देवी का सूजा हुआ चेहरा देखकर घबराती है ।

'हमारे यहाँ क्रन्दन-सम्मेलन है···' गंगा देवी मुसकुरा ही पड़ती हैं ।

'महेश मेमटी ले आया है ।' इन्दु को अब हँसी आ जाती है । 'शोक-सभा का आयोजन हुआ था । मैं मेरठ से भागी आई, मम्मी का टेलीफोन आया तो···तुम भी शामिल हो जाओ···'

लालाजी की हँसी में विरक्ति है ।

'चिट्ठी को अनाथ की तरह पड़ा पाकर मैं समझ तो गई थी कि कुछ गड़बड़ हो गई है··'

लीला मेज़ पर जाकर फोटो उठा लेती है। 'खूबसूरत है मेमटी···' अब हँसी दुगुनी हो जाती है। 'बताइए, आंटी! आपकी जान-पहचान का कोई भी नाती, पोता, असली गोरा है? सुनहरी बालो वाला, नीली आँखों वाला? कितने खूबसूरत होगे पता है महेश के बच्चे!'

लालाजी भी अब हँसते हैं।

'तुम कब शादी कर रही हो?' गंगा देवी फिर गंभीर हो गई हैं।

'आज नही कहना कि मैं एक सती-साध्वी स्त्री का घर उजाड़ रही हूँ?'

रामपूजन चाय लेकर आ गया है। लीला को देखते ही एक और प्याली लेने दौड़ता है।

'मैंने यह बात कभी नही कही है!'

'सिर्फ अन्दाज़ से जताया है···कहा कभी नही है।'

गंगा देवी चुपचाप चाय बनाती हैं। 'मिठाई खाओगी लीला?'

'झेंप रही हैं आप तो! मुंह लाल हो गया है!'

इन्दु और लालाजी हँसते हैं।

गंगा देवी अब भी भावहीन हैं।

'नया घर कैसा है लीला ?' लालाजी पत्नी की मदद करते है।

अभी फनिश नहीं किया है, अकल ··आप, लोगों को मालूम है चन्द्रा की बहिन ने क्या किया है ? असली बात तो मैं भूल ही चली थी ··'

'कर ली होगी किसी अमरीकी हब्शी से शादी और क्या !' गंगा देवी उत्सुक हैं। 'अय्यंगार साहिब ने तो वजीफा दिलाया था न लड़की को ?'

'इन्दिरा ने महेश से भी बुरा काम किया है···और मुझसे भी बुरा।. मुसलमान से.शादी कर ली है।'

'तुम्हारा मतलब, अमरीका जाकर भी ··'

'पाकिस्तानी ही फँसा···' लीला लालाजी की बात काटती है।

'इससे अच्छा तो खन्ना था···'

'उसके बाद कोई गिल भी तो था ?' इन्दु चिन्तित हैं। 'कि ग्रोवर था ?'

'ग्रोवर तो बिलकुल आखीर मे आया था···इसके पहले एक माथुर भी

था…'

'खैर ··अब इन्दिरा अय्यगार इन्दिरा मुहम्मद रजा हो गई है।'

'निकल गई न अय्यंगार साहिब की हेकड़ी ! जब देखो ब्राह्मणत्व की शेखी मारते थे…'

'तुमको बताया किसने ? गंगा देवी भी खुश ही है यह नई खबर सुनकर।

'पद्मा, कमला आई थी दाखिले के लिए। सीनियर कैम्ब्रिज पास कर लिया है दोनों ने…' लीला फिर से मेज के पास जा फ़ोटो उठा लेती है। 'आप लोगों को मालूम है कि जलन किस बात की होती है मुझे ? महेश की शादी ··इन्दिरा की शादी…यह शादियाँ बनी रही तो समझो दोनो ने ठीक कदम लिया था…और टूट गई तो मतलब है गलती दोनों की थी। यह तो नहीं कोई कह सकता कि किसी ने ग़लती की, और उस ग़लती को सुधारने के लिए कोई और बीच में आया है…' लीला एकाएक चुप हो जाती है।

'शादी का इरादा पक्का है, लीला ?' गंगा देवी बिलकुल पास खड़ी हैं।

'मुझको नहीं मालूम, आंटी…'

'इतने आलू खाओगी क्या ?' गंगा देवी ने लीला का झोला उठा लिया है। 'तुम 'इंडिया टाइम्स' फोन कर देना। महेश की शादी का खाना है। राज यहीं खायेंगे, मेरठ भी फोन कर देना। महेश ने

जर्मन लड़की से वैदिक रीति से शादी की है । अपनी बहिनों को भी तार दे देना । खूब अमीर है महेश के ससुराल वाले···सब-कुछ खोलकर कहना···और मैं बेटे की शादी की खुशी मे जाकर कपड़े तो बदल लूं···बाल भी संवारती हूं···' गंगा देवी बैठक की दहलीज़ पर खड़ी हंस रही हैं। हिस्टीरिया का कोई निशान नहीं है हंसी मे !

२

श्रीमान् ए० एस० आर० अय्यंगार मे भारी परिवर्तन आ गया है। तोंद घट गई है। चन्दा मामा चिड़चिड़े भी लगते हैं, रोग-ग्रसित भी।

श्रीमती अय्यंगार का विशेष रूपान्तर नही हुआ है। आँखें जरा धँस-सी गई हैं, बस।

पद्मा और कमला आजकल चुप हैं। ट्रांजिस्टर बहुत धीरे बजाती हैं। कालिज की पढाई मे मन और तन लगा दिये हैं दोनों ने।

मुहम्मद रजा, जिस पर अय्यंगार परिवार की आँख भी शायद नहीं पड़ेगी, भूत की तरह एक-एक सदस्य पर चढा है।

× × ×

डाइनिंग-टेबुल विराट् लगता है। आठ कुर्सियो मे चार खाली हैं।

'चन्द्रा ने तार दी है···' भाव नीरव है। अय्यगार साहिब ने हरी गोली खा ली है।

'मालूम है मुझे···बता चुके हो···' भाव और नीरव है। श्रीमती अय्यंगार ने फ्रिज से पान निकाल लिये हैं।

बच्चे आशंकित हो गये हैं। डैडी की भँवें चढ़ गई है।

पति के माथे की तरफ अभी तक श्रीमती अय्यंगार का ध्यान नहीं गया है।

'मैंने खूब सारे रेकाड्‌र्स मँगवाए हैं···' पद्मा ट्रांज़िस्टर की सुई सरकाती है।

'मैंने भी···' कमला कंधे झटकाकर लय पकड़ती है।

'बन्द करो उस आफ़त के बक्से को!' डैडी गरजते हैं।

दहलीज़ पर ऊँघता ह्विस्की दुम दबाकर भागता है।

बटलर के हाथ से चाकू फिसलकर टेबुल पर शोर मचाता है।

'निकल जाओ यहाँ से! बहिनचोद चाकू भी नहीं उठा सकता!'

अब बटलर दुम दबाकर भागता है।

'गाली नहीं देनी चाहिए··' श्रीमती अय्यंगार शान्त है। 'यहीं रहेगी न, चन्द्रा?'

'यहाँ पाँव नहीं रखने दूँगा उसे, समझी!' अय्यंगार साहिब अब पत्नी को ध्यानपूर्वक देखते हैं। 'क्यों? तुम्हें तो सब-कुछ मालूम है। यही कहा था न, अभी-अभी!'

पद्मा और कमला बाहर निकल जाते हैं। डाइनिंग रूम के दैनिक दृश्य से जी ऊब गया है।

'मुझे ठीक-ठीक थोड़े ही मालूम था…' श्रीमती अय्यंगार शान्ति की स्थापना पर तुली हुई हैं। 'कोई छः महीने बाद फिर बदली हो जायेगी न राघवन् की ? यहीं रह जाते दोनो…'

'दोनों जायें जहन्नुम…' शब्द अस्पष्ट हैं। पान अभी-अभी मुँह में गया है। अय्यंगार साहिब ने सिर पीछे लुढ़का दिया है। 'अगर वह दोनों अपना कर्त्तव्य निभाते, तो इन्दिरा को वह मुसलमान नहीं भगा-कर ले जाता !'

'वह दोनो न्यूयार्क मे थे। इन्दिरा की शादी कैलिफोर्निया मे हुई थी…' श्रीमती अय्यंगार का भाव और शान्त है।

'जब इन्दिरा कैलिफोर्निया में थी, तो यह दोनो न्यूयार्क मे क्या कर रहे थे ?

'अंट-संट मत बको !'

'चुप रहो !' विदेश मन्त्रालय के प्रथम सेक्रेटरी बीवी पर बरसते हैं।

अब बोलना बेकार है। श्रीमती अय्यंगार पान की जुगाली करती हैं।

'तुम्हें अन्दाज ही नही हो सकता कि विदेश मन्त्रालय के अधिकारी के लिए पाकिस्तानी दामाद कितनी कड़ी सजा है…'

'भेजा इस्तेमाल करना था न···जवान लड़की को अकेले अमरीका नही भेजते।' श्रीमती अय्यंगार ने अब आवाज़ उठा ली है। बटलर बँगले के पीछे सर्वेन्ट्स क्वार्टर चला गया है। ब्राह्मण रसोइया झगड़े से वाकिफ़ है।

'भेजा इस्तेमाल नही करता हूँ, तभी तो प्रथम सेक्रेटरी हूँ विदेश मन्त्रालय का।'

'मन्त्री तो कोई है ही नही, शायद ?'

'मन्त्री गधे होते हैं। और अब वाला खच्चर है।'

'तुम्हें क्यो नही मन्त्री नियुक्त करती सरकार फिर ? तुमको तो प्रधानमन्त्री चुना जाना चाहिए ! भारत के सबसे निराले प्रधानमन्त्री माने जाओगे ··'

'ठीक है···क्या बात कही है देवीजी ने···' अय्यंगार साहिब शब्द चुन-चुनकर वार करते हैं। 'परनाले मे लोटते पिल्ले को खिला-पिला कर जो मोटा करता है वह खच्चर तो है ही · खच्चर से भी गया-गुजरा है वह···'

'कौन है परनाले मे लोटता पिल्ला ? मेरे पिताजी···'

'चोर था, फरेबी था···दगाबाज···वायदा किया पहाड़ का और नाक मे लौंग अटकाकर भगा दिया छोकरी को···'

'तो उनको कैसे मालूम होता कि तुम लालची हो ?'

'लालची मैं हूँ ? और सेल लगते ही पिस्सू किसे लगते है ?'

श्रीमती अय्यंगार का रंग उड़ जाता है। सँभलने में क्षण-भर लग जाता है। 'पति जब तुम जैसा खच्चर हो तो सेल के अलावा रह क्या जाता है ? तुम्हारी दो प्रेयसियाँ हैं...एक तुम स्वयं और दूसरे तुम्हारे मिनिस्टर साहिब, जिसे अब तुम खच्चर कहते हो। शुक्र करो कि तुम्हारा यह प्रेम...यह सरकारी प्रेम...बरसों से फलता-फूलता आ रहा है !' पर्दा ज़ोर से खैंचती श्रीमती अय्यंगार कमरे के बाहर निकल जाती हैं।

× × ×

सन्नाटा भयंकर है।

अय्यंगार साहिब थोड़ी देर बाद डाइनिंग रूम की खिड़की के बाहर झांकते हैं।

बिजली के दो ग्लोब बगीचे को मरियल रोशनी में धो रहे हैं। सड़क से कार्पोरेशन की मरकुरी लैंप वृक्षों की चोटियाँ नीला रँगती हैं। अनगिनत पतंगे अँधेरे का चक्कर लगाकर फिर ग्लोब से भिड़ते हैं।

कमरे में आहट होती है। अय्यंगार साहिब पीछे मुड़कर देखते हैं।

श्रीमती अय्यंगार साइडबोर्ड से ट्रैंक्विलाइज़र निकाल रही हैं।

डाइनिंग टेबुल के ऊपर दो जोड़ी आँखें टकराती हैं।

मुंह में गोली डालकर श्रीमती अय्यंगार तीर की तरह कमरे

से निकल जाती हैं।

× × ×

अब अय्यंगार साहिब बैठक में आ गये है। दरवाज़े से होती हुई निगाह गेट तक दौड़ लगाती है।

चौकीदार बीडी फूंक रहा है। पास खडा ह्विस्की दुम हिला रहा है। कभी-कभी एक-दो भागती गाडियों को देखकर टें-टें करता है।

निगाह फिर बैठक के अन्दर आ जाती है। सोफा-सेट पर कुछ देर बिछकर, साँची के मुख्य द्वार की सैर करते-करते पीतल की गाँठें गिनना शुरू करती है। अट्ठारह है। पूरी डेढ दर्जन।

साँची के मुख्य द्वार के ऊपर अजन्ता प्रिंट है···खराब है क्या? धुंधली? नही। चशमा वदलना है।

अय्यंगार साहिब जेब से रूमाल निकालकर चशमा रगड़ते है।

अब लैम्प-शेड के हाथी साफ दीखते हैं। चौदह हैं। पूरे चौदह! किमोनो पहने जापानी सुन्दरियाँ···अंग्रेज़ी चरवाहिन···आइफल टावर···

कैबिनट का सिर। सिर पर चढी फ़ोटो। फ्रेम चढ़ाये, फ्रेम उतारे··· वगल से झाँकती, पीछे से हमला करती···

सारी तसवीरें अगर दीवार की तरफ मुंह कर लें तो कोई साला दाँत नही दिखायेगा। न कोई मिनिस्टर, न कोई···न कोई प्रथम

सेक्रेटरी ··असली साला तो विदेश मन्त्रालय का प्रथम सेक्रेटरी है··· साला ! चूतिया है ! चूतिया ! आम्बूर श्रीनिवासन् राजम् अय्यंगार ···भारत सरकार का सबसे बड़ा चूतिया···

मुसकान बाईं ओर कुछ ज्यादा खिच गई है। होंठ काफी देर बाद ही सधते हैं अय्यंगार साहिब के।

कैबिनेट के सिर से फिसलकर निगाह कैबिनेट में कैद शराब की शीशियों के बीच मँडराती है। खरीद डाले थे सब-के-सब ! स्वीडन मे, डेनमार्क मे, पैरिस मे···शीशियाँ खरीदती गई, खरीदती गई··· और लेस खरीद डाली थी स्विट्ज़रलैंड मे। मीलों लेस खरीद डाली। *चुगी मारी, और फिर लेस बेच डाली दिल्ली आकर। महीनो* चलाया था लेस का कारोबार···

एक व्यक्ति······केवल एक व्यक्ति इस दूकानदारी पर हँसा था। इन्दिरा···ओछापन है, इन्दिरा के मुंह पर कहा था। और किसी की हिम्मत नही पड़ी थी, माँ को यह कहने की।

और अब ? इन्दिरा को···उनकी इन्दिरा को···कोई पाकिस्तानी भगाकर ले गया है। गला दबायेंगे वह उस हरामज़ादे का···करे तो सही गरदन आगे। दबाये रखेंगे गला···खूब देर तक। ज़बान बाहर निकल आयेगी हरामज़ादे की। और फिर मरेगा वह पाकिस्तानी तड़प-तड़पकर। गला दबाते जाओ तो निकल आती है न जबान बाहर ? सब यही तो कहते थे उन दिनों !

उन दिनों ? किन दिनों ?

तीस बरस हो गये होगे···नही चालीस बरस पहले की बात है। अरे ! चालीस बरस से भी पहले की बात है यह तो ! ताता चारी होता था···सुब्बण्ण, मुत्तुस्वामी···कृष्णस्वामी···

सांची के मुख्य-द्वार पर गडी पीतल की गाँठे अपनी चमक खो देती हैं। धुंधलापन आकार बदलता है। गाँठें काँसे के भारी फूल बन गई हैं।

× × ×

आम्बूर का प्रसिद्ध आंडाल् का मन्दिर ! मन्दिर-द्वार को सजाते काँसे के फूल। गाँव को बांधता ताड़ और नारियल का झालर। मन्दिर, तालाब, तालाब के आगे पाठशाला।

अग्रहारम्—उन दिनों ब्राह्मण ही रहते थे अग्रहारम् में। अग्रहारम् का आखिरी मकान। छोटा, टूटा-फूटा, आम और कटहल से घिरा। सडक पार करते ही चेट्टियार वीथि शुरू हो जाती थी।

अग्रहारम् के पीछे से बहती हुई कावेरी। गरमियो में सिसकती, बरसात मे फुंकारती दक्षिण गंगा···

राजम् की माँ विधवा है। सफेद साड़ी सिर को ढकती है। आडाल् के मन्दिर का घंटा बजने के बहुत पहले रुक्मिणी अम्माल् अग्रहारम् के दूसरे सिरे में बसे होटल मे गायब हो जाती है। अय्यर स्वभाव के रूखे है, पर हिसाब के पक्के।

भिगोया हुआ चावल और उड़द पीसते-पीसते कमर टूटती है। बच्चे को सोता छोड़ना पड़ता है। बासी भात और लस्सी कोने मे धरी

है। राजम् वहीं खाकर स्कूल जाएगा।

विधवा जीवन से विरक्त नहीं हैं। होना चाहती भी नहीं। इकलौता लड़का राजम् होनहार है। चकित कर दिया है, पहले आम्बूर प्राइमरी स्कूल के अध्यापकों को और बाद में कुम्भकोणम् के हाई स्कूल के अध्यापकों को।

कुम्भकोणम् का खर्च जेंजुइट मिशन सँभालता है।

रुक्मिणी अम्माल् को एक चिन्ता है। लड़का क्रिश्चियन हो गया तो?

पर राजम् हठी है। कुम्भकोणम् ही जाएगा पढ़ने।

विजय के गर्व में मस्त होली क्रौस मिशन स्कूल में कदम रखते ही राजम् की धौंस चलती है। कुम्भकोणम् में भी रुक्मिणी अम्माल् इडली के लिए चावल और उड़द पीसती है। मेहनत अब कुछ कम करनी पड़ती है। राजम् का वज़ीफा भी है।

मैट्रिक में फर्स्ट और बाद में कॉलिज ऐंट्रेंस एक्ज़ाम में भी फर्स्ट। जेंजुइट मिशन ने वज़ीफा बढ़ा दिया। क्रिश्चियन बनने पर ज़ोर बिलकुल नहीं दिया। विधवा इतनी प्रभावित हुई कि अपने पूजा-स्थल में एक क्रौस भी टाँग दिया। भलमे-सितारे से झिलमिलाते वैष्णव सन्त और साथ में सूली। फादर सैक्वेइरास को हँसी आ गई थी। इस वातावरण में क्रिश्चियन बनने का अथवा ब्राह्मण बने रहने का··· दोनों प्रस्ताव हास्यास्पद थे।

उस बरस ग्रेजुएट्स की लिस्ट मे भी राजम् का नाम सबसे पहले है । अगला कदम जाहिर ही है । आई० सी० एस० । इसी समय रुक्मिणी अम्माल् बिजली गिराती हैं । राजम को विलायत भेजने की शक्ति उनमें नही है ।

प्रोविंशियल सिविल सर्विस ही लिखा थी भाग्य मे ! राजम् अय्यगार माँ को क्षमा नही कर सकते थे । मकान बिक सकता था । पर विधवा को अजीब लगाव था स्व० श्री निवासन् अय्यंगार के जोड़े ईंट-पत्थरों से ।

शुक्रदशा थी । राजम् ज्यों ही पी० सी० एस० में आ गये, दूसरा महायुद्ध छिडा । विदेशी सरकार को राशन की सूझी । कंट्रोलर ऑफ सिविल सप्लाइज़ का नियुक्त होना अनिवार्य था । राजम् के अलावा इस पद को दक्षिण मे कौन सँभाल सकता था ?

रुक्मिणी अम्माल् बेटे के साथ मद्रास रहने लगी । पहली बार अंग्रेजों को अपनी आँखों से देखा । नीली आंखों से देखते कैसे हैं यह लोग ? फादर सैंक्वेइरास पुर्तगाली थे । रंग बिस्कुटी, आँखें काली ।

लड़की वाले अब कंट्रोलर साहिब के घर चक्कर लगाने लगे । फोटो समेत आते थे बेचारे । जन्म-पत्री तो बाद में मिलाना हुआ । कितनी तसवीरें वापिस भेजी राजम् अय्यंगार ने ! सबसे खूबसूरत वेदवल्ली निकली । फोटो पर भरोसा किया जा सकता था । कंट्रोलर साहिब ने अपने एक क्लर्क को ट्रिची भेजा था, लड़की को देख आने । पिता वकील थे । सम्पत्ति थी । सन्तति कुछ अधिक···फिर भी···

वकील साहिब जन्म-पत्री लेकर आये । वर के कुल की जाँच-पड़ताल

भी करनी ही थी।

'तलाश वर की है या सास की ?' विधवा रुक्मिणी अम्माल् का सवाल सीधा था।

वकील साहिब तात्पर्य नहीं समझ पाये।

'मैं बरसों आम्बूर में और उसके बाद कुम्भकोणम् में चावल और उड़द पीसती थी। इस बात से आपको शर्म है तो वर और ढूंढिये अपनी लडकी के लिए···'

माँ की स्वीकारोक्ति से कन्ट्रोलर साहिब बहुत शर्मिन्दा हुए ! आई० सी० एस० में जो अड़चन पैदा की थी···वह तो इसके मुकाबिले मे हल्की-सी चपत थी।

वकील साहिब बुद्धिमान् थे। छः लड़कियाँ और ब्याहनी थी। वेदवल्ली और राघवन् का विवाहोत्सव धूमधाम से मनाया गया। दहेज न देने का विचार विवाह-बन्धन के बाद ही प्रकट होने दिया वकील साहिब ने।

वैवाहिक आनन्द का भोग फिल्मी ढंग से ही हो सकता था। इस गुलाबी दुनिया मे विधवा सास का कोई काम नहीं था। गृह-प्रवेश के बाद वेदवल्ली ने दूसरा क़दम जल्दी ही उठाया। रुक्मिणी अम्माल् को आम्बूर वापिस चलता किया।

विधवा ने आपत्ति नही की।

विधवा की वापसी को कोई चार वर्ष हो चुके थे। वेदवल्ली दूसरी बार गर्भवती थी। चन्द्रा अभी बच्ची थी।

आधी रात। भयंकर सूनापन लिये थी वह रात। तारवाला आया। रुक्मिणी अम्माल् का देहान्त। बहती कावेरी ने लाश आम्बूर से तीन मील आगे जाकर फेंक दी थी।

तार वाले ने खाकी पतलून घुटनों तक चढा ली थी। ऊपर छाता तानें रखा था। साईकिल पानी में घसीटते-घसीटते बँगले में प्रवेश हुआ था। भयंकर थी उस साल बरसात !

वेदवल्ली घबराई। बुढ़िया ने आत्महत्या तो नहीं कर ली ?

अपराधी भाव बढा। गर्भवती को भयंकर सपने आने लगे। कोई स्त्री कावेरी के प्रवाह में हाथ-पैर मार रही है। चीख को पानी दबा रहा है। आँखे डर से फैली हुई है।

सपना वास्तविकता से विशेष सम्बन्ध नहीं रखता था। रुक्मिणी अम्माल् के केश श्रीनिवासन अय्यंगार के देहान्त के तीसरे दिन ही कटवा दिए थे। कावेरी में छटपटाती स्त्री के बाल काले नाग की तरह नंगी पीठ पर लेट रहे थे।

नीद हराम हो गई वेदवल्ली की। आग्रह पर अय्यंगार साहिब ने पंडितों को बुलाया। हैदराबाद से पीर साहिब भी आए। भगवान् ने, या अल्लाह ने दया की। सपने बन्द हुए।

चार महीने बाद इन्दिरा हुई।

अय्यंगार साहिब को किसी भी बात पर विश्वास नही था। पर जब बच्ची को हाथ मे उठाया तो माँ का चेहरा साफ-साफ दीखा।

वही हठीली आँखें, वही पतले होंठ, विद्रोह से भरे।

वेदवल्ली को भी यही आभास हुआ। वही आँखें, वही होंठ।

हठीली थी माँ भी। आम्बूर जब पहली बार रुपये भेजे थे, तो वापिस भेज दिये थे माँ ने…

'शादी हो गई है। साड़ी-वाड़ी भेजने का कष्ट न करें। मुझको और रज़ा को…पूरा नाम मुहम्मद रज़ा है। लाहौर का है—इन बातो मे कोई विश्वास नही है…' यह थी चिट्ठी। कैलिफोर्निया से आई थी।

अमरीका जाने के पहले वरदराजन् से शादी की बात चली थी। 'मुझे नही शादी करनी है उस तेल के कनस्तर से। वह इण्डियन ओइल वाला यहाँ आया तो, व्हिस्की को भिड़ा दूँगी।'

× × ×

'बैठक में रेलगाडी छूटी है कोई!' पद्मा फुसफुसाती है।

कमला की नीद भी खुल गई है।

दोनों का कमरा बैठक की परली तरफ है। टेलीफोन वाली गैलरी के आगे।

'रेलगाड़ी नही है···' कमला अपने विस्तरे मे उठ बैठी है। 'ह्विस्की पिछाड़ी भौंक रहा है।' हँसी रोकनी मुश्किल हो रही है।

'पिछाड़ी भौंकना क्या होता है?' पद्मा भी बहिन को देखकर हँसती है।

बत्ती जगा दी है। चारपाइयों के अतिरिक्त फ़र्नीचर बिल्ट-इन हैं, अमरीकी। कमरा बड़ा मालूम होता है। दीवारो पर पौप-स्टार और फिल्म-स्टार खिले हुए हैं।

'भौं-भौं की बजाय औंभ-औंभ करना···समझी?'

दोनों ने मुँह पर हाथ रख लिये हैं। हँसी छूटती जा रही है।

अब बैठक में शायद ममी आ गई हैं। आवाज़ से यही लगता है।

दबे पाँव बहिनें गैलरी पार करती हैं। पर्दे की आड से झाँकने से सब-कुछ दिखाई देता है।

अय्यंगार साहिब सोफे पर पड़े हुए है। सुबकियाँ भीमकाय शरीर को झँझोड़ रही हैं।

श्रीमती अय्यंगार ड्रैसिंग गाउन मे लिपटी, पति के पास बैठी हैं। होठ काँप रहे हैं। पर रुलाई अब भी शुरू नही हुई है।

३

टीन-एज फैशन के असूलों का उमा ने पूरा पालन किया है। बैल-बॉटम्स्, कमरबन्द और बड़ी-बडी बालियां !

डैडी को सूट-केस पैक करते देख रही है। आधे घण्टे से भँवें चढ़ी हैं।

अनीता डैडी के पास ही बैठी है।

रमेश बाहर क्रिकेट खेल रहा है।

'डैडी सचमुच नहीं जा रहे हैं न ?' अनीता बीसों बार सवाल कर चुकी है।

राज जवाब टालते आ रहे हैं।

उमा छोटी बहिन को घृणा और क्षोभ से देखती है।

राज परेशान है।

'मैं बैठ जाती हूँ ऊपर !' अनीता के बैठते ही सूटकेस बन्द हो जाता है।

उमा भी मुसकुरा देती है।

राज अनीता को गोद में उठा लेते हैं।

'जाने के पहले खा लेना।' हल्दी और गर्म मसाले की गन्ध उड़ाती सन्तोष कमरे में आती है। अनीता को राज की गोद में देखकर चेहरे का भाव थोड़ा-सा बदलता है।

'खाने-वाने के लिए टाइम नहीं होगा शायद···'

'आज छोले बने हैं, डैडी ! हमेशा आप इतने सारे खाते हैं···' अनीता गोद मे जमकर बैठती है।

'जाने के पहले पसन्द की चीज ही खा लेते···' सन्तोष कमरे से चली जाती है।

उमा माँ को जाते देखती है। फिर राज की तरफ आँखें उठाती है।

राज दृढ़तापूर्वक दूसरी तरफ देखते हैं।

'डैडी के साथ मैं भी जा रही हूँ···' अनीता अपने को आश्वासन देती है।

'पगली कहीं की ! डैडी अपनी नई दुल्हन के पास जा रहे है !' उमा बच्ची को फटकारती है। 'डैडी हम सबसे घृणा करते हैं, तभी दूसरी शादी कर ली है।'

'उमा ! चुप रहो !' राज ने पहली बार आवाज उठाई है ।

उमा सहम जाती है ।

अनीता रोने की तैयारी करती है ।

'उमा !' रसोई से सन्तोष की आवाज आती है । 'टेबुल लगा देना जरा !'

'वहीं जाकर क्यों नहीं खाते डैडी ?' ऊधम मचाती कमरे से निकल जाती है उमा ।

दरवाजे के पास शेविंग-किट पड़ा है राज का । उसे लात मारकर उमा गुस्सा उतारती है ।

'उमा को हमेशा गुस्सा आता है ।' अनीता राज से और चिपटती है । 'मैं भी साथ चलती हूँ, डैडी ! मैं अकेली नहीं रहना चाहती यहाँ···' अब आग्रह में जोर नहीं है । आज हठ फ़िज़ूल है । समझ गई है शायद !

'किताबें अभी तक पैक नहीं की हैं, तुमने···' सन्तोष फिर रसोई की गन्ध उड़ाती कमरे में आती है । दीवारों से सटी बुकशेल्व्स् को कुछ देर देखती है । 'पढ़ाई शायद कुछ दिन बन्द रहेगी···'

'फिर कभी आऊँगा किताबों के लिए···' राज अनीता का लाल रिबन छेड़ देते हैं ।

'यहाँ फिर नहीं आओगे तुम···' सन्तोष की आवाज, अन्दाज स्थिर

है। फिर एकदम संयम खो बैठती है। अनीता को राज से छुड़ाने की कोशिश करती है।

बच्चा विद्रोह करता है।

'बच्चों को देखने जब जी चाहे आऊँगा।' राज का मुँह सफेद है।

'प्यार उमड रहा है शायद ! और जब रमेश को काली खाँसी हुई थी तब तो शायद प्यार दबाया था ! चले जाते थे रोज शाम को प्रेस-क्लब ! फिर नाइट ड्यूटी लगवा ली। जब उमा को मोतिया हुआ था, तब दिल्ली के बाहर चले गए थे कान्फ्रेंस के बहाने ! और अनीता को हस्पताल देखने आए थे शायद एक बार ! अब ढेर सारा प्यार कहाँ से उमड रहा है ?' क्षण-भर सोच में डूबती है सन्तोष। 'कि लीला देवी ने जोर दिया है कि बच्चो को जरूर प्यार करो ?'

'लीला को मत घसीटो बीच मे।'

अनीता सिसकियाँ भर रही है।

उमा फिर कमरे में आ गई है। यह लड़ाई देखने वाली है।

'क्यो ? क्यो न घसीटूँ उसे ?' सन्तोष अब गला फाड रही है। 'वह नही घसोटेगी अगली को ? या शायद अगली की नौबत ही नहीं आए। चूस लेगी सब-कुछ बंगालन !'

'मर्दानगी तो तुम्हारे होते हुए भी जिन्दा है···लीला के होते हुए बात

इतनी टेढ़ी नहीं होगी…'

उमा सब-कुछ समझ रही है। पर आज दोनों को इसकी परवाह नहीं है।

'तुम-जैसे पत्थर के साथ भी स्त्रीत्व जागृत ही है मेरा…'

'पत्थर तुम्हारे घर से हट जायेगा। खुशियाँ मनाओ…'

बाहर बैठक में शायद रमेश आ गया है।

धड़ाम्-से सोफे पर गिरा है। क्रिकेट-बैट भी पटक दी है फ़र्श पर।

सब बैठक की तरफ दौड़ते हैं।

'मैं अब नहीं जाऊँगा खेलने…सब बदतमीज़ हैं!' रमेश शब्द रुक-रुककर ही निकाल पाता है। आँसू भी तो रोकने हैं।

'क्या हो गया है?' सन्तोष बेटे के बाल सहलाती है।

'सब लोग डैडी को गाली दे रहे है।' अब रोना बेरोक जारी है।

'उमा को शायद इसी इशारे का इन्तजार था। वह भी रो पड़ती है।

'एक-एक हरामजादे की मरम्मत होनी चाहिए…' राज दाँत पीसते हैं।

'मैं डैडी के साथ जा रही हूँ।' अनीता न जाने क्या सोचती हुई एक बार फिर जोर लगाती है।

'अनीता भी चली जाएगी तो ममी क्या करेगी ?' सन्तोष अब बच्ची के आगे बैठ गई है। 'उमा कॉलिज चली जायेगी। रमेश बोर्डिंग-स्कूल चला जाएगा। जब मैं दूकान से वापिस आऊँगी तो मुझसे बात भी करने को कोई नही होगा···' शैली ही नाटकीय है। सन्तोष का प्यार सच्चा है। 'यहीं रहोगी न, ममी के पास ?'

'हाँ···' अनीता रोती है।

उमा कमरे से बाहर निकल गई है।

रमेश ने आँसू रोक लिये हैं।

'खाना खा ही लेता हूँ···' राज व्यावहारिकता दिखाते हैं।

× × ×

एक ही सवाल सबके मन में उठता है। पांचवीं कुर्सी पर डैडी के चले जाने के बाद कौन बैठेगा ? कि दीवार से लगा दी जाएगी कुर्सी ?

रमेश और चावल लेता है। अनीता खाने का खेल रचती है। उमा महीनों से वजन घटा रही है। चावल के दाने चुगती है।

'आता है उसे खाना बनाना ?' सन्तोष की आवाज में द्वेष नहीं है खास।

'हाँ...'

उमा और रमेश ध्यानपूर्वक वार्तालाप सुन रहे है ।

'क्या यह सच है कि जिसकी शादी उससे तय हुई थी, उसको उसकी माँ ने फाँस लिया है ? इसीलिए वह मेरा घर बरबाद कर रही है ?'

बच्चे एकाग्रचित्त हैं । साँस भी रोक ली है ।

'देखो, यह शादी बरसो पहले टूट चुकी थी । इसकी जिम्मेदार लीला नही है ।'

राज को अपने ऊपर बेहद गुस्सा आ रहा है । इस फिल्मी डायलॉग मे क्यो भाग ले रहा है वह ?

'बात तो ठीक है । दुख इसी बात का है कि ढेर सारे बच्चे पैदा कर लिये हैं...'

'मैं मर जाती तो अच्छा होता ! होते सब खुश !' उमा कमरे से भाग निकलती है ।

हाथ बगैर धोए राज और सन्तोष उमा के पीछे जाते हैं ।

वही पुराना दृश्य पुनरावृत्त होने की धमकी देता है ।

किसी अज्ञात शक्ति से प्रेरित रमेश टैक्सी के लिए फोन करता है ।

कमरे में फिर शान्ति स्थापित होती है ।

हाथ धो, सूटकेस उठा, राज बरामदे की तरफ़ जाते है ।

सन्तोष शेविंग-किट पकड़ाती है ।

× × ×

ड्राइवर ट्रैफिक मे प्रवेश होने का अवसर खोजता है ।

शीशा खोल राज अपना फ्लैट एक बार फिर देखते है ।

उमा ने मुँह मे रूमाल ठूँस लिया है । रमेश ने अपने को संयत रखा है । सन्तोष की गोद में अनीता है । टैक्सी की तरफ रोते-रोते हाथ हिला रही है ।

बाकी सात फ्लैटों के बरामदे भरे हैं । पड़ोसी नाटक के सबसे उत्तेजक अंग का पूरा स्वाद ले रहे हैं ।

टैक्सी अब ट्रैफिक में खो गई है ।

राज ने सिर आगे कर लिया है । गरदन अकड़ गई है । आराम आने पर एक इच्छा प्रबल होती जाती है । दबाने का प्रयत्न बेकार है । इच्छा भूताकार हो गई है ।···मर नहीं सकती लीला ?

चतुर्थ खण्ड

९
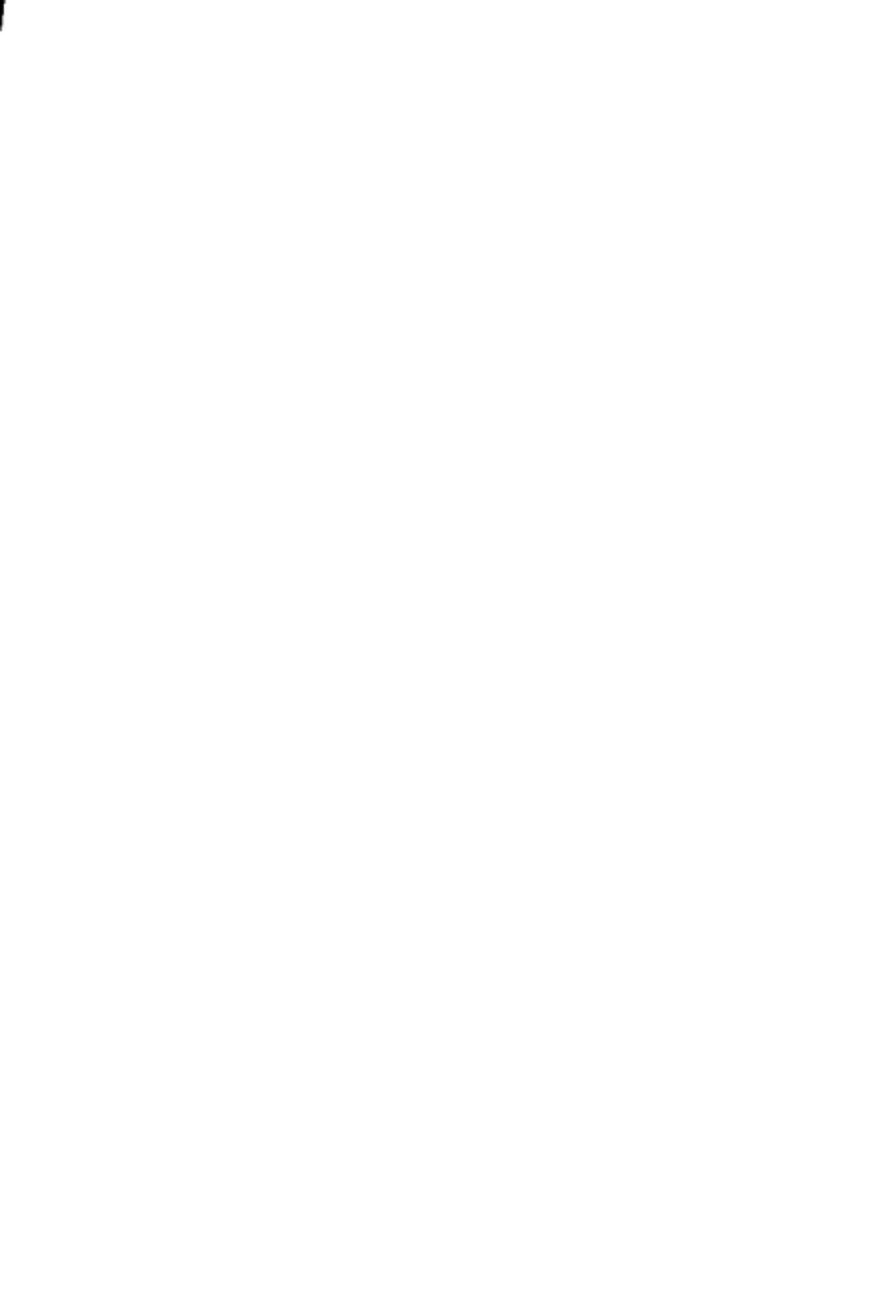
बच्चे का कमरा योरोपियन ढंग से सजाया गया है। प्लास्टिक के मिकी माउज़ दीवारों पर टँगे हैं। कपड़ों की अलमारी, मेज़ और कुर्सियाँ, सब गुलाबी रंग की हैं। गद्देदार पालना बाँस का है, योरोपियन। मच्छरदानी भी योरोपियन, गुलाबी।

खिड़की के पर्दे हिन्दुस्तानी हैं। धूप कमरे के बाहर ही रहती है।

पालने मे सोता बच्चा भी हिन्दुस्तानी है। कोई डेढ महीने का।

पालने के पास ही दीवान पर इन्दु लेटी हुई है।

मुख और शरीर भारी हो गए हैं। काजल इस खूबी से लगाया है कि बन्द आँखें भी नखरे करती हैं। आसमानी रंग की नाइलौन साडी पहन रखी है इन्दु ने। ब्लाउज आस्तीनो के बगैर। गला भी खूब खुला है। रंग खिल गया है इन्दु का। क्लैंजिग मिल्क का प्रयोग अपरिमित लगता है।

कमरे के बाहर ही गंगा देवी आया को फटकार रही है। आया का मातम अभ्यस्त है।

पोर्च में स्कूटर कान फाड़ता है।

इन्दु उठ पड़ती है। एक बार घड़ी की तरफ देखती है, फिर सोते बच्चे की ओर। इसके बाद ही कमरे के बाहर आती है।

बैठक में लीला है। साथ में राज भी।

'बच्चा कैसा है देखने में ?' इन्दु को देखते ही लीला पूछती है।

'मेरा हाल नहीं पूछोगी क्या ?' इन्दु होंठ निकालती है।

गंगा देवी भी अब आ गई हैं। वेज रंग की रा सिल्क साड़ी, मैच करता ब्लाउज। बाल सँवरे हुए हैं। चेहरे पर से झुर्रियाँ हटा दी गई हैं।

काया-पल्टी राज को चौंकाती है।

लीला बच्चे के कमरे में चली गई है। 'थैंक गौड़ ! तुम्हारी तरह ही है।' बाहर आते ही गंगा देवी पर आँखें पड़ती हैं। अपने कपड़ों पर से आज पहली बार लीला को संकोच होता है।

'मुझको भी सुनयना के फीचर्स बहुत पसन्द हैं।'

लीला और राज इन्दु को ग़ौर से देखते हैं। मजाक नहीं है। इन्दु गंभीर है।

'और बहुत इंटेलिजेंट है पता है सुनयना···इतनी सेंसिटिव है कि क्या बताऊँ···'

राज बड़े लालाजी की तसवीर में तल्लीन हो जाते है।

गंगा देवी सबको देखकर मुसकुराती जाती हैं।

'आजकल यह अध्ययन हो रहा है ?' लीला ढेर-सारी पत्रिकाओं की ओर इशारा करती है। विषय योरोपियन और अमरीकी बच्चों का पालन-पोषण है।

'हाँ ! चन्द्रा ने भेजी थी···और महेश और कारिन ने भी···इतने स्वीट हैं वह लोग ! और पता है राघवन् के एक कज़िन हैं··· युगोस्लाविया मे हमारी मुलाकात हुई उनसे···इतने स्वीट हैं···और बच्चे इतने···'

'मधुमेह हो जाएगा इन्दु, सुनते-सुनते !' लीला हँसती है।

राज बेकार लीला को चेतावनी देने का प्रयत्न करते है।

सुनयना रोना शुरू करती है।

'फीडिंग टाइम तो नही है अब···' इन्दु माथा सिकोड़ती है।

'गीली हो गई होगी···' राज हरम के-से वातावरण से अब कुछ कम परेशान हैं।

लीला हँस पड़ती है।

'आ···या···!' इन्दु भद्दी आवाज़ निकालती है।

पाँव घसीटती बच्चे के कमरे से आया आती है।

'बेबी ने सू-सू किया है···तुम ध्यान क्यों नहीं देती ?'

बुड़बुड़ाती आया फिर पाँव घसीटती है।

'हरामज़ादी जब देखो सोई पड़ी होती है। इसको निकाल देना है मम्मी !' इन्दु फिर होंठ निकालती है।

आया ने बच्चे का नैपकिन बदल दिया है।

राज बच्चा अपने हाथ में ले लेते हैं। सधे हाथ बच्चे को झुलाते हैं।

'बिल्लू···बिल्लू ! कुक्कू ! कुक्कू ! सुनयना को राज अंकल बौत-बौत पछन्द हैं···' इन्दु और गंगा देवी जुगलबन्दी कसते हैं।

लीला विस्मित है।

राज ने बच्चे के ऊपर सिर झुका लिया है। हँसी छिपाने का और कोई उपाय नहीं है।

पास खड़ी इन्दु बच्ची को निहार रही है। साड़ी का पल्ला फिसलकर राज के कान पर अटक गया है।

× × ×

बोगेनीवल्या को सहलाती स्टूडी बेकर पोर्च पर आ खड़ी होती है।

'अंकल ! आप क्या भारत-योरोप मैत्री संघ के अध्यक्ष चुने गए है ?'

नेवी ब्लू सूट में लालाजी ज़रा-सा मुसकुरा देते हैं।

गंगा देवी दीवान के पीछे छिपा बटन दबाती है।

वर्दी पहने नौजवान वैठक मे प्रवेश करता है। गगा देवी चाय का हुक्म देती हैं।

'सुनयना का फीडिंग-टाइम हो गया है। आ ··या ··!'

'रामपूजन कहां गया ?' लीला सवाल कर ही बैठती है।

आया बच्ची अन्दर ले जाती है।

'निकाल दिया उस गधे को मैंने···' लालाजी गंगा देवी के पास दीवान पर बैठ गए हैं। 'आजकल हमारे यहां विदेशी मेहमान आया-जाया करते हैं···महेश के लोग भी आते-जाते रहते हैं ·· कौलेबोरेशन कर रहे है महेश के लोग, जमुना इंक फैक्टरी के साथ···'

'मैं तो आप लोगों को महेश के लोग समझती थी···' लीला की हँसी रहस्यपूर्ण है।

'जगदीश भी फैक्टरी फरीदाबाद शिफ्ट कर लेंगे···' लालाजी जारी रखते हैं।

'मैं बता रही थी न राघवन् के कजिन के बारे में, जो हमारी एम्बेसी मे यूगोस्लाविया मे हैं ? उन्होंने बहुत मदद की थी हमारी··· जगदीश ने भी उनके ब्रदर-इन-लॉ को अपनी फैक्टरी का लायजान अफसर···'

'इन्दु का मकान महारानी बाग मे बन ही जाएगा अब महीने-डेढ महीने मे···इतना सारा सामान आ रहा है बाहर से ! एयर कंडीशनर, रैफ्रिजरेटर, बाथरूम फिटिंग्स···' गगा देवी फूले नही समाती है ।

'सरकार की लायसेन्सिग पालिसी से हम-जैसे छोटे-मोटे उद्योगपति बहुत तरक्की कर रहे हैं···'

'समाजवाद जिन्दाबाद, अंकल !'

'मुझे तो अब समाजवाद में पक्का विश्वास है···हाँ, देखो अपनी फैक्टरी को ही ले लो । रेक्रियेशन-क्लब खोल दिया है हमने । खूब मजे मे बिताते हैं फ्री-टाइम हमारे नौकर । महँगाई भी बढा दी है मैंने । इनकम-टैक्स मे बडा फर्क पड़ गया है···हाँ, कुछ दिन पहले मत्री महोदय से मुलाकात हुई मेरी । फोटो भी खिचवाई थी हमने···उन्होने कहा कि अगर और उद्योगपति भी मेरी तरह समाजवाद मे विश्वास दिखाएँ तो देश की तरक्की बडी आसानी से हो सकती है···'

'आ···या··· !' इन्दु बच्चे के कमरे की तरफ फिर चली जाती है ।

गंगा देवी उबासी लेती हैं।

लालाजी का भाषण अभी पूरा नहीं हुआ है।

'गोली खा ली ?' गंगा देवी सोई-सोई याद दिलाती हैं।

लालाजी झटपट जैकेट की जेब से पीली गोलियों की शीशी निकालते हैं। गंगा देवी डाइनिंग-रूम से पानी ले आती है।

'शिकायत थी'''बदहज़मी की। महेश ने जर्मनी से गोलियाँ भेजी हैं...'

इन्दु फिर बैठक में आ गई है। लिप्स्टिक ताज़ी की है। बाल भी फिर से सँवारे हैं।

राज बच्चों के पालन-पोषण के अमरीकी तरीकों को रट रहे हैं। खामोशी का तनाव असहनीय है।

'अच्छा, हम दोनों चलते हैं...' लीला अधीर हो उठी है।

'खाना खा लेते दोनों...' गंगा देवी दीवान के पीछे छिपा हुआ बटन दबाने के लिए तैयार है।

'नहीं। कुछ जरूरी शॉपिंग करनी है...'

लीला का यह पहला झूठ राज को चकित करता है।

'टैक्सी बुलवा दूं ? गाड़ी की मुझे ज़रूरत है···'

'नहीं, नहीं । तकल्लुफ कर रहे हैं, आप तो !'

अब लीला राज से चकित है ।

× × ×

कंपाउंड सँवरा दीखता है । एक की जगह दो माली काम पर जुटे हैं !

चौकीदार में कोई परिवर्तन नहीं आया है । वही अर्थहीन मुसकुराहट, वही मैली-कुचैली वर्दी ।

मोड पर आहूजा टी-कार्नर बस गया है । जूक-बॉक्स की निराली रौनक है । टेलीविज़न भी है ।'

एस्प्रेसो मशीन के पीछे पतली मूंछों वाला लड़का खड़ा-खड़ा सीटी बजा रहा है । उभरे होंठ शक्ल पहचानने नहीं देते ।

कॉफी का आर्डर होता है । मशीन शोर मचाती है ।

कोने के टेबुल पर बैठे लीला और राज चौंकते हैं ।

एस्प्रेसो मशीन रामपूजन चला रहा है । कितना स्मार्ट हो गया है ! नहीं ! लालाजी का नया नौकर रामपूजन से कहीं ज्यादा स्मार्ट है ।

२

'हलो चन्द्रा !' सफेद मिनी-स्कर्ट मे उर्सूला वाइमर दरवाज़े पर खड़ी है। अत्यावश्यक अंगों को छोड़ गोरा बदन नंगा है। चप्पल सफेद हैं। गले में चमेली का हार है।

'ऊ···शी··· !' चन्द्रा आ लिपटती है। ऊदा सारोग और लेस बाजू निराला है। बाल कटा लिये हैं चन्द्रा ने। चशमा चेहरे से गायब है।

'आओ, पाल ! आओ ऊशी !' राघवन् ऊशी का कपोल चूमते हैं। एक हाथ अथिति की कमर कसता है।

पाल वाइमर ऐंठते-ऐंठते अन्दर आते हैं।

नीला सुब्रह्मण्यम् अन्दर ही है। पोस्ट बाक्स के रंग की साडी, ब्लाउज़ और सैंडल ! गँवारिन लगती है। परिचय की प्रतीक्षा काफ़ी कराते हैं बाकी चार !

'ओ, हाँ। मैं तो भूल ही गई। यह नीला है। न्यूयोर्क जाएगी। इंडियन एम्बेसी में हैं, सुब्रा। थोड़ी देर बाद ही आएँगे···'

बटलर ट्रे आगे करता है। कैनेप्स है।

पाल मुँह फेर लेता है। ऊशी एक की बजाय दो कैनेप्स लेती है।

'अरे तुम मत खाओ, नीला!' राघवन् हँसते हैं। 'इसमें अंडा है। तुम्हारे लिए पकौड़े बनवाए हैं।'

दूसरा बटलर पकौड़े ले आया है। ट्रे में फलों का रस भी है।

'एत्मादी भी आ गए हैं!' चन्द्रा सुरैया एत्मादी से लिपटती है। लिपटी-लिपटी अहमद एत्मादी से हाथ मिलाती है।

'लन्दन से कब आए? तीन हफ्ते हो गए? मुझे बताया भी नहीं? मैं नहीं बात करती जाओ तुमसे!'

सुरैया एत्मादी और ज़ोर से भींचती हैं चन्द्रा को। 'आ···ऊ! आ···ऊ···च!' काँच की सारी चूड़ियाँ टूटती हैं। हाथ में चोट भी आ गई है सुरैया के।

राघवन् मरहम-पट्टी में लग जाते हैं।

सुरैया एत्मादी का स्कर्ट कुछ ऊँचा हो गया है। मोज़ों के सस्पेंडर्स साफ नज़र आते हैं।

नौकर चूड़ियों के टुकड़े उठाना शुरू करते हैं।

अहमद एत्मादी ने जिन ले ली है। ध्यान नीला की तरफ खिंच गया है।

'यू० एन० ओ० ?' मुसकान सधी है।

'नहीं...।' नीला झेंपती है।

'आई० एल० ओ० ?' मुसकान फीकी पड़ गई है।

'इंडियन फोरेन सर्विस ...' नीला माफ़ी मांगती है।

'ओह !' चेहरा सख्त हो गया है एत्मादी साहिब का। बटलर की तरफ़ इशारा करते हैं।

'किसी को पता ही नहीं चला है कि न्यूचर्च आ गए हैं ! हलो, जोन ! हलो, डिक !' राघवन् फिर चूमते हैं।

'जोन न्यूचर्च ने साड़ी पहनी है। अपने बालों को मैच करती, सुनहरी।

न्यूचर्च नीला की तरफ सिर झटका देते हैं, एत्मादी से हाथ मिलाते हैं और सुरैया एत्मादी के भद्दे, मोटे मोजे में से मढे जांघों को गौर से देखते हैं। स्कर्ट और ऊपर उठ गया है।

पाल वाइमर डिक न्यूचर्च से भी विशेष बातचीत नहीं करते।

'चां...द !' आवाज़ का उतार-चढाव अपने ही ढंग का है। 'मैं... हूं ! साथ मे बिल्लू भी...' मिन्नू मनसुखानी चन्द्रा से लिपटती है। 'भारी हो गई हो...यहां और यहां !'

चन्द्रा चीखती है। मिन्नू मनमुखानी उसका वक्ष दबाने पर तुली है।

'नौटी ! नौटी !' सब औरतें चिल्लाती हैं।

दहलीज़ पर खड़े सुब्रह्मण्यम् कुछ देर तक तमाशा देखते हैं। सबसे ऊँचे स्वर में नीला चिल्ला रही है।

गोरी, नंगी टाँगें ध्यान खींचती हैं। सुब्रह्मण्यम् मस्त हैं।

धीरे-धीरे औरतों की चीख बन्द होती है।

बटलर कॉक्टेल्स ट्रे फिर आगे करता है।

नीला हिम्मत करती है। मोज़ल की शीशी उठा, गट-गट पी जाती है। मुँह बनाती है। उल्टी होने ही वाली है शायद। आँखें बाथरूम की खोज में दौड़ती-दौड़ती सुब्रह्मण्यम् पर अटकती हैं।

सुब्रह्मण्यम् अब जोन न्यूचर्च से सटे हुए हैं।

नीला दोनों की ओर बढ़ती है। मोज़ल का नशा उतर चुका है।

'अरे ! लीला है। भई सुनो, यह लीला है···और यह राज ' चन्द्रा परिचय कराती है।

'आई० एल० ओ० ?' मिन्नू राज के पास आ गई है।

'एन० ओ०···'

'एन० ए० टी० ओ० ? आजकल हिन्दुस्तानी भी आ गए हैं नैटो में ?'

एन० ओ०···मतलब 'नो' नही ···' राज घबरा गए है। मिन्नू मनमुखानी ने अपना भारी बायाँ वक्ष राज के बाजू पर धर दिया है।

'ओहो ! आप तो जर्नलिस्ट है। चाँद ने बात बताई थी···तलाक दे दी है न आपने पहली बीवी को ? बिल्लू ने भी···गँवार है। बेचारी···अब बच्चों के कपड़े बनाती है···' मिन्नू वक्ष हिलाती है। 'बिल्लू ने मुझको भी कोई बच्चा नही दिया है···पहली को भी नही दे सका···'

बटलर छोटे-छोटे कबाब की ट्रे आगे करता है।

राज फुर्ती दिखाते है। कबाबों की तरफ झपटकर सीधे लीला के पास पहुँचते है।

'आई० एल० ओ० ?' बिल्लू मनमुखानी हाथ में जिन की शीशी पकड़े आँखें जरा-सी बन्द करे लीला को देख रहे है।

'वह पढाती है···हिन्दी···है न ?' नीला सुब्रह्मण्यम् अब यहाँ आ मिली है।

'आप तो शायद नही पढाती ? बच्चे पैदा करती है···है न ? दो है या तीन ? निरोध इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है ?' लीला का गुस्सा एकाएक उतर जाता है। 'मेरे छः बच्चे है। हमारा गुजारा

कपूर साहिब की तनख्वाह में नही होता था···बेचारे दिन-भर काम करते है···'इंडिया टाइम्स' में···फिर भी वही डेढ़ सौ···'

'क्लर्क होगे बेचारे !' नीला को तरस आ जाता है।

'क्लर्क कहाँ जी···चपरासी हूँ। यहाँ राघवन् साहिब से दफ्तरी की नौकरी माँगने आया था···उन्होने कहा, चलो कॉक्टेलस् पी लो··· कबाब भी खिलाए ··मूँगफली खायेगी, लीला ? चटपटे हैं···खूब मजेदार !'

नीला और सुब्रह्मण्यम् घबराते है।

'मोजल में डुबाकर खाओ मूँगफली···और मजेदार हो जाती हैं···' लीला बिल्लू से बातचीत जारी रखती है। डिक न्यूचर्च इसी तरफ आ रहे हैं।

राज अब राघवन् के पास जा खड़े होते हैं।

मिन्नू पाल वाइमर से सट रही है।

डिक न्यूचर्च लीला की साड़ी की तारीफ कर रहे हैं।

लीला टूटी-फूटी अंग्रेजी मे बात कर, फूहड़ हँसी हँस रही है।

'चाँ···द !' राघवन् कूजते हैं।

'हाँ, डार्लिंग !' चन्द्रा अहमद एतमादी को बाहुपाश मे बाँधे

चहकती है।

'मैं थोड़ी देर मे फिल्म चालू कर दूंगा, डार्लिंग !'

'ओ० के० डार्लिंग !'

कुछ ही देर मे कमरा काफी खाली हो जाता है।

बटलर भी गायब हो गये है।

चन्द्रा ने शराब की शीशियाँ ट्रे मे इकट्ठी कर ली है। एक सैंडविच कालीन पर किसी ने कुचल दी है।

सैंडविच को ट्रे मे रखकर, चन्द्रा कालीन से दाग छुडाने मे लग गई है।

'भई, हम दोनो जा रहे है…'

"बैठक के सन्नाटे को लीला की आवाज़ चीरती है।

हड़बड़ाकर चन्द्रा उठ खडी होती है। 'शीशियाँ हैं…उठा रही थी…'

'शीशियाँ उठानी चाहिए…नही तो टूट जायेंगी…' राज का भाव दार्शनिक है।

मैंने आपको देखा ही नही।' चन्द्रा गर्दन घुमाती है। कांटैक्ट लेन्स

एक तरफ से धुंधला गया है। चन्द्रा आँखें काफ़ी देर तक टिम-टिमाती है।

रा सिल्क के पर्दे, रा सिल्क के गाव तकिये। दीवारों पर डा विंची के प्रिंट। इधर-उधर दक्षिण भारत की मूर्तियाँ, काँसे की, पीतल की, पत्थर की···

अजायबघर है···लीला बात कह नहीं पाती।

'हम भी तुम्हारा घर देखने आयेंगे। इन्दु भी कह रही थी···'

'आज आईं नहीं ?'

'नहीं। महेश और कारिन आये हुए हैं। उनके यहाँ डिनर है···हम लोग देर से जायेंगे···'

'हम लोगों को बुलाया ही नहीं है···' लीला हँस पड़ती है। 'भूल गई होगी···'

अन्दर के कमरे में हँसी के गुब्बारे छूटते हैं।

'वही फिल्म है जिसमें सुरैया की साड़ी खुल जाती है···अच्छा, गुड बाई !' चन्द्रा बेचैन है।

पहली बार लीला को चन्द्रा के आगे हार माननी पड़ती है। इसी हार को मानने के लिए उसने इतना शृंगार किया था आज ? हल्दी काचीपुरम् की साड़ी, लाल मणि का नैक्लेस, ब्रेसलेट, टाप्स···

राज ने सिगरेट सुलगा ली है।

कुक्कु घड़ी चौंकाती है।

'हमें जाना चाहिए···' लीला राज के साथ जल्दी से बाहर निकल पड़ती है।

× × ×

सड़क पर ट्रैफिक का नाम नहीं। घने वृक्ष रोशनी को धीमा करते हैं।

ऊपर आकाशगंगा फैली हुई है।

'पत्थर बने हुए हो ! इतना खूबसूरत लग रहा है सब-कुछ···और तुम हो कि भाई बने हो···'

'खजुराहो और कोणार्क की पैरोडी देख ली है न ?' नहीं भरा जी ?' राज की हँसी संक्रामक है।

हत्त ! सड़कों में भी कोई चूमता है ? फ्लैट ले रखा है कि नहीं ? पांच सौ किराया देते हैं साहिब ! हम तो सब-कुछ फ्लैट मे ही करते हैं···'

३

चालीस फ़्लैट्स का ब्लाक है। ड्राइंग-कम-डाइनिंगरूम, बैडरूम, गेस्टरूम, किचन ··

बैलकनी के आगे आल इंडिया रेडियो के संचारण-स्तम्भ ! सामने खड़ा पीतल बौना लगता है।

लीला ने चाय की ताजी प्याली बना दी है।

'सत्यानाश हो गया है···' राज की भँवें बालों तक चढ़ गई हैं। हाथ में अखबार है।

'चीनी ज्यादा डल गई है ?' लीला चिन्तित दीखती है।

'प्रूफरीडर ने सम्पादकीय का सत्यानाश कर दिया है।'

'सम्पादकीय पढ़ा थोड़े ही जाता है ! वह तो सिर्फ लिखा जाता है। और 'इंडिया टाइम्स' के तो सिर्फ विवाह-विज्ञापन पढ़े जाते हैं। कल भी मज़ेदार थे। कम-से-कम छः तो तुमको सूट कर जाते।'

राज के सिर के ऐन पीछे दोनों नग्न स्त्रियाँ हाथ में तौलिये लिये खड़ी हैं। फ्रेम में धूल की तह जमी हुई है। लीला की आँखें फ्रेम से हटकर रेफ्रिजरेटर पर पड़ती हैं। वही धूल की तह !

'वह जो आती है···ज्ञानमति···उस वेचारी को धूल हटाने में बड़ी तकलीफ होती है। बाकी कुछ भी करा लो वेचारी से···बस धूल का नाम न लो ··'

'नौकरानियां होती ही है ऐसी···सम्पादकीय अच्छा-खासा था···'

'मत करो, प्लीज !'

'क्या मत करूँ ?'

'उबासी मत लो !'

उबासी का पहला 'ओ' कट जाता है।

'शुक्र है, हँसना याद है अभी···' लीला ने ट्रे मे जूठी प्यालियाँ रख दी है। टोस्ट के टुकड़े प्लेट में इकट्ठे कर, उन्हें बैल्कनी मे छितरा देती है।

'आज भी आ गया है···कौआ है···।' लीला कुछ देर देखती रहती है।

कौआ इधर-उधर देखता है। धीरे-धीरे टुकड़ों की ओर फुदकता है। उड़ जाने का बहाना भी जारी ही है।

'क्या हाल है कपूर परिवार का ?' लीला पीपल की पत्तियाँ गिनती है। कुछेक संचारण-स्तम्भ के पास काँप रहे है।

'ठीक ही है···' राज ने अखबार टेबुल पर रख दिया है।

'पता है, अगर मैं चाहूँ तो युद्ध-काण्ड रच सकती हूँ ?'

'कैसे ?···उबासी रोकनी नही चाहिए। हार्ट फेल हो जाता है···' राज हँसते हैं।

'दोपहर का खाना वहाँ खाने से रोक सकती हूँ। रोज़ सिर का दर्द ला सकती हूँ···पेट-दर्द···कमर-दर्द···पीठ-दर्द···बहुत स्कोप है।' लीला गीले हाथ जीन्स में पोछती किचन से बाहर आती है। 'तौलिये गीले थे···तुम्हें एतराज़ तो नही है ?'

'तुम तो दोपहर का खाना खाती ही नही हो ··और मैं···'

'बच्चो से मिल लेता हूँ···यही है न बात ?'

लीला पीपल और सचारण-स्तम्भ के बहुत आगे पहुँच गई है। 'सच बताओ, इस शादी से किसी को भी फायदा हुआ है ?' वापिस बैठक आने में देर लगती है।

'शादी फायदे के लिए की जाती है ?' राज का माथा सिकुड गया है। 'लगता है धोखा हुआ है !'

'नही। तुम्हे ?'

'नही। लगता है मैंने धोखा दिया है। काफी भारी है यह भाव। लदी है मुझ पर, पता है ?'

ऐसा लगता है कि बीवी को इस तरह छोड़ना सही था ? बच्चों के बारे में भी यही सोचते हो ?' शीला सोच में पड़ गई है।

सामने दीवाल है। साड़ी की चादर राख के रंग की है। दरी लाल है। कुछ ही दूरी में रखे हुए फूलदान में लाल ऐस्टर खिल रहे हैं।

'इतनी निर्दिष्ट नहीं है यह भावना···'

'और जब तलाक से पहले दोनों शादियाँ चला रहे थे, तो कोई वेदना नहीं होती थी···'

'मत करो फिजूल की बात !' राज गरजते हैं।

'डराने की कोशिश कर रहे हो ?' शीला की टकटकी राज को बाँधती है।

'तुम यह जताना चाहती हो कि मैंने एक मासूम बच्ची के साथ जबरदस्ती की है ?' राज की आवाज अब भी ऊँची है।

'मासूम मैं शायद कभी नहीं थी···और बचपन तो याद भी नहीं है मुझे···वह बीत चुका था। जानना चाहते हो, सबसे पहले मैं किसके साथ···'

'मुझे तुम्हारे अतीत में कोई दिलचस्पी नहीं है।'

'सुन लो फिर भी···महेश था। पहला एक्सपेरिमेंट महेश के साथ था।

उसके बाद·· सुनना है आगे ?'

'नहीं ।' राज लीला के पास आ गये हैं।

'यह तो इन्किलाब हो रहा है····' लीला धीरे से हँस देती है ।

'क्या मतलब ?'

'तुम तो हाथ भी बिस्तर में ही लगाते हो । हिन्दू हो न ? मैथुन और प्रेम-सम्बन्धी छोटे-मोटे इशारे भी श्लोक के पाठ के साथ ही होने चाहिए । दायें से अधिक बायाँ हाथ प्रयोग मे लाना चाहिए··· मैथुन पाप है, जब तक सन्तान की इच्छा से प्रेरित न हो···ठीक है न ?'

'पडित कोकाराम ?'

'हाँ···काफी ध्यान लगाकर अध्ययन किया है।···अभी तक नाश्ते की बू आ रही है ! जाओ, 'दाँत साफ करके आओ !'

'दाँत साफ कर लिये हैं !' राज सीधे खडे हो जाते है । 'अनीता भी सुबह यही कहती थी····'

'कालिज मे लोग मुझे अजीब तरह देखते है । जैसे मैं कोई नरभक्षी हूँ । सबको फ़िक्र है कि मैं उनके आदमी उडा ले जाऊँगी····'

कालबेल क्षण-भर बजती है। बन्द दरवाजे के नीचे से डाक अन्दर फिसलती है।

पहली चिट्ठी लीला खोलती है। विमेन्स एसोसियेशन की तरफ से है। तलाक के विभिन्न पहलुओं पर लीला का भाषण सुनना चाहती हैं सदस्याएँ।

राज के हाथ में अनीता की चिट्ठी है। 'डियर डैडी...' अंग्रेजी लिपि मोटी है। शब्द दाहिनी ओर झुके हैं। 'तुम कैसे हो? हम सब ठीक हैं। मैंने तुम्हारे लिए तसवीर बनाई है।'

केले का पेड़ नीचे है। पेड़ जितनी ही बड़ी चिड़िया आँगन में बैठी है।

'उमा ने पता लिखा है। उसकी भी लिखावट बदल गई है।' राज के हाथ से लिफाफा छूट जाता है।

लीला ने तीसरी चिट्ठी खोल ली है।

मारे हँसी के बुरा हाल हो जाता है। [illegible] [illegible] है। [illegible] रीति से विवाह-संस्कार कब होगा?

४

'चिट्ठी का जवाब नहीं दिया डैडी ?'

सवाल प्रतीक्षित ही था। राज जैकेट की जेब से बन्द लिफाफा निकालते हैं।

'पोस्टमैन लायेगा, तभी लूंगी ·।' अनीता राज के पास बैठी मचलती है।

डाइनिंग-टेबल नये घर में पुरानी जगह पर ही है, किचन के साथ। सन्तोष भी पुरानी जगह पर ही बैठी है, किचन की तरफ पीठ किये। खाना खत्म हो चुका है। विशनदेई रोज की तरह आँखों से तरेर चुकी है। रोज की तरह राज की हँसी भी दब चुकी है। उमा डैडी को गौर से देख रही है, रोज की तरह आक्रमण का अवसर ढूंढती।

पुराने डाइनिंग-रूम के मैंटल-शेल्फ़ पर कई फोटो थे। नये मैंटल-शेल्फ पर सिर्फ़ रमेश की तसवीर है। बढ़ी जुल्फ कटवा दी है···या कटवानी पड़ी थी ? जाने से पहले रमेश मिलने क्यों नहीं आया था ? या मिलने नहीं दिया ?

फ़ोटो के पास बहुत बड़ा कप है। क्यों नहीं छपवाते 'इंडिया टाइम्स' में तसवीर ? सन्तोष की कर्कश माँग। क्या अजीब आदमी है ! इकलौता बेटा बैस्ट ऑलराउंड स्पोर्ट्समैन है, और बाप तसवीर भी

नहीं छपवाता ! जनक अंकल ने मुँह से पाइप निकाल लिया है। आज फैल्ट हैट पहना ही नहीं है···

'मैं देहरादून जा रहा हूँ, रमेश से मिलने···'

'अकेले, या···?' सन्तोष का द्वेष-भरा संकेत।

'मैं भी जाऊँगी, डैडी के साथ···।'

'फिर होम-वर्क कौन करेगा ?' उमा झिड़कती है। लड़ाई की इच्छा अभिव्यक्त होती है। 'तुझे भी होस्टल में डाल देंगे हम। और मम्मी भी रह सकती है होस्टल में···सुना है एक नया होस्टल खुलने वाला है, जहाँ वही औरतें जिनके पति···'

'एक और होस्टल भी खुलने वाला है जहाँ मुँहफट लड़कियों की मरम्मत होगी···।' राज बात काटते हैं।

उमा का चेहरा तमतमाता है।

अनीता का ध्यान कोका-कोला पर केन्द्रित है।

सन्तोष की खिलखिलाहट चौंकाती है।

बहुत दिनों बाद इस तरह हँस रही है सन्तोष। कब हँसी थी इस तरह सबसे पहले ? बरसों पहले···पं० ओंकारनाथ के रिकार्ड के ऊपर। ननँदिया···कैसे···नीर···भरूँ···बेतहाशा हँसी थी।

'यह ननदिया ! ! ! ! क्या है ?' नकल उतारी थी फटी आवाज में। 'बूस्टर पम्प लगवा ले ननदिया ! ! ! मैं सस्ती दिला दूंगा···' जनक अंकल ने मुंह से पाइप निकाल लिया था।

जी चाहा था रेडियोग्राम सिर पर पटक दूं।

सन्तोष ने उस रात भी मनाने की रस्म अदा की थी। आसमानी नाइलोन की नाइटी···हांगकांग से आई थी। ब्रेजियर उसी में सिली हुई थी। लेस की थी।···पैंटीज़ थी। जनक अंकल लाये थे।

जनक अकल को डैडी से प्यार था। पार्टनर भी थे दोनों। जब डैडी की डेथ हुई थी, एग्रर कम्पनी ने डेढ़ लाख दिया था। जनक अंकल के कहने पर मम्मी ने झट मकान बना लिया था। अब पाँच लाख मे बिक सकती है। वैसे किराया तो करौल बाग में भी अच्छा मिल जाता है। लड़का तो अमरीका सेटल हो गया है। सन्तोष का भी समझो, मकान···

'तुम्हारे जनक अंकल अब डैडी की बजाय मम्मी के पार्टनर हो गये हैं···।' वार ज़हरीला था।

'तुम बहुत गन्दे हो।' सन्तोष हँस पडी थी। जनक अंकल बहुत दिनों से इलाज करवा रहे हैं। फर वह कुछ भी नही सकते हैं···खी···खी···खी !

'कुछ-कुछ माँगें हीजडों की भी होती हैं······।' राज ने बात बढ़ाई थी। 'जनक अंकल जैसे हीजड़े के लिए मम्मी जैसी बुढ़िया

काफ़ी है…"

गुस्से का वहाना किया था सन्तोष ने। फिल्मी गुस्सा। वासना को उकसाने वाले, भड़काने वाले, नखरों के साथ।

झल्लाहट, सांस की तेज़ी। चढ़ती-उतरती सांस। तृप्ति। अधखुली नींद।

अस्त-व्यस्त पड़ी है सन्तोष पास ही। लिप्स्टिक होंठो के बाहर खिंच गई है। क्यों लगाती है यह लिप्स्टिक? कडवी लगती है। 'लेटस्ट शेड है। मैक्स-फैक्टर की…जनक अकल लाये थे…हौंगकौंग से…'

अनिल से जनक अंकल की ज्यादा बनती है। अनिल से सन्तोष की भी ज्यादा बनती है। मिलनसार है, अनिल बिजनेस करता है। कलकत्ते सेटल हो गया है। बीवी से भी खूब प्यार है। सबके सामने 'डार्लिंग' कहता है। सिर्फ बीवी जी ने मुंह बिचका लिया था। 'अनिल ते अनिल, ओदी नूं वी 'डारलिंग' आखदी है।'

सबसे बड़ा भाई सबसे होशियार है। कुलदीप कर्नल है। ससुराल मे भी खूब आदर है। सालियां जान देती है। रिटायर होने पर एकस्पोर्ट करेगा। जनक अंकल ने सलाह दे दी है।

और मैं? सब-कुछ तो है। बच्चे, दो-दो बीवियां। एक से तलाक ले ली है…दूसरी के लिए। दिन में बच्चोवाली बीवी के यहां जाता हूँ, और रात को बगैर बच्चोंवाली बीवी के यहां …

'शुरू से पछतावा था, और फिर भी तीन बच्चे हो गये?' यही

कहा था न लीला की मां ने ? सुन लो, देवी जी ! जब पति-पत्नी का आपसी रिश्ता मैथुन तक ही सीमित है, तब तीन नहीं, तीस बच्चे भी हो सकते हैं। सुन लो कान खोलकर, देवीजी !

जनक अंकल और मम्मी रोज शाम आते थे। 'मोतीमहल' से खाना साथ आ जाता था। ताश रोज खेला जाता था। आठ फ्लैट थे··· सबसे ज्यादा शोर हमारे ही यहां मचता था।

बीबी जी लुधियाने वापिस जल्द ही चली गई थी। पापाजी को तीनों लड़कों से नफ़रत थी। वह पहले ही लुधियाने चले गये थे। शतरंज का शौक था, और फरीद की बोलियां गुनगुनाते थे। रमेश से कुछ-कुछ प्यार था बस।

'डैडी ! पता है हम लोग स्कूल में क्या सीख रहे है आजकल ? एक छोटी चिड़िया, बैठी डार पर···!'

'हां, और तुम्हारी उम्र की जब उमा थी, तब कुछ और गाती थी। काले-काले बादल आए, घनघोर वर्षा ले आए। और भी तो बहुत-कुछ सीखती थी उमा। एक आदमी, पांच बच्चों में तीन सेब किस तरह बांटेगा ? रो पड़ी थी उमा इस सवाल का जवाब ढूंढते-ढूंढते···

'तकलीफ होती थी उन दिनों ! क्यों दिमाग खराब करते हैं यह लोग बच्चों का ?

भूगोल की चहक
इतिहास की जँभाई

गणित का दु स्वप्न
पहियों वाला कनस्तर
नटी लडकियाँ···

'रेखाचित्र' के छपने पर 'इण्डिया टाइम्स' मे ठहाके पर ठहाके, 'कविता है, यार ! आधुनिक कवि है, राजकपूर ।' 'काफी हुनर है, राज साहिब मे !' जनक अंकल ने पाइप मुँह मे ठूँस लिया है। 'डैडी की तसवीर किताब के आखिर मे क्यो है!?' उमा की पहेली ।

'आपकी लीला खास अच्छे लेक्चर्स नही देती है···'

यह वही उमा है ? 'तो कर दो न, स्ट्राइक ।' राज सचेत हो गये हैं ।

'अरे हाँ ! तुम्हारा 'रोमियो एण्ड जूलियट' वाला लेख मैंने पढा···।'

'कोई हक नही था आपको पढने का। क्यों दिखाया आपको लीला ने ?' घबरा गई है उमा सचमुच ।

'अच्छा लिखा था । तभी दिखाया···लीला ने···।' राज विस्मित हैं ।

उमा ने मुँह हाथों में छिपा लिया है। सिसकियाँ शरीर को झँझोड़ रही हैं ।

सन्तोष की नजर जहरीली है ।

अनीता डर गई है ।

विशनदेई टेवल की सफाई और इतमीनान से कर रही है।

राज उमा के पास आ गये हैं। पीठ पर हाथ रखूं ? क्या कहूँ ? कि अच्छा लेख लिखने मे रोने की कोई बात नही है ? कि 'रेखाचित्र' के छपने पर मेरा भी यही हाल था ?

'मुँह धो लो, वेटा ! सिर दुखने लगेगा···कपड़े भी वदल लेना···' सन्तोप को अपनी फिक्र। वेटी को वेटा कहकर प्यार जता दिया है। अव खुद कपड़े वदलने चली गई है। आज जनक अंकल वच्चो को, वच्चो की मम्मी को चाय वाहर पिला रहे हैं। आजकल मम्मी की मम्मी करौलवाग ही रहती हैं।

'गिफ्ट-शोप' आज असिस्टेंट सँभालेगी। केरल की है, वेचारी, ईमानदार।

'उमा!' राज की आवाज धीमी है।

उमा अपने को सँभाल चुकी है। आँखें अव भी लाल है।

'जव भी जी चाहे, आ जाना···।' मना तो नही करेगी सन्तोप ? मैं लड़ूंगा ! सन्तोप से भी, जनक अंकल से भी ! रोके तो सही उमा को !

'कपड़े नही वदले अभी तक ?'

'आज फ्रैंड्स के साथ पिक्चर देखने जा रही हूँ।'

'मना किया होगा डैडी ने हमारे साथ चलने से···'

'मजाल है डैडी की !' राज हँस पड़ते हैं।

सन्तोष ने कमरे के बाहर पैर पटक दिये है।

अनीता ने कपड़े बदल लिये हैं। सफेद फ्रॉक, सफेद जूते, मोजे, रिबन, रूमाल···अच्छी नकल है मिस्सी बाबा की। खुश है आजकल। अब डैडी के साथ जाने की बात कम ही करती है।

'जनक अंकल कार भेज देंगे थोड़ी देर में···' सन्तोष फिर अन्दर आ गई है। घड़ी पर तीसरी नज़र डाल चुकी हैं।

राज बाहर आ गये हैं।

रणछोड़ जी···भगवान् कृष्ण। ध्यान मे अकस्मात् आ गई है बात। हँसी के साथ वेदना भी होती है।

सामने पार्क है। बच्चों की इन्तजार मे आइसक्रीम वाला आ गया है। वर्दियों में मढ़े नौकर भी आ गये हैं। खूबसूरत कुत्तों को खिला रहे हैं। आयाओ का इन्तजार है, शायद।

पार्क के उस पार कारों की क़तार है। जनक अंकल की कार वहीं आकर खड़ी हो जाएगी, आध घण्टे मे।

शिष्टता की, नागरिकता की, चरम सीमा है। कुछेक सपने सन्तोष के पूरे हो ही गये हैं। दाम भी भारी ही देना पड़ा है···

और मैंने नहीं भरा है भारी दाम ? मेहमान बनकर आ जाता हूँ रोज़। बिन बुलाये मेहमान। बच्चों के सामने रोज़ मुजरिम ठहराया जाता हूँ ! नहीं ! बात गलत है ! अनीता मुझको मुजरिम नहीं समझती है, कोई शिकायत नहीं है उसे मुझसे। और उमा को ? मुझ ही से सिर्फ नहीं है उमा को शिकायत···सन्तोष से भी है, लीला से भी। अपने से भी है शिकायत उमा को। रमेश की अपनी दुनिया अभी बस रही है। बड़ा होकर···दस वर्ष बाद ? पन्द्रह वर्ष बाद ? हमदर्दी दिखायेगा···समझने की कोशिश करेगा।

पैट्रोल-स्टेशन आ गया है। रेस्त्राँ की नकल। कुछ कुर्सियाँ···एस्प्रेसो मशीन। तीन-चार कारें। जुल्फें बढ़ाई हुई हैं हिन्दुस्तानी साहिबों ने। खद्दर का कुरता-पायजामा, हथकरघा झोला, कोल्हापुरी चप्पल, अंग्रेज़ी बातचीत। नकल हिप्पियों की।

और मैं ? किसकी नकल हूँ मैं ? एस्प्रेसो मशीन में ऐंठा प्रतिबिम्ब चौंकाता है। यह नकल नहीं है, असल है ! एक असली डरपोक, असली बहुपत्नीवान्, असली असफल लेखक जो कविता के सपने देखता है···एक असली नालायक बाप, जो बच्चों के सामने सिर झुकाता है।

'टैक्सी सा'ब !'

गुस्सा टैक्सी वाले सरदारजी पर उतरता है।

और यह है क्षत्रिय कुल की नकल। दाढ़ीवाली, काठ की किरपान वाली, कारतूस की जगह गाली बरसाने वाली।···

' 'इण्डिया टाइम्स' जल्दी !' और अब नकल होगी उस पत्रकार की, जिसको देश की, जगत की, समस्त सृष्टि की समस्याएँ इतना सताती हैं कि वह उनका हल कर ही छोड़ेगा !